संतप्त ॉदय की शीतल छाया है नारी

–चेतना दूगड़, 10वीं
सी.डी.ए. सरस्वती बाल मंदिर
पश्चिम विहार, दिल्ली

नारी–शक्ति देश के विकास के लिए अपना पूर्णरूप से योगदान दे रही है, देश की प्रगति में भागीदार है, वह नारी अवश्य ही अपने परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार भी है। पूर्ण रूप से वह अपने देश की प्रगति को आगे बढ़ाते हुए अपने परिवार के विकास का आधार भी बनी हुई है।

'**प**रिवार के सर्वांगीण विकास का आधार –नारी' यह वाक्य नारी के लिए पूर्णतः उपयुक्त है। मानवीय सद्‌गुणों के पूर्ण विकास, परिवार तथा समाज, बच्चों के चरित्र निर्माण एवं देश के उत्थान के लिए नारी शिक्षा का महत्व शाश्वत है, अपरिहार्य है और अनिवार्य भी है। एक पुरुष को शिक्षा का अर्थ केवल एक व्यक्ति की साक्षरता है, जबकि एक नारी की शिक्षा का अर्थ संपूर्ण परिवार की शिक्षा है। अतः पारिवारिक सुख–शांति के लिए तथा संपूर्ण परिवार को सुरक्षित बनाने के लिए नारी की शिक्षा अति आवश्यक है। नारी जीवन मुख्यतः पत्नी और माता दो रूपों में विभक्त है। शिक्षित नारी परिवार के लिए वरदान भी है। स्नेह, सुख, शांति और श्री की वर्द्धक है। समन्वय, सामंजस्य और समझौते की साक्षात् प्रतिमा है। शास्त्रों में श्रेष्ठ नारी के छः लक्षण भी बताए गए हैं –

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमयाधारित्री, भार्या व षाड्‌गुण्यवतीह दुर्लभा।।

'कार्येषु मंत्री' अर्थात् कामकाज में मंत्री के समान सलाह देने वाली हो। मंत्री रूप में उचित सलाह वही नारी दे सकती है, जिसमें विवेक हो तथा विकसित बुद्धि हो। 'करणेषु दासी' अर्थात् सेवादि में दासी के समान कार्य करने वाली हो। 'सेवा' करने के लिए सेवा के महत्व का ज्ञान तथा उसकी सीमा और विधि की जानकारी होनी चाहिए। 'भोज्येषु माता' अर्थात् माता के समान स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन कराने वाली हो। 'रमणेषु रम्भा' का अर्थ है सोने के समय अप्सरा के समान सुख देने वाली। 'धर्मानुकूला' अर्थात् धर्म के अनुकूल आचरण करने वाली।

धर्म और अधर्म को समझने में ज्ञान चाहिए। ज्ञान का आधार शिक्षा है। अतः पत्नी के रूप में नारी–शिक्षा का अत्यंत महत्व है। पत्नी–धर्म के पालन से ही रत्ना के तुलसी मानस के तुलसी बने और विद्योत्तमा के कालिदास संस्कृत वाङ्‌मय की विभूति बने। 'क्षमयाधरित्री' अर्थात् क्षमादि गुण धारण करने में पृथ्वी के समान स्थिर रहने वाली। कारण, गलती करना मानव का स्वभाव है। उसी गलती पर क्रोध प्रकट करना, कलह उत्पन्न करना है। कलह परिवार का नाश है। 'क्षमा' आती है 'बुद्धि' से। बुद्धि है जननी की शिक्षा अर्थात् नारी की शिक्षा। इस प्रकार पत्नी के रूप में नारी–शिक्षा का महत्व आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है, ताकि वह सुंदर, श्रेष्ठ, विकासशील परिवार की तथा सुशिक्षित संतान की संरचना में योगदान दे सके।

गृह की व्यवस्थापिका होने के कारण भारतीय नारी 'गृहलक्ष्मी' के उच्च सिंहासन पर आरूढ़ है किंतु अर्थ–स्वातंत्र्य अधिकार से वंचित होने के कारण वह दीन है। आज कड़े संघर्ष, अपनी बुद्धि व योग्यता से उसने इस आर्थिक दासता से मुक्ति पा ली है। आज तो नारी ने प्रगति के हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम कर लिया है। आज नारी नर्स और डॉक्टर बनकर पीड़ितों, घायलों को स्नेह रूपी चिकित्सा और सहानुभूति दे रही है। अध्यापिका के रूप में छात्रों के ज्ञान के नेत्र खोल रही है, वैज्ञानिक बनकर अंधविश्वास के तिमिर को मिटा रही है, व्यापारी बन कर देश की अर्थ व्यवस्था की सुदृढ़ता में हाथ बंटा रही है। सैनिक बन कर देश की सेवा, रक्षा कर रही है। राजनीति में भाग लेकर राष्ट्र का मार्गदर्शन कर रही है और न जाने देश के विकास के लिए क्या–क्या कर रही है यह नारी।

नारी–शक्ति देश के विकास के लिए अपना पूर्णरूप से योगदान दे रही है, देश की प्रगति में भागीदार है, वह नारी अवश्य ही अपने परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार भी है। पूर्ण रूप से वह अपने देश की प्रगति को आगे बढ़ाते हुए अपने परिवार के विकास का आधार भी बनी हुई है। आज अपनी योग्यता को सिद्ध कर उसने मैथिलीशरण गुप्त द्वारा कहे शब्दों को अर्थात् अबला नारी को सबला नारी का रूप दे दिया है। अगर आज इसी नारी की उपेक्षा की जाए तो समाज पंगु बन सकता है, ॅदयहीन हो सकता है।

नारी के चंचल कटाक्ष परिवार को भी घायल कर देते हैं। उसकी मधुर मुस्कान पुरुष को पराजित कर देती है। उसे केवल नारी में सत्, चित्, आनंद के दर्शन होते हैं। सत्य, शिव और सुंदर की अनुभूति होती है। नारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा यह लिखती हैं –*'आदिम काल से आज तक विकास–पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व चेतना और ॅदय का विकास किया है, उसी का पर्याय है नारी*।

नारी स्नेह और सौजन्य की देवी है। वह नर रूपी पशु को मनुष्यता सिखाती है, वाणी से जीवन को अमृतमय बनाती है। नारी तो संतप्त ॅदय की शीतल छाया है। उसके हास्य में निराशा को मिटाने की अपूर्व शक्ति है। इसी नारी की करुणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर ही समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं।

आज नारी ने अपने अधिकार हासिल कर लिए हैं। आज उसी अबला कहलाने वाली नारी ने मन की अदम्य इच्छाओं और ज्ञान की भूख की दीवारों को तोड़ डाला। अबला कह कर प्रताड़ित की जा रही नारी ने दासता एवं बंधन का जीवन हमेशा के लिए त्याग दिया है। आज नारी अपनी महत्ता को पहचान गई है और मजबूत इरादों तथा दृढ़ आत्मविश्वास के साथ वह निकल पड़ी है देश को और गतिशील बनाने के लिए, पुरुषों से बढ़कर उन्नति करने के लिए। ┐

2

स्त्री है विलक्षण विशेषताओं का पुंज

–निकिता बाफना, 10वीं
विमल विद्या विहार
लाडनूं (राजस्थान)

परिवार अपने आप में एक छोटी सी दुनिया है। इसलिए समूह की अपनी अपेक्षाएं होती हैं, समस्याएं होती हैं। इन समस्याओं का समाधान पुरुष अपनी महज मेधा से खोजे, यह संभव नहीं होता। तभी तो घर की व्यवस्था अगर सुचारू रूप से नहीं है तो घर में कठौती की जगह कुण्डा, लोटे की जगह मटकी रखी हुई मिलेगी। परिणाम यह होगा कि समय पर आवश्यक चीज व्यवस्थित नहीं मिलेगी।

किसी भी पेड़ की सघनता जिस प्रकार उसकी जड़ों पर निर्भर करती है, उसी प्रकार हर परिवार की प्रगति और विकास नारी पर निर्भर करता है। महर्षि रमण के शब्दों में –*''संतान के लिए ममता, परिवार के लिए स्नेह, देश के लिए चरित्र और पति के लिए शील संजोने वाली महाप्रकृति का नाम नारी है जो परिवार के सर्वांगीण विकास की धुरी है।''*

टामस मूर के अनुसार नारी रात का तारा है और प्रभात का हीरा है। नारी ओस का कण है, जिससे कांटों का मुंह भी हीरों से भर जाता है। गुजराती भाषा का यह मुहावरा –*'लुगाई एटले लाज*, दो शब्दों में नारी का पूर्ण परिचय देता है। नारी के मायने लज्जा की प्रतिमा, नारी के मायने ममता की मूरत।

धीरज का हिमालय, करुणा की नदी, समता का सागर और जीवन की दुर्लभ संपदा कहलाने वाली नारी माता, बहन और पत्नी के रूप में दिशा–सूचक यंत्र बनकर परिवार का मार्गदर्शन करती है। मां के रूप में नारी अपनी संतानों का इस ढंग से निर्माण करती है कि वे परिवार के लिए, समाज और देश के लिए वरदान सिद्ध हो जाएं।

नारी अपनी संतान को न केवल क्षीर से अपितु आत्म स्नेह से अभिसिंचित करती है। अस्तु, नारी से बढ़कर परिवार के सर्वांगीण विकास में दूसरा कोई शिल्पी नहीं हो सकता। नारी गर्भ से लेकर बच्चे को शैशव–पर्यन्त संस्कारित करती है। बच्चों को अनुशासन, प्रेम, ईमानदारी, संस्कारों का पाठ पढ़ाने वाली नारी मां के रूप में अपने दायित्व का निर्वाह करती है और बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपनी अहम् भूमिका निभाती है। मां के चरित्र का हर बिन्दु, हर कदम, हर व्यवहार संतान के लिए अनुकरणीय होता है, शिक्षाप्रद होता है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार नारी है। शिवा का निर्माण माता जीजाबाई के द्वारा हुआ, शकुंतला–पुत्र भरत नाम से हमारे देश का नामकरण भारत हुआ। अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह का वेधन करना सीखा था।

बहन के रूप में नारी भाइयों को अपने कर्त्तव्य का बोध कराती है और अच्छी प्रेरणा देती है। उसका ज्वलंत उदाहरण हमारे सामने है। जब सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के गठन से पूर्व भारतवासियों का अपने भाषण में आह्वान किया कि –*'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। जो मेरे साथ आना चाहें वे आगे आकर अपने खून से इस शपथ–पत्र पर हस्ताक्षर कर दे*। इस उद्घोषणा से सभा में सन्नाटा छा गया। कोई भी व्यक्ति हस्ताक्षर करने के लिए आगे नहीं आया। इस सन्नाटे को तोड़ने वाली 17 कन्याकुमारियों के एक दल ने आगे बढ़कर कहा कि हम आपके साथ हैं और सभी कुमारियों ने अपने खून से शपथ–पत्र को भरा।

पत्नी के रूप में नारी अपने पति का अभिन्न अंग बनकर परिवार की हर समस्या का समाधान करती है, हर कठिन परिस्थिति में अपनी सूझबूझ से नई राह दिखाती है। उदाहरण स्वरूप गांधीजी को सत्य का दर्शन कस्तूरबा से मिला था। नारी ने ही विलासी पति को बनाया था –*'संत तुलसीदास* और *'कवि कालिदास*।

परिवार के सर्वांगीण विकास के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र हैं व्यवस्था, स्नेहबंधन, शिक्षा, सेवा, निर्भीकता। नारी इन विलक्षण विशेषताओं का पुंज है। उसने घर परिवार की हर व्यवस्था में अपनी कार्यकुशलता और दक्षता का परिचय दिया है। परिवार अपने आप में एक छोटी सी दुनिया है। इसलिए समूह की अपनी अपेक्षाएं होती हैं, समस्याएं होती हैं। इन समस्याओं का समाधान पुरुष अपनी महज मेधा से खोजे, यह संभव नहीं होता। तभी तो घर की व्यवस्था अगर सुचारू रूप से नहीं है तो घर में कठौती की जगह कुण्डा, लोटे की जगह मटकी रखी हुई मिलेगी। परिणाम यह होगा कि समय पर आवश्यक चीज व्यवस्थित नहीं मिलेगी। तू–तू, मैं–मैं के रूप में परिवार में अशांति और कलह का बीज वमन हो जाएगा। उक्त सारी व्यवस्थाओं का सुंदर संपादन और संचालन नारी ही कर सकती है। नारी के बगैर घर और परिवार बकरियों का बाड़ा नजर आएगा।

सत्य, शील, साहस और सहनशीलता के संस्कार नारी के द्वारा प्राप्त होते हैं, जो हर परिवार की सुख और शांति के लिए नितांत आवश्यक है। संगठित परिवार की दैनिकचर्या की आवश्यक और मुख्य शर्त है –व्यवहार का प्रशिक्षण, जो उसे नारी के द्वारा मिलता है।

परिवार के विकास की एक महत्वपूर्ण इकाई है शिक्षा। इसके बिना घर, परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है। निरक्षर समाज कभी भी विकास के शिखर पर नहीं चढ़ सकता और बिना स्त्री–शिक्षा के कोई साक्षर नहीं बन सकता। यह सोच कर नारी ने स्वयं शिक्षा ग्रहण की और अपनी संतानों को शिक्षित करने का दृढ़ संकल्प संजोया। आज देश के बाल–मंदिरों से लेकर महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में नारी शिक्षा प्राप्त कर रही है और परिवार का आधार स्तम्भ बनकर यह प्रमाणित कर रही है कि वह समाज में किसी भी दिशा में भार नहीं है अपितु समाज का श्रृंगार है, राष्ट्र का प्राण है, धर्म का उद्घोष है और नीति की नियामक है। ┐

3

घर पाठशाला, तो नारी प्रधानाचार्या

–हिमानी मिश्रा, 12वीं ए
श्री नीमा विद्या निकेतन
इन्दौर, मध्य प्रदेश

घर में सभी प्रकार के स्वभावों के व्यक्ति होते हैं। कोई कटुभाषी होता है तो कोई मृदुभाषी। कोई उदासीन होता है तो कोई झगड़ालू होता है किंतु आदर्श गृहिणी को सहनशीलता से घर को कलह का अड्डा बनने से बचा लेना चाहिए। गृहिणी के मधुर–भाषण से घर के सभी सदस्य सुखी रहते हैं।

आज के युग में मानव के पास अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में यदि कोई निधि प्राप्त है तो वह है एक परिवार। परिवार मनुष्य की वह संस्था है जिसकी स्थापना उसने सृष्टि के प्रारम्भिक क्षणों में सभ्यता के उदय के साथ–साथ की थी। वह अपना परिवार और उसकी वृद्धि को देखकर प्रसन्नता से खिल उठता है। रहीमदास कहते हैं कि :

रहिमन यों सुख होता है, बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अखियां निखरि, बढ़त देखि सुख होत।।

परिवार में मनुष्य को सुख और शांति प्राप्त होती है। वह परिवार में अपनी समस्त चिंताओं को भुलाकर अपार प्रसन्नता का अनुभव करता है। हंसते–खेलते इस परिवार की आधारशिला नारी अर्थात् स्त्री होती है। किसी विद्वान ने सही कहा है कि '*गृहिणी गृहमित्याहु न गृह गृहमुक्यते*। अर्थात् गृहिणी से ही घर है। बिना गृहिणी के घर को घर नहीं कहा जा सकता है। गृहिणी गृहस्थ जीवन रूपी नौका की पतवार है। वह अपनी बुद्धि के चरित्रबल तथा अपनी त्यागशीलता से इस नौका को थपेड़ों तथा भंवरों से बचाती हुई किनारे तक पहुंचाने का सफल प्रयास करती है।

नारी से केवल घर का उद्धार नहीं होता अपितु वह समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है। पृथ्वी की सी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र की सी गम्भीरता, चन्द्रमा की सी शीतलता, और पर्वतों की सी मानसिकता (मानसिक उच्चता) हमें एक साथ नारी के ॅदय में दृष्टिगोचर होते हैं। वह वीर प्रसव जननी के रूप में देश के रक्षक वीर पुत्रों को जन्म देती है, भक्त माता के रूप में ऐसी ज्ञानमय संतान उत्पन्न करती है जो उसे अगोचर और अगम्य ब्रह्म का साक्षात्कार करके भवसागर में डूबे हुए अनंत प्राणियों का ज्ञान और भक्ति के उपदेशों से उद्धार करे।

वह विदूषी माता के रूप में उन मेधावी पुत्रों को जन्म देती है जो अपनी अकाट्य विद्वता के समक्ष दूसरों को खड़ा ही नहीं रहने देते हैं। त्यागी जननी बनकर वह ऐसे दानी पुत्रों को जन्म देती है जो अपना सर्वस्व देश, जाति और समाज के अभ्युदय में दान कर देते हैं और प्रतिफल में कुछ भी नहीं चाहते हैं। बच्चों के लिए शिक्षा, सभ्यता, अनुशासन, शिष्टता आदि सभी विषयों की प्राथमिक पाठशाला घर ही है, जिसकी प्रधानाचार्य माता है। वह जो चाहे अपने बालक को बना सकती है।

नारी दया, करुणा, ममता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है किन्तु समय पड़ने पर प्रचण्ड चण्डी भी। वह माता के समान हमारी रक्षा करती है, मित्र और गुरु के समान हमें शुभ कार्यों के लिए प्रेरित करती है, बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त हमारी संरक्षिका बनी रहती है। महाराज मनु ने मनुस्मृति में स्त्रियों का विवेचन करते हुए स्पष्ट लिखा –जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का निवास होता है।

प्राचीनकाल में कोई भी धार्मिक कार्य बिना पत्नी के सहयोग के पूर्ण नहीं होता था। सुशिक्षित गृहलक्ष्मी विपत्ति के समय सत्यपरामर्श से मित्र का कर्त्तव्य पालन करती है, माता के समान स्वार्थरहित साधना और सेवा में तल्लीन रहती है। गुरु की भांति बुरे मार्ग पर चलने से अपने पति और बच्चों को रोकती है। भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपने गृहस्वामी तथा परिवार के अन्य सदस्यों को खिलाकर वह असीम प्रसन्नता का अनुभव करती है।

भारतीय गृहिणी सदैव पति के सुख में सुखी और दुःख में दुःखी रहती है। वह सहनशीलता के गुण से परिपूर्ण होती है, जो उसे श्रद्धा के चरम शिखर पर आसीन कर देता है। घर में सभी प्रकार के स्वभावों के व्यक्ति होते हैं। कोई कटुभाषी होता है तो कोई मृदुभाषी। कोई उदासीन होता है तो कोई झगड़ालू होता है किंतु आदर्श गृहिणी को सहनशीलता से घर को कलह का अड्डा बनने से बचा लेना चाहिए। गृहिणी के मधुर–भाषण से घर के सभी सदस्य सुखी रहते हैं। उनकी मधुरभाषिता के विषय में तुलसीदास ने कहा है :

कागा काको घन हरै, कोयल काकू देय।
तुलसी मीठे वचन ते, जग अपनै कर लेय।।

सभी गुणों का समन्वय करके चरित्र की संज्ञा दी जाती है, जिसमें नम्रता, सत्यता, मृदुता, सदाचारिता तथा जितेन्द्रियता आदि गुणों का समावेश होता है। आदर्श गृहिणी भगीरथ के पवित्र जल की भांति उज्ज्वल होती है। समय परिवर्तनशील है। इस कारण स्वतंत्रता के साथ–साथ स्त्रियों की भी स्वतंत्रता का हरण हुआ। 'स्त्रियों का प्रेम', 'बलिदान' और 'सर्वस्व समर्पण' की भावना कालांतर में उन्हीं के लिए विष बन गई। उनका पुरातन सेवाभाव उन्हीं के लिए घातक बन गया। उसने प्रेमवश स्वयं को समर्पित किया था, किंतु निर्दयी समाज ने उसे बंधनों में जकड़ दिया था।

किंतु आज के स्वतंत्र भारत में उन्हें पुरुषों के समान सभी अधिकार प्राप्त हैं। आज उनका योगदान केवल परिवार तक ही सीमित नहीं अपितु राष्ट्र तथा विश्व कल्याण में भी है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वतंत्र भारत की नारियों में आज नव चेतना है, नव जागृति है। स्नेह और प्रेम की प्रतीक नारी परिवार की आधार है। आज की गृहिणी परिवार के कर्त्तव्यों के प्रति सजग तथा जिम्मेदार होने के साथ ही अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक है। ┐

4

मां, बेटी, बहन के रूप में अतुल्य है नारी

–शैलेन्द्र
शासकीय बाल उ.मा. विद्यालय
डौण्डी, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़

पिता की मृत्यु के पश्चात माता अपने बच्चों की देखभाल, शिक्षा व संस्कार देने के कर्त्तव्य का पालन आसानी से कर लेती है परंतु माता की मृत्यु हो जाए तो पिता शीघ्रातिशीघ्र दूसरी शादी करता है, क्योंकि उसे परिवार के संचालन के लिए एक पत्नी की आवश्यकता होती है।

परमात्मा ने सबसे पहले पुरुष का निर्माण किया, परंतु संपूर्ण सृष्टि के होते हुए भी वह स्वयं को एकाकी महसूस करता था। इसलिए ईश्वर ने उसकी संगिनी के रूप में नारी की रचना की और दोनों ने मिलकर परिवार का निर्माण किया। इसलिए कहा गया है कि नारी के होने पर ही परिवार संपूर्ण होता है।

नारी परिवार का सुकोमल किंतु दृढ़ आधार है। यदि पुरुष में शारीरिक शौर्य, वीरता, साहस के गुण हैं तो नारी में क्षमा, दया, प्रेम, करुणा और ममता रूपी गुण होते हैं, जिनसे वह पूरे परिवार का संचालन बखूबी करती है। नारी संस्कृति व संस्कार की जननी है। वह बच्चों को शिक्षा व संस्कार प्रदान करती है। वह बच्चों को सभ्यता प्रदान करती है।

शिक्षित नारी परिवार के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं परंतु यदि आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप उसके पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। शिक्षित स्त्री अपने बच्चों की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इस प्रकार एक नारी का शिक्षित होना उसके पूरे परिवार के विकास के लिए सोने पर सुहागा के समान है।

पिता की मृत्यु के पश्चात माता अपने बच्चों की देखभाल, शिक्षा व संस्कार देने के कर्त्तव्य का पालन आसानी से कर लेती है परंतु माता की मृत्यु हो जाए तो पिता शीघ्रातिशीघ्र दूसरी शादी करता है, क्योंकि उसे परिवार के संचालन के लिए एक पत्नी की आवश्यकता होती है। माता अपने बच्चों के अधिक निकट होती है। बच्चे भी अपनी परेशानियों और मनोभावों को पिता की अपेक्षा माता से अधिक कहते हैं। पिता अक्सर नौकरी या अन्य कारणों से घर से बाहर रहते हैं, अतः माता ही अपने परिवार को पूरा समय दे पाती है। माता बच्चों को अधिक स्नेह करती है। वह बच्चों को अच्छे–बुरे की समझ सिखाती है। वह परिवार का आधार होती है।

एक स्त्री बहन के रूप में, पत्नी के रूप में, बेटी के रूप में या मां के रूप में परिवार तथा परिजनों की संरक्षिका, सेविका व हमदर्द होती है। हर पुरुष की सफलता के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है। इस तरह वह सहचरी, जीवन संगिनी पत्नी भी होती है जो परिवार के विकास व कल्याण के बारे में सोचती है। स्त्री के अंदर इतनी ममता होती है कि वह सभी गलतियों को क्षमा कर देती है। किसी भी कठिनाई या दुख के समय धैर्य के साथ रहती है। वह सबके दुखों को अपनाकर अपनी खुशियों को बांटकर सुखी रहती है। स्त्री परिवार की रीढ़ की हड्डी होती है, जिसके न रहने पर परिवार अपंग–सा हो जाता है। स्त्री ही पूरे परिवार को समेट कर, सहेज कर रखती है।

आवश्यकता पड़ने पर स्त्री दोहरी भूमिका भी निभाती है। परिवार में धनोपार्जन करने वाला व्यक्ति न होने पर स्वयं घरेलू कार्यों को संभालते हुए भी आर्थिक व सामाजिक स्तर पर अपनी पहचान बनाती है व नौकरी करती है। इसके बाद भी वह अपने बच्चों को संस्कार प्रदान करती है।

कोमल मन वाली स्त्री अपने ममत्व, प्रेम, करुणा से पूरे विश्व को भर देती। नारी अपनी सूझबूझ व समर्थता से केवल परिवार नहीं अपितु विश्व का कल्याण कर सकती है। वह स्वयं में भी अतुल्य है। नारी को देवी का स्थान प्राप्त है। नारी ही परिवार को प्राणिक, बौद्धिक आध्यात्मिक व मानसिक दृष्टि से कुशल व शिक्षित करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि नारी ही परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार है। ┐

5

अवहेलना न हो कभी नारी की

–प्रज्ञा, 10वीं ए
संत फ्रांसिस स्कूल
निगोहां, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

नारी बेटी के रूप में अपने सम्पूर्ण कर्त्तव्यों को ध्यान में रखती है तथा अपने परिवार, माता–पिता का समाज में नाम रौशन करने के लिए उनके द्वारा सिखाए आदर्शों पर चलती है। बेटी विवाह के बाद भी अपने माता–पिता का स्थान अपने हृदय में बरकरार रखती है। बेटा भले ही अपने माता–पिता की सेवा न करे परंतु बेटी सच्चे मन से उनकी सेवा करती है।

यह समाज नर और नारी दोनों के सहयोग से बना है। नारी का समाज में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। घर एक ऐसा स्थान है जहां मनुष्य अपने जीवन का एक–तिहाई हिस्सा व्यतीत करता है। गृह की संचालिका का कार्य नारी को करना होता है। नारी अपनी सूझबूझ से घर को चलाती है और घर के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखती है। वह परिवार के सदस्यों के मध्य सामंजस्य बनाती है तथा समय का ध्यान रखते हुए घर को पूर्ण रूप से व्यवस्थित रखती है।

घर के कार्यों में नारी आर्थिक रूप से भी योगदान देती है। वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परिवार की खुशहाली व समृद्धि के लिए आर्थिक योगदान भी देती रहती है। इसके लिए न तो उसे कोई तनख्वाह मिलती है और न ही उसमें उसका कोई स्वार्थ होता है। वह प्रत्येक कार्य अपना कर्त्तव्य समझ कर करती है।

प्रत्यक्ष रूप में वह घर से बाहर के कार्य करती है। कामकाजी महिलाएं अपने कार्यालय जाती हैं और अपनी आय घर लाती हैं। आज के युग में तो महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राजनीति, सेना, पुलिस आदि अनेक क्षेत्रों में भी अपना सहयोग दे रही हैं।

अप्रत्यक्ष रूप से नारियां जो भी कार्य करती हैं उनकी तो कोई गणना ही नहीं की जाती। परिवार के सदस्यों के लिए भोजन बनाना, कपड़े धोना, बच्चों का ध्यान रखना, बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना, परिवार के वृद्धों की सेवा करना तथा उनकी समस्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनको पूरा करने का प्रयास आदि इन समस्त कार्यों के साथ नारी के कुछ कर्त्तव्य भी होते हैं जिनको निभाने पर उसे सुसंस्कृत, सुसभ्य तथा कर्त्तव्यपरायण की संज्ञा दी जाती है।

नारी को सबसे पहले अपने परिवार को व्यवस्थित रूप देना होता है, तभी उसका परिवार सुखी रह सकता है। वह परिवार के आय–व्यय को ध्यान में रखते हुए बजट बनाती है तथा परिवार के सभी सदस्यों के वस्त्रों, मनोरंजन के साधन आदि का ध्यान रखती है। परिवार के किसी भी सदस्य को किसी भी वस्तु की कमी नहीं महसूस होने देती है।

बच्चा जो कुछ भी सीखता है, परिवार से ही सीखता है। अतः एक मां अपने परिवार में शिक्षा का वातावरण बनाती है और अपने बच्चों को अच्छी–अच्छी कहानियां सुनाती है। एक मां हमेशा यही चाहती है कि उसका बच्चा अच्छा, सुसभ्य व ईमानदार इंसान बने, इसके लिए वह उसे बुरी आदतों से सदैव दूर रखती है। उसमें अपनी संस्कृति से संबंधित अच्छे संस्कार डालती है। एक सुसभ्य व सुसंस्कृत नारी घर आए महमानों का उचित आदर–सत्कार करती है तथा उनके खान–पान की अच्छे ढंग से व्यवस्था करती है।

नारी को समाज में श्रद्धा व विश्वास की मूर्ति कहा गया है। वह पत्नी, मां, बहन तथा अन्य कई रूपों में सामाजिक योगदान देती है। एक पत्नी के रूप में वह अपने पति को ही अपना सब–कुछ मानती है। वह अपने पति की कुशलता के लिए व्रत भी धारण करती है। एक पत्नी अपने पति के लिए अपने प्राण तक देने लिए तैयार रहती है।

एक नारी बहन के रूप में अपने भाई की कुशलता के लिए प्रार्थना करती है तथा वह कामना करती है कि उसका भाई प्रत्येक परिस्थितियों से लड़ सके तथा देश की रक्षा कर सके। जन्म लेने के बाद सर्वप्रथम एक नारी बेटी कहलाती है।

नारी बेटी के रूप में अपने सम्पूर्ण कर्त्तव्यों को ध्यान में रखती है तथा अपने परिवार, माता–पिता का समाज में नाम रौशन करने के लिए उनके द्वारा सिखाए आदर्शों पर चलती है। बेटी विवाह के बाद भी अपने माता–पिता का स्थान अपने हृदय में बरकरार रखती है। बेटा भले ही अपने माता–पिता की सेवा न करे परंतु बेटी सच्चे मन से उनकी सेवा करती है।

यह भी कहा जा सकता है कि नारी के बिना यह समाज अधूरा है। अतः हमें नारी की निन्दा तथा अवहेलना नहीं करनी चाहिए। पुरुष को जन्म देने वाली नारी की ही शिक्षा–दीक्षा से पुरुष ध्रुव व प्रहलाद के समान होते हैं। ┐

6

नारी प्रेम की गगरिया

–राकेश कुमार, 12वीं
ए.बी.एम. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

परिवार को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य स्त्री ही करती है। उसके द्वारा दिये गये प्रेम रूपी पानी से परिवार रूपी पौधा बढ़ता है और पल्लवित होकर समाज रूपी वन में अपनी सुगंध फैलाकर एक नई पहचान कायम करता है।

मानव जीवन का रथ एक पहिये से नहीं चल सकता। उसकी समुचित गति के लिए दोनों पहिये होने चाहिए। गृहस्थी की गाड़ी नर और नारी के सहयोग व सद्भावना से प्रगति–पथ अग्रसर रहती है। गृहस्थी रूपी गाड़ी को नियंत्रण में चलाने में नारी का योगदान सर्वथा उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण होता है। स्त्री केवल पत्नी ही नहीं अपितु योग्य मित्र, परामर्शदात्री, सचिव, सहायिका, माता, बहन, बहू, भाभी आदि अनेक रूपों में परिवार के विकास में योगदान देती है तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं व्यवहार कुशलता से उस विकास की गति को मंद नहीं पड़ने देती। यदि नारी परिवार में न हो तो वह परिवार नहीं कहलाता। परिवार की पूर्णता नारी के बिना संभव नहीं।

भारतीय नारी सदैव से ही परिवार में विशेष स्थान रखती आई है। अगर गौर से देखा जाए तो स्त्री का परिवार में एवं समाज में निश्चित रूप से स्थान बदला है। कालांतर की स्थिति और आज की स्त्री का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो प्रतीत होता है कि वैदिक काल की स्त्री ज्यादा सबल नजर जाती है। पारिवारिक दृष्टिकोण में भी वैदिक काल की स्त्री ही श्रेष्ठ नजर आती है।

परिवार में नारी का स्थान सबसे महत्वपूर्ण होता है। वह परिवार के हर सदस्य के साथ संपर्क रखती है, इस तरह से वह परिवार को जोड़ती है। परिवार के हर सदस्य के बारे में उसे अच्छी तरह से पता होता है। उसे हर किसी की जरूरतें पता होती हैं, चाहे वह बच्चे का टिफिन हो या फिर पति का अखबार, सास का पूजा का सामान हो या फिर ससुर की छड़ी। इसी कार्यकुशलता के कारण वह परिवार की देखभाल बेहतर ढंग से कर पाती है। परिवार का हर तरफ से विकास होता है और एकता बढ़ती है।

नारी द्वारा दिए गए सुझावों को गंभीरतापूर्वक लिया जाता है। पुरुषों की तरह हर बात को टाल देने की आदत उन्हें नहीं होती। वह हर बात को गंभीरता से सुनती है, समझती है और फिर फैसला लेती है। चाहे वह शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, हर नारी यही चाहती है उसकी अपनी अलग पहचान बने, उसका परिवार दूसरों से सुलझा हुआ हो। यही दृष्टिकोण परिवार को पनपने में मदद करता है।

अगर किसी चीज की जरूरत को समझना हो उसके बिना, उत्पन्न हुई स्थितियों का अध्ययन कीजिए। नारी के बिना घर, घर नहीं रहता बस रनिवास स्थल बन जाता है जो कि परिवार नहीं होता। परिवार वह होता है जहां नारी का उचित स्थान हो, उसे सम्मान मिले और अपने विचारों को प्रकट करने की आजादी। नारी की उपस्थिति के बिना परिवार अधूरा रह जाता है।

नारी असल में और कुछ नहीं केवल प्रेम का विशुद्ध दूसरा रूप है। वह अपने ममतामयी आंचल की छांव तले परिवार के सदस्यों को प्यार बांटती है। प्यार के कारण विश्वास बढ़ता है और यही विश्वास नारी में आत्मविश्वास पैदा करता है। वह सचमुच परिवार के विकास में सुरुचिपूर्ण तरीके से ध्यान देती है। परिवार को पनपाने में ही नहीं अपितु परिवार को जोड़ने में स्त्री द्वारा प्रेम का सागर लुटाना काम आता है।

परिवार को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य स्त्री ही करती है। उसके द्वारा दिये गये प्रेम रूपी पानी से परिवार रूपी पौधा बढ़ता है और पल्लवित होकर समाज रूपी वन में अपनी सुगंध फैलाकर एक नई पहचान कायम करता है। विश्व में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि नारी ही परिवार के विकास का आधार है।

नारी को अपने गौरवपूर्ण अतीत को ध्यान में रखकर त्याग, समर्पण, स्नेह, सरलता आदि गुणों को नहीं भूलना है। पारिवारिक सौहार्द को बनाए रखने में नारी को अपना सहयोग बराबर देना होगा। परिवार को प्रगति की धारा में लाने का मुख्य कार्य स्त्री का होता है और अगर स्त्री ही अपने कार्य से विमुख होने लगे तो परिवार का विकास रुक जाता है। साथ ही परिवार की प्रगति का आधार नारी ही होती है परंतु यदि आधार में दरार पड़ जाए तो इमारत कहां से मजबूत बनेगी? ┐

7

पुरुषों से अधिक है नारी की भूमिका

–निहारिका तिवारी, 10वीं
सरस्वती बाल मंदिर
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

नारी पुरुष के जीवन में विविध रूपों में आती है। वह कभी मां बनकर अपने स्नेहिल आंचल की छांव से बालक को अभिसिंचित करती है तो कभी सहचरी बनकर अपनी इन्द्रधनुषी छटा से पुरुष के जीवन को आलोकित करती है।

विभिन्न संस्कृतियों में परिवार का अर्थ और परिभाषा भिन्न–भिन्न प्रकार से की गई है। हिन्दू सामाजिक संरचना में परिवार एक आवश्यक तत्व है। गृहस्थ का जीवन सेवा और तपस्या का जीवन है और सब आश्रमों में यह आश्रम विशेष स्थान रखता है। हिन्दूवादी विचारधारा के लोग सामाजिक कर्त्तव्यों के निर्वहन करने वाले लोगों के समूह को परिवार मानते हैं। सामाजिक कर्त्तव्यों के उचित निर्वहन के लिए परिवार में एक सुसंस्कारित नारी का होना परम आवश्यक है। नारी ही किसी परिवार के विकास की आधारशिला होती है। बालक के जन्मोपरांत उसको सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षा अपनी मां से और बाद में परिवार से मिलती है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि एक सफल पुरुष के पीछे किसी न किसी स्त्री का हाथ अवश्य रहा है। नेपोलियन बोनापार्ट ने परिवार और राष्ट्र के निर्माण में माता की भूमिका की बात करते हुए कहा 'ळपअम उम हववक उवजीमते ंदक प्ूपसस हपअम लवन ं हववक दंजपवद' (मुझे अच्छी माताएं दो और मैं आपको एक अच्छा राष्ट्र दूंगा)। बालक की शिक्षा में माता की भूमिका का समर्थन करते हुए हमारे मनीषियों ने भी कहा है –'नास्ति मातृसमो गुरुः' अर्थात् माता के समान अन्य कोई गुरु नहीं होता है।

एक माता द्वारा ही शैशवावस्था में अपने बालक के अंतर्मन में सद्गुणों का बीजारोपण कराया जाता है। छत्रपति शिवाजी की सफलता के पीछे उनकी माता जीजाबाई का अमूल्य योगदान था। नारी पुरुष के जीवन में विविध रूपों में आती है। वह कभी मां बनकर अपने स्नेहिल आंचल की छांव से बालक को अभिसिंचित करती है तो कभी सहचरी बनकर अपनी इन्द्रधनुषी छटा से पुरुष के जीवन को आलोकित करती है।

कालीदास के 'महाकवि कालीदास' होने के पीछे काफी हद तक उनकी पत्नी विद्योत्तमा का हाथ था। इसी प्रकार नारी के संपर्क में आने के बाद ही तुलसीदास ने रामचरित मानस जैसे कालजयी जीवंत ग्रंथ का प्रणयन किया। इन सब बातों से यह ज्ञात होता है कि नारी केवल बालक का ही नहीं अपितु परिवार के सभी सदस्यों के गुणों का परिमार्जन करके परिवार की उन्नति में सहायक बनकर परिवार का सर्वांगीण विकास करती है। अतएव यह कहा जा सकता है कि नारी ही किसी परिवार के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है।

जिस प्रकार नारी परिवार के सर्वांगीण विकास के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहती है, उसी प्रकार देश के सम्मान की रक्षा के लिए भी सदैव तैयार रहती है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, सुरक्षा का, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का क्षेत्र हो, कहीं भी उसकी भूमिका पुरुषों की तुलना में कम नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में तो पूर्व वैदिक काल में आत्रेयी द्वारा लव और कुश को वेदांत की शिक्षा ग्रहण करने का उल्लेख मिलता ही है, उसी प्रकार उपनिषद् में भी यह उल्लेख मिलता है कि विदेह (आधुनिक बिहार) के राजा जनक के दरबार में गार्गी ने याज्ञवलक्य को शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। उस समय विदूषी सुयोग्य महिलाओं को ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। कुछ को मंत्रविद् और पण्डित भी कहा जाता था। रामायण में कौशल्या और तारा को मंत्रविद् और महाभारत में द्रौपदी को पण्डित कहा गया है। राजनीति और युद्ध विद्या में भी योग्य स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं।

बौद्धकाल में साधारणतः स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी, किंतु कुलीन वर्ग की स्त्रियों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इस समय उच्चकोटि की विदूषी महिलाएं उत्पन्न हुईं, जिन्होंने धार्मिक और दार्शनिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। कुछ स्त्रियों ने विदेश जाकर धर्म का प्रचार भी किया। अशोक की पुत्री संघमित्रा ने लंका जाकर बौद्ध धर्म

का प्रचार करके अपना परचम लहराया। शंकराचार्य और मण्डन मिश्र के बीच हुए शास्त्रार्थ में निर्णय–कार्य मण्डन मिश्र की विदूषी पत्नी ने किया था।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि नारी ने परिवार के सर्वांगीण विकास में पूर्व वैदिक काल से लेकर आज तक महत्ती भूमिका अदा की है। नारी को त्यागकर राष्ट्र निर्माण की कल्पना उसी प्रकार नहीं की जा सकती, जिस प्रकार एक पैर से व्यक्ति चल नहीं सकता या जिस प्रकार गाड़ी को चलने के लिए दो पहियों की कम से कम आवश्यकता होती है। उसी प्रकार परिवार के साथ–साथ देश के सर्वांगीण विकास में नारी की पुरुष के साथ आवश्यकता महसूस होती है। ⊥

8

नारी उत्थान, राष्ट्र का उत्थान

–पीयूष कुमार मिश्रा, 9वीं
श्रीराम माध्यमिक विद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

ध्रुव, प्रहलाद, अभिमन्यु, शिवाजी, राम, गांधीजी को महान् बनाने में उनकी मां के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता है। मां के रूप में नारी प्रेम, करुणा, त्याग, वात्सल्य की प्रतिमा है। वह बच्चों की एक मुस्कान पर अपने सुखों को न्यौछावर कर देती है। वह अपनी पुत्री व पुत्र को संस्कारवान बनाती है।

समाज के निर्माण में महिलाओं का भी योगदान होता है। नारी के बिना समाज का सृजन असंभव बन जाता है। नारी कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, सिद्धी है, रिद्धी है और सब कुछ है जो मानव प्रणाली के समस्त संकटों का निवारण करती है। जहां नारियों का सम्मान व उनकी पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। आदिकाल से नारी ही परिवार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है। उसने एक बहन, बेटी, बहू, पत्नी के रूप में परिवार में प्रेम, स्नेह, सौहार्द, त्याग बांट कर ऐसा वातावरण निर्मित किया है, जिसे सर्वांगीण कह सकते हैं।

नारी परिवार का स्तम्भ होती है जिसके बिना परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती। नारी ईंट–पत्थरों से निर्मित मकान को घर में बदल देती है। परिवार के सभी सदस्यों को संबंधों की मधुर डोर में बांधे रखती है। नारी की ममता, साहस और अनुशासन समाज को नई दिशा देते हैं। ये नारी के तीन गुण हैं जिनके सहारे समाज आगे बढ़ता है।

आज नारी विभिन्न क्षेत्रों में विकास कर रही है। विकास के साथ यह भी जरूरी है कि नारी अपने मूल क्षेत्रों को न भुला दे। ये मूल क्षेत्र हैं सेवा, परिवार और संतान की सेवा। सेवा कार्य की यदि उपेक्षा होती है तो महिला वर्ग अपने दायित्व से विमुख हो रहा है। मां का ममत्व संतान के लालन–पालन में अत्यधिक सहायक होता है। ममत्व का यह भाव यदि नहीं हो, इसमें निष्ठुरता आ जाये तो संतति के लालन–पालन में भी कमी आ जाती है। बच्चों को संभालना, उसका लालन–पालन एक मां जिस रूप में कर सकती है, पिता के लिए उस रूप में करना कठिन है। ममता नारी जाति की प्रथम महत्वपूर्ण विशेषता है।

महिला को डरपोक भी माना जा सकता है पर उसमें अपार साहस होता है। कभी–कभी एक शेरनी के रूप में भी महिला के दर्शन होते हैं। मां जन्म देने वाली भी होती है और संस्कार देने वाली भी। जो मां अपनी संतति में संस्कारों का रोपण करती है, वह समाज की बड़ी सेवा करती है। महिलाओं की विशेषता है लज्जा। लज्जा से तात्पर्य है अनुशासन। वह अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करे। अपने आप पर अनुशासन रखे। इस बात का संकोच रहे कि वह कोई गलत कार्य नहीं कर रही है।

महिला के जीवन की बड़ी विशेषता है अपने शील की सुरक्षा। अनेक महिलाओं का चरित्र अपनी विशिष्टता लिए हुए है। महासती सीता का चरित्र हमारे लिए प्रेरक है। मीरा का भक्त वैभव आज भी प्रेरक है। मीरा की भक्ति आज भी प्रेरणादायी है। नारी को देवी के रूप में प्रथम स्थान दिया गया है। आधुनिक युग की महिलाएं अपने देवी स्वरूप को पहचानें। महिला के अनेक रूप हैं। बेटी, बहन, पत्नी, मां, दादी, मामी, चाची आदि। महिला विभिन्न रूपों में कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा रखे, यह अपेक्षित है।

नारी जन्म से बच्चे की प्रथम शिक्षिका है। उसके स्तन का अमृत पीकर वह पुष्ट होता है। उसकी हंसी से और उसकी वाणी से बोलना सीखता है। ध्रुव, प्रहलाद, अभिमन्यु, शिवाजी, राम, गांधीजी को महान् बनाने में उनकी मां के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता है। मां के रूप में नारी प्रेम, करुणा, त्याग, वात्सल्य की प्रतिमा है। वह बच्चों की एक मुस्कान पर अपने सुखों को न्यौछावर कर देती है। वह अपनी पुत्री व पुत्र को संस्कारवान बनाती है।

दाम्पत्य जीवन की सफलता पति–पत्नी दोनों के सक्रिय सहयोग और दायित्व पर निर्भर करती है। इतिहास उठाकर देखा जाए तो बड़े महापुरुषों को महापुरुष बनाने वाली उनकी मां या पत्नियां ही थीं। प्रेम, सौजन्य, उल्लास, प्रसन्नता, धैर्य, सहनशीलता आदि प्रकृति प्रदत्त गुणों से परिवार को सींचती है वह। पत्नी के रूप में कहीं वह सत्यवान को वापस ले आती है या कहीं जरूरत पड़ने पर कैकेयी के रूप में युद्ध में रथ के पहिए में उंगली लगाकर अपने पति की सहायता करती है। इतना ही नहीं, याद करें उन राजपूत वीरांगनाओं को, जिन्होंने अपने पतियों को अपने सिर काट कर भेजे थे ताकि वे युद्ध में कहीं उनके मोहपाश में बहकर वापस न आ जाएं।

अतः परिवार, समाज तथा देश का विकास नारी जाति के उत्थान में निहित है। सुशिक्षित तथा अच्छे संस्कारों वाली नारी ही अपनी संतान को अच्छा और सच्चा नागरिक बना सकती है। ┐

9

धर्म की सदैव अनुगामी है नारी

–मोहित, 9वीं
शक्ति मंदिर प्रेमवती पब्लिक स्कूल
दरियागंज, नई दिल्ली

धर्म पर भारतीय नारी का अटल विश्वास है। पूजा–अर्चना, स्नान–ध्यान और व्रत–पर्व आदि पर उसकी गहरी श्रद्धा है। इसी धर्माचरण के कारण परिवार में कुकर्मों के प्रति भय है। भय के कारण परिवार सदाचरण के लिए विवश है।

नारी परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार है, शत–प्रतिशत सही है। उसके सेवा–स्नेह और ममतापूर्ण उच्च व्यवहारों को देखकर ही मनु ने कहा है–'*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*'। इसका अर्थ यह है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

परिवार की गाड़ी के चक्र में भारतीय नारी जननी पहले है, कुछ और बाद में। इसलिए वह सृष्टि की निर्मात्री भी है। पुरुष को संतान देकर परिवार के ढांचे का निर्माण करती है। केवल यही नहीं, पुरुष को पुत्र प्रदान कर उसको पितृऋण से मुक्त कराती है। पुत्री देकर संसार के अस्तित्व को स्थिर बनाए रखती है।

भारतीय नारी की विशेषता बताते हुए डॉ. विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं –'*भारतीय नारी में हजार रिश्तों के केन्द्र समाहित दिखते हैं*'। वह किसी की पत्नी है, किसी की मां, किसी की बहू है, किसी की सास। इन सहस्त्र संबंधों में एक होकर वह पूर्ण प्रस्फुटित कमल बनती है तभी उसके भीतर पराग भरता है। उस पराग के कण–कण में नई सृष्टि के बीज पड़ते हैं। भारतीय नारी उन पराग कणों में बीज मंत्र पढ़ती है संपूर्ण उत्सर्ग के, संपूर्ण प्यार के, संपूर्ण शक्ति के और उसके जीवन चक्र की धुरी घूमने लगती है परिवार के सर्वांगीण विकास के लिए। नारी ही घर, कुटुम्ब, जाति और देश को बनाती है। एक शब्द में कहें तो परिवार ही नहीं, दुनिया स्त्री पर टिकी है। गुरु रविन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा '*तुम विश्व की पालिनी शक्ति की धारिका हो शक्तिमय माधुरी के रूप में*'।

पत्नी के रूप में भारतीय नारी ऐश्वर्यशालिनी है जो हर कदम पर जीवन की हर स्थिति में अपने पति का साथ देने में पीछे नहीं रहती। पौराणिक काल से लेकर आज तक अनेक ऐसे उदाहरण सामने आते हैं। महाराजा दशरथ के युद्ध के आह्वान पर उनके सारथी का काम करने वाली उनकी पत्नी कैकेयी द्वारा रथ चक्र की कील निकल जाने पर अपनी अंगुली को कील के स्थान पर ठोंक उन्हें रण से विमुख न होने देना, सीता द्वारा कष्टों की परवाह न करते हुए श्री राम के साथ वन में चले जाना नारी की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। आज की पत्नी तो हर स्थान पर अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है।

नारी ने परिवार की स्थिति को सुदृढ़ किया है। परिवार के रहन–सहन का स्तर ऊंचा हुआ है। आर्थिक स्थिति अच्छी होने से बच्चों के चहुंमुखी विकास के द्वार खुले हैं। परिवार के सर्वांगीण विकास में हर रूप में सहायता के लिए वह तत्पर है। नर्स और डॉक्टर बनकर उसने न केवल घर के सदस्यों की सेवा सुश्रुषा की है, बल्कि रोग–पीड़ित जनों को स्नेह भी दिया है। अध्यापिका बनकर घर के बच्चों में तो ज्ञान बांटा ही, अन्य छात्रों के ज्ञान के नेत्र खोले। वैज्ञानिक बनकर घर और बाहर अंधविश्वास के तिमिर को मिटाया। व्यापारी बनकर घर और देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान की है। कहने का अभिप्राय यह है कि वह पूरे समाज को परिवार मानकर उसके सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे रही है।

धर्म सत्य का प्रतिष्ठापक है, चरित्र का निर्माता है, मन की तामसिक वृत्तियों का अवरोधक है, सुख–शांति तथा समृद्धि का स्रोत है। फलतः धर्म पर भारतीय नारी का अटल विश्वास है। पूजा–अर्चना, स्नान–ध्यान और व्रत–पर्व आदि पर उसकी गहरी श्रद्धा है। इसी धर्माचरण के कारण परिवार में कुकर्मों के प्रति भय है। भय के कारण परिवार सदाचरण के लिए विवश है। अतः भारतीय नारी ही परिवार के बच्चों में अच्छे संस्कारों को भरती है। उन्हें धार्मिक बनाती है और इस प्रकार अच्छे संस्कारों से युक्त होकर बच्चे देश और राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक बनते हैं।

यह कितने दुःख और विडम्बना की बात है कि जो नारी परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार है, समाज उसी के भ्रूण को मिटाने में हिचकिचाता नहीं। उसका बलात्कार करने में अपना पौरुष समझता है। दहेज के लालच में जिंदा जला देने में बहादुरी समझता है। फलतः परिवार बिखर रहे हैं, तलाक बढ़ते जा रहे हैं। सामाजिक ढांचा ही लड़खड़ाने लगा है। परिवार के विकास में नारी के महत्व को समझकर पुरुष को अपनी भावनाओं और क्रोध पर काबू रखने की प्रतिज्ञा लेनी होगी। नारी का सम्मान करना होगा। अपने अहम् को तिलांजलि देकर परिवार की गाड़ी के महत्वपूर्ण आधार 'नारी' के महत्व को स्वीकार करना ही होगा।

अतः सारांश रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय नारी परिवार की आधारशिला है। नारी से परिवार का धर्म, सभ्यता, संस्कृति, परम्पराएं और वंश टिके हैं। परिवार का सौंदर्य, समृद्धि और सौष्ठव उसी के कारण स्थिर है। इसलिए भारतीय परिवार में नारी का स्थान पावन और सर्वमहान् है। ┐

10

विविध कला कौशल में पारंगत नारी

–परिधि गुप्ता, 9वीं बी
निर्मला बालिका उ. मा. विद्यालय
कोटा जंक्शन, राजस्थान

आध्यात्मिक विकास का अर्थ है ईश्वर, गुरुजन व अपने से बड़ों में अटूट आस्था का विकास। इस क्षेत्र में भी नारी की भूमिका सराहनीय है। एक परिवार की नारी जब ईश्वर में आस्था रखती है तो परिवार के अन्य सदस्य भी इस भावना से अछूते नहीं रह पाते।

विभिन्न युगों में विभिन्न कार्यक्षेत्रों में निम्नतम से उच्चतम पदों पर शोभायमान नारियां परिवार के सर्वांगीण विकास की आधारशिला हैं। इन पदों पर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए वे बड़ी कुशलता से अपने पारिवारिक दायित्वों को भी बखूबी निभा रही हैं। एक नारी ही है जो परिवार के सर्वांगीण विकास में सहायक है। परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों ही रूपों में नारी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में भी महत्ती भूमिका निभा रही है।

सर्वांगीण विकास के विविध आयाम निम्नानुसार लिए जा सकते हैं –सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक, औद्योगिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण। समाज में विद्यमान विभिन्न रिश्तों के मध्य सामंजस्य बनाने की शिक्षा एक नारी के द्वारा ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित की जाती है। विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में एक नारी जब स्वयं भाग लेती है तो निश्चित ही उसके सम्पर्क में रहने वाले परिवार के अन्य सदस्य भी इस कार्य में उसका सहयोग करते हैं। इस प्रकार जाने–अन्जाने वे भी उन कार्यक्रमों का हिस्सा बन जाते हैं और सामाजिक विकास में अपना योगदान देते हैं। सामाजिक हित के कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा परिवार के सदस्यों को एक नारी से ही मिलती है।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक नारी ने एक कुशल गृहिणी के साथ–साथ बाह्य क्षेत्रों में भी कार्य कर परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है हमारी शिक्षा पद्धति ने।

परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य व शारीरिक विकास का उत्तरदायित्व भी एक नारी ही वहन कर रही है। परिवार के बुजुर्गों व बच्चों के लिए उपयुक्त पौष्टिक भोजन किस प्रकार का हो, एक शिक्षित नारी ही इसका पूरा ध्यान रख सकती है। इस प्रकार परिवार के शारीरिक विकास की धुरी भी एक नारी को ही माना जाये तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मानसिक विकास से तात्पर्य दूसरों की भावनाओं की कद्र करना व उसी के अनुरूप कार्य करना है। नारी स्वयं बहुत भावुक होती है फिर भी यदि परिवार के अन्य सदस्यों की भावनाओं से उसका तालमेल नहीं बैठता है तो वह अपनी भावनाओं का दमन कर लेती है। परिवार में यह सीख एक बालक को नारी के रूप में दादी, नानी, मां या बहन से मिलती है। अतः परिवार के मानसिक विकास में नारी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

आध्यात्मिक विकास का अर्थ है ईश्वर, गुरुजन व अपने से बड़ों में अटूट आस्था का विकास। इस क्षेत्र में भी नारी की भूमिका सराहनीय है। एक परिवार की नारी जब ईश्वर में आस्था रखती है तो परिवार के अन्य सदस्य भी इस भावना से अछूते नहीं रह पाते। इसी प्रकार जब एक नारी परिवार के बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करती है तो क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि उस परिवार के बच्चे इसके विपरीत व्यवहार कर पाएंगे ?

परिवार के शैक्षिक स्तर को उन्नत करने में भी नारी का योगदान महत्वपूर्ण है। यदि घर की नारी स्वयं शिक्षित नहीं है तो अपनी यह कमी वह अपने बच्चों में नहीं रहने देना चाहती। येन केन प्रकारेण वह अपने बच्चों को शिक्षा के उच्चतम शिखर पर देखना चाहती है।

परिवार को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों के माध्यम से नारी ने औद्योगिक क्षेत्र में कदम रखा है जिसमें उसके परिवार ने उसका साथ दिया है। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्र में परिवार को अग्रसर करने हेतु भी प्रथम पायदान पर एक नारी का अस्तित्व ही दृष्टिगोचर होता है।

वैज्ञानिक पद्धति के मुख्य रूप में तीन चरण हैं –समस्या की पहचान, समस्या के कारणों की खोज और तर्कों के आधार पर समस्या का सर्वाधिक उपयुक्त समाधान। नारी भी परिवार में रहते हुए इसी दृष्टिकोण को अपनाती है। परिवार में आई किसी भी समस्या की पहचान से लेकर उसके समाधान तक नारी की भूमिका ही महत्वपूर्ण होती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि परिवार के सर्वांगीण विकास के आधार रूप में नारी का स्थान सर्वोपरि है। इस प्रकार भारत की महान्ता यहां की सभ्यता व संस्कृति में निहित है जहां नारी को, जो परिवार के सर्वांगीण विकास की धुरी है, सम्मान दिया जाता है, पूजा जाता है। ┐

11

माता ही बालक की आदि गुरु

–भारती बजाज, 12वीं डी
लीलावती विद्या मंदिर
शक्ति नगर, दिल्ली

माता ही संतान के मस्तिष्क में निर्मल विचारों, निर्विकार चिंतन एवं पुनीत कर्मों को करने की प्रेरणा प्रदान करती है। वस्तुतः शुद्धाहार, शुद्ध बुद्धि, शुद्ध विचार, शुद्धाचार एवं शुद्ध व्यवहार –ये वे पंचामृत है जो गृह को अमृतस्रोत व परिवार को अमृतपायी बना देते हैं। किंतु यह पुरुष के द्वारा कठिन ही नहीं अपितु दुष्कर भी है।

प्राचीनकाल में भारत के मनीषियों द्वारा '*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*' इत्यादि उक्तियों का जो उद्घोष किया गया, यदि मानसिक धरातल पर लाकर उसका सम्यगरुपेण चिंतन एवं मंथन किया जाए तो प्रतीत होता है कि यह यथार्थतः कोई अतिश्योक्ति नहीं प्रत्युत्त शतशः सत्य ही है। नारी जो कभी बेटी, तो कभी पत्नी एवं कभी मातृत्व के रूप में कुटुम्ब के कण–कण में समाकर सदियों से अपने अस्तित्व का परिचय देती आई है, यही नहीं, परिवार का एक अभिन्न अंग है, वह परिवार के सर्वांगीण विकास में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यहां सर्वांगीण विकास से तात्पर्य एकमात्र शरीरिक विकास से नहीं अपितु बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक, आध्यात्मिक व भौतिक समृद्धि से है। नारी के अभाव में कोई भी परिवार का सदस्य अर्थात् पुरुष अपने कर्त्तव्यों का पूर्णरूपेण निर्वाह करने में सक्षम नहीं हो सकता है। यहां तक कि पुरुष को उन्नति के शिखर पर आरूढ़ करने का श्रेय भी इसी नारी को जाता है।

यदि हम व्यावहारिकता की दृष्टि से भी मनन करें तो आभासित होता है कि नारी परिवार के किस क्षेत्र में अपना तन–मन–धन समर्पित कर देने में सहयोग प्रदान नहीं करती। परिवार के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अतुल्य योगदान देकर यह अपने प्रत्येक संबंध को अटूट बना देती है, तभी तो यह कभी अन्नपूर्णा, कभी लक्ष्मी, यशोवर्धिनी, कुलवर्धिनी, गृहस्वामिनी आदि विशेषणों से विभूषित की जाती है। नारी तो प्रेम एवं समर्पण की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। नारी ही पुरुष में प्रेम का संचार कर उसे मनुष्य से एक आदर्श प्राणी बनाती है। इसी नारी की छाया में न केवल पुरुष अपितु परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वयं को सुरक्षित एवं सुखी अनुभव करता है क्योंकि प्रेम तो सेवा व सुख का प्रेरक है।

नारी जब 'पत्नी' पद पर प्रतिष्ठित होती है तो अपने पति पर असीम प्रेम समर्पित करती है। उसके प्रेम की परीक्षा तो तभी प्रारम्भ हो जाती है, जब वह अनेक वर्ष व्यतीत किए हुए अपने पितृकुल अर्थात् माता–पिता के घर से विदा होती है। उसके पश्चात् वह अपने प्रत्येक कर्त्तव्य का पालन करने का प्रयास करती है। वही पत्नी पति के प्रत्येक सुख दुःख में उसकी सहचरी बनकर उसकी मार्गदर्शिका बनती है। वही पुरुष को दुःख के प्रत्येक क्षणों में उन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। उसे भावी जीवन में आने वाले सुखों की आशा की किरणें दिखा उसके मन को प्रसन्नचित्त एवं उसमें मनोबल प्रवर्धित करती है।

इसलिए नारी के रूप में पत्नी अथवा मां ऐसा सर्वोत्तम साधन है जो उसे भावी बाधाओं में भी प्रेरणा प्रदान करती हुई उसे अग्रगामी बनाता है। यह तथ्य तो सर्वविदित ही है कि किसी भी सफलता को प्राप्त करने का मूलमंत्र 'प्रेरणा' ही है। अतः सिद्ध होता है कि नारी परिवार के मुख्य अंग पुरुष की श्रेष्ठ 'प्रेरणाप्रदायिका' है। वस्तुतः परिवार का विकास भी पुरुष की उन्नति पर ही निर्भर करता है, क्योंकि यदि परिवार के प्रमुख सदस्य पुरुष का ह्रास होगा तो शीघ्रतया कुटुम्ब भी धराशायी हो जाएगा।

नारी भावनाप्रधान एवं कोमल स्वभाव वाली होती है। इसके विपरीत पुरुष कठोरचित्तवृत्ति वाले होते हैं। जिस परिवार में मधुरवाणी विहार करती है, परिवार के सर्वजन परस्पर सॉदयता के साथ आचरण करते हुए एक–दूसरे को ॅदय से प्रेम करते हैं, उस परिवार में हार्दिक सौहार्द एवं सहानुभूति की शाखाएं पल्लवित होती हैं। उसी शोभन परिवार का शीघ्रता से सर्ववोन्मुखी

विकास होता है। इस प्रकार का वातावरण प्रदान करने का श्रेय भी नारी को ही प्राप्त होता है। वही एकमात्र सब में प्रेम की धारा को प्रवाहित करती है।

यही नारी 'अन्नपूर्णा' इसलिए कही जाती है, क्योंकि यह परिवार के समुचित विकास के लिए उसे आवश्यकतानुसार स्वादिष्ट भोजन प्रदान कर उसका शारीरिक विकास करने में समर्थ है। यही 'लक्ष्मी' पद से अभिहित की जाती है, क्योंकि इस नारी के रुष्टतापूर्वक आचरण करने पर तो लक्ष्मी भी उस परिवार में निवास नहीं करती। यदि अर्द्धांगिनी प्रातःकाल अपने पति को प्रसन्न मन से जीविका उपार्जन हेतु विदा न करे तो पति की संपूर्ण दैनिक क्रियाएं अशांत होने के कारण वह खिन्न एवं व्याकुल हो जाता है एवं धन प्राप्त करने में भी सक्षम नहीं हो पाता।

वस्तुतः पिता तो मात्र धन द्वारा अपनी संतान को अच्छी शिक्षा प्रदान करवा सकता है, किंतु संस्कारों के अभाव में एक सुयोग्य व आदर्श पुत्र, आदर्श शासक बनने में सर्वथा समर्थ नहीं हो सकता। यह तो मात्र नारी द्वारा ही संभव है जो संस्कारों की जननी कही जाती है। यही कारण है कि माता की महान्ता शास्त्रों में भी प्रामाणिक रूप में प्राप्त होती है–

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते।।

विद्यालय शिक्षा एवं जीवन निर्माण दोनों एक–दूसरे से सर्वथा पृथक हैं। विद्यालयी शिक्षा व्यक्ति को सुपठित, सभ्य, सुशील, शालीन, शिष्ट व चतुर बना सकती है, किंतु उसके जीवन का सुनिर्माण नहीं कर सकती। जीवन के निर्माण की साध माता के गर्भ, माता की गोद में साधी जाती है। माता अपनी संतान में जैसे संस्कारों को अमिटता के साथ संमकित करती है, उसी के अनुरूप बालक के जीवन का भवन निर्मित होता है। माता ही संतान के मस्तिष्क में निर्मल विचारों, निर्विकार चिंतन एवं पुनीत कर्मों को करने की प्रेरणा प्रदान करती है। वस्तुतः शुद्धाहार, शुद्ध बुद्धि, शुद्ध विचार, शुद्धाचार एवं शुद्ध व्यवहार –ये वे पंचामृत है जो गृह को अमृतस्रोत व परिवार को अमृतपायी बना देते हैं। किंतु यह पुरुष के द्वारा कठिन ही नहीं अपितु दुष्कर भी है। इन संपूर्ण गुणों की उपस्थिति नारी के अभाव में असंभव ही नहीं अपितु दुःसाध्य भी है। ┐

12

अभी भी कम हैं शिक्षित नारियां

–अंकिता कंवर राठौड़, 9वीं
मीरा निकेतन उ. मा. विद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

आज के समय में नारी को पुरुष का आधा अंग माना जाता है, परंतु समाज में उसे पुरुष के समान सभी अधिकार प्राप्त नहीं हैं। हमारे देश में अब नारी समाज के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

नारी और नर इस मानव सृष्टि के माता–पिता है। इन दोनों से ही घर–परिवार एवं समाज का विकास होता है। ये दोनों ही अन्योन्याश्रित रहकर सृष्टि–विकास का कार्य सम्पादन करते हैं। परंतु हमारे समाज में नर अर्थात् पुरुष की अपेक्षा नारी को कम महत्व दिया जाता है। अतः सभ्य समाज के लिए नारी शिक्षा का महत्व किसी भी दृष्टि से कम आंकना गलत है। विधाता ने इस सृष्टि–चक्र को निरंतर गतिशील बनाए रखने के लिए नर और नारी की युगल रूप में रचना की है। प्राचीनकाल में हमारे देश में नारी शिक्षा का काफी प्रचार था, परंतु मध्यकाल में विदेशी आक्रांताओं के कारण यहां का सामाजिक परिवेश नारी शिक्षा के अनुकूल नहीं रहा। अब स्वतंत्रता मिलने के बाद सरकार नारी शिक्षा पर ध्यान दे रही है, परंतु अभी भी शिक्षित नारियों का प्रतिशत बहुत ही कम है।

नारी कन्या, पत्नी, माता आदि रूपों में पुरुष वर्ग का उपकार करती है। उसका समग्र जीवन पुरुष के लिए समर्पित रहता है। सृष्टि के आदिकाल से ही नर–नारी का अटूट संबंध रहा है। नारी को सृष्टि का केन्द्र माना जाता है। नारी द्वारा ही संतानोत्पत्ति का क्रम चलता है। वह पुरुष की प्रेरणा है। किसी देश व समाज की उन्नति अथवा अवनति वहां के नारी समाज पर अविलम्ब है। जिस देश की नारी जागृत, सुशिक्षित तथा संस्कारित होती है, वही देश और समाज संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है।

प्राचीनकाल में हमारे देश में नारी शिक्षा का काफी प्रचार था। उस समय गुरु–पत्नियां कन्याओं को शिक्षित करती थीं। परंतु मध्यकाल में विदेशी आक्रान्ताओं के कारण यहां का सामाजिक वातावरण नारी शिक्षा और नारी स्वतत्रंता के अनुकूल नहीं रहा। आज भी शहरों एवं कस्बों में कन्या विद्यालयों की संख्या महिला जनसंख्या की दृष्टि से एकदम संतोषप्रद नहीं है। इन सभी कारणों से हमारे देश में अब भी नारी शिक्षा की स्थिति में काफी सुधार की जरूरत है।

वर्तमान में हमारे समाज में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ रहा है तथा जनंसख्या वृद्धि से भी कुछ मान्यताएं बदली हैं। इस कारण अब शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक माता–पिता कन्याओं को सुशिक्षित करना चाहते हैं। महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं, नए–नए क्षेत्र खोले जा रहे हैं।

शिक्षित नारी अपने घर–परिवार का सही ढंग से संचालन करती है तथा संतान को अच्छे संस्कार देती है। वर्तमान अर्थ–प्रधान युग में शिक्षित नारी धनोपार्जन में पति का पूरा सहयोग करती है और अपने पैरों पर खड़ी होकर आपदाओं का निवारण कर सकती है। वह सिलाई–बुनाई आदि से लेकर उद्योग–व्यवसाय तक सम्भाल सकती है। शिक्षित नारी देश के सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में पूरा सहयोग कर सकती है। अतः नारी शिक्षा का महत्व सर्वमान्य है।

शिक्षित नारी कुशल गृहिणी के रूप में अपने घर–परिवार का संचालन कुशलता से कर सकती है। वह अपनी संतान को वीरता, त्याग, उदारता, कर्मठता, सदाचार, अनुशासन आदि के ढांचे में आसानी से ढाल सकती है। इस प्रकार शिक्षित नारी का समाज में विशिष्ट स्थान माना जाता है। वस्तुतः जिन देशों में ऐसी सुशिक्षित नारियां हैं, वे ही आज विकास की गति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। ऐसी शिक्षित नारियों को ही देवी रूप में सम्मान दिया जाता है।

प्राचीनकाल में हमारे देश में नारी की पूजा होती थी, क्योंकि उस काल में नारियां परम्परागत शिक्षा प्राप्त कर सामाजिक कल्याण में सहयोगिनी रहती थीं। वस्तुतः इस संसार में नारी के बिना पुरुष के सभी कार्य एकाकी तथा अधूरे हैं। नारी से घर–परिवार का वातावरण सुख–सम्पन्नता से परिपूर्ण हो जाता है और इससे समाज भी उचित प्रभाव ग्रहण करता है।

आज के समय में नारी को पुरुष का आधा अंग माना जाता है, परंतु समाज में उसे पुरुष के समान सभी अधिकार प्राप्त नहीं हैं। हमारे देश में अब नारी समाज के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उचित एवं अनुकूल शिक्षा प्राप्त करके नारी अपने व्यक्तित्व का निर्माण तो करती ही है, वह अपने समाज और घर–परिवार में सुख का संचार भी करती है। जिस राष्ट्र की नारियां शिक्षित होती हैं, वह राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है, इसी कारण शिक्षित नारी को सुख, समृद्धिकारी कहा गया है। नारी सुख–सम्पन्न और घर की लक्ष्मी, पति की प्रेरणा–शक्ति, दुर्गा और संतान को सुशिक्षा देने वाली सरस्वती स्वरूपा है। ┐

13

नारी है सौन्दर्य की साकार प्रतिमा

–जया चौबे, 10वीं बी
श्री देवी अहिल्या शिशु विहार
छत्री बाग, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

जीवन के अंधेरों को भगा कर नारी नया प्रकाश भर देती है। वह सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है। उसकी सेवा भावना एवं परोपकार की प्रवृत्ति ने उसके चरित्र की गरिमा को स्थापित किया है।

नारी किसी भी परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार होती है। जिस प्रकार शरीर को संतुलित और व्यवस्थित रखने के लिए रीढ़ की हड्डी आवश्यक होती है, उसी प्रकार परिवार की रीढ़ की हड्डी नारी होती है। उसके बिना परिवार बौना और चेतना शून्य है। नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व पर ये पंक्तियां खरी उतरती हैं –*'नारी तो शक्ति स्वरूप आत्मा की अमर कला है। इसके बल पर तो सारा जग का व्यवहार चला है*।

नारी को शक्तिस्वरूपा भी कहा गया है। वह परिवार रूपी गाड़ी खींच कर भवसागर पार लगाती है। शायद इसीलिए नारी पूज्या मानी गई है। नारी अनेकों रूपों में हमारे सामने आती है। सबसे पहले वह एक बालिका के रूप में रहती है, परिवार और समाज जिसे देवी मान कर पूजता है। वह सभी कार्यों के साथ परिवार के काम करना सीखती है, मां के आदर्शों को अपने जीवन में उतारती है।

इसके पश्चात् वह पत्नी के रूप में अपने पति के साथ सास–ससुर, देवर–ननदों को सम्मान और प्रेम देती है। एक दूसरे परिवार को वह श्रद्धा के साथ स्वीकार करती है तथा वहां की परेशानियों और कठिनाइयों को दूर करती है। सास–ससुर को बेटी बन कर आदर–सम्मान देती है। ननद और देवर को मां के समान दुलारती है। उनकी सभी जरूरतों का ध्यान रखती है। वहीं पति को प्रेयसी और जीवन साथी के रूप में अपना प्रेम देकर जीवन के कठिन मार्गों पर भी हमेशा उसके साथ बनी रहती है।

इसके पश्चात् वह एक मां के रूप में हमारे सामने आती है। अपने बच्चों को ईश्वर की सबसे बड़ी मेहरबानी मानते हुए उन्हें प्यार और स्नेह से बड़ा करती है। परिवार को पुत्र और पुत्री देकर वंश का नाम चलाने में मदद करती है। वहीं एक बच्चे को जीवन देकर स्वयं मौत के मुंह में जाने से नहीं हिचकिचाती लेकिन उसी बच्चे की एक झलक देखकर वह सभी दुखों को भूल जाती है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है –

दीप शिखा है अंधकार की घनी घटा की उजियारी,
उषा है यह कमल भृंग की है पतझड़ की हरियाली।

जीवन के अंधेरों को भगा कर नारी नया प्रकाश भर देती है। वह सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है। उसकी सेवा भावना एवं परोपकार की प्रवृत्ति ने उसके चरित्र की गरिमा को स्थापित किया है। समाज के अनिवार्य एवं अपरिहार्य रूप में कार्य करने वाली नारी की कुछ विशेषताएं हैं, जिसके कारण उसे परिवार का आधार कहा गया है। सृष्टि संचालन में सहायक होने के साथ लालन–पालन में कष्ट, सहिष्णुता का रूप उसे समाज में ससम्मान स्थान दिलाता है। उसमें सृजन और पालन करने की ब्रह्मा, विष्णु और शिव की कार्यक्षमता देखी जा सकती है। कभी–कभी आवश्यकता पड़ने पर वह चण्डी स्वरूपा बनकर विकराल रूप धारण कर लेती है और इस प्रकार संहारक होकर रौद्र रूप को भी समाविष्ट कर लेती है।

सृष्टि संचालन में क्रोध का भी अत्यंत महत्व बताया गया है। यदि घर का बच्चा गलत रास्ते पर जाता है या पति अत्यधिक मनमानी करता है तो नारी का यह रूप सामने आता है। जिस प्रकार चण्ड–मुण्ड के आतंक के बाद मां दुर्गा का रूप सृष्टि का जन्मदाता सिद्ध हुआ। नारी का यह क्रोध मानो इस सृष्टि को पुनः नया जीवन देता है। परिवार में नारी जहां सभी का काम करती है, वहीं नाराज होकर सभी को काम सिखाती है। इससे परिवार की उन्नति होती है और परिवार की समृद्धि और यश बढ़ता है।

पौराणिक काल में अनेक आदर्श नारियों की यशोगाथा का वर्णन किया गया है। मध्य काल में नारी को माया और ठगिनी बताया गया है। इसके पश्चात् प्रसाद जी ने नारी को दया, माया, ममता, विश्वास की प्रतिमूर्ति का स्थान दिया है। आज के इस आधुनिक समय में नारी का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। वह घर संचालन के साथ पुरुषों से भी कंधे से कंधा मिला कर कार्य कर घर के आय के साधनों में वृद्धि में सहायक होती है। अतः नारी सृष्टि–संचालन, परिवार के संचालन और जीवन–संचालन में सबसे महत्वपूर्ण धुरी है। नारी महान् है। ┐

14

नारी से दुर्व्यवहार करना अपराध

–पारुल धीमान, 9वीं सी
एम. एम. सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल
राणा प्रताप बाग, नई दिल्ली

चाहे कोई भी उदाहरण लें, नारी सदैव अपने परिवार के हित के लिए सोचती है। महाभारत में भी द्रोपदी अपने परिवार की मर्यादाओं के लिए ही अपमानित हुई थी। रामायण में सीता ने अपने सुखों व सुविधाओं का बलिदान देकर अपने परिवार व अपने कुल की मर्यादा की खातिर वन गमन किया था।

नारी को सुख–समृद्धि एवं वैभव का प्रतीक माना गया है। स्त्री के अभाव में प्रत्येक कार्य अपूर्ण माना गया है। हिन्दू शास्त्रकारों के अनुसार स्त्री के अभाव में पुरुष द्वारा किया गया याज्ञिक अनुष्ठान सफल नहीं होता। नारी को 'अर्धांगिनी' माना गया है। नारी को लक्ष्मी की उपाधि दी गई है। परमात्मा ने संभवतः नारी को पहले उत्पन्न किया है। नारी को स्नेह, ममता, सहनशीलता व त्याग की मूर्ति कहा गया है। एक नारी कभी मां बनकर, कभी बेटी बनकर, कभी बहू बनकर और कभी पत्नी बनकर अपने कर्त्तव्य का पालन करती है। गृह की शोभा नारी से होती है। नारी को सम्मान व मर्यादा का प्रतीक माना गया है। बचपन, विवाहोपरांत और बुढ़ापे में क्रमशः पिता, पति एवं पुत्र पर आधारित होती है। नारी में पृथ्वी की सी क्षमता होती है। उसमें उच्च मानसिकता का वास है। वह दयामयी एवं असीम करुणा की सागर है। जयशंकर प्रसाद नारी को श्रद्धा से देखते हैं।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत–सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।।

नारी ही जन्म देती है, वह हमें पालती–पोसती है व बड़ा बनाकर इस काबिल बनाती है कि हम अपने पैरों पर खड़े हो सकें। नारी का यह कार्य पुरुष कभी नहीं सम्पादित कर सकता। अतः नारी का सर्वाधिक महत्व इसी वाक्यावली में निहित है। गृहस्थाश्रम का संपूर्ण भार नारी के कंधों पर है। पुरुष धनोपार्जन करके अपने बंधन से मुक्त हो जाते हैं परंतु नारी उसे सुव्यवस्थित ढंग से परिवार के हित में खर्च करती है।

परिवार के विकास में नारी का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। जब एक कन्या का जन्म होता है तो वह अपने मां–बाप के घर खुशियां ही खुशियां बिखेर देती है। माता–पिता की लाडली बनकर अपनी आंखों में सपने संजो कर जब वह बड़ी होती है तो पिता द्वारा उसका कन्यादान कर दिया जाता है। नए घर–परिवार में उसका आगमन होता है। दो परिवारों को जोड़ने में वह एक कड़ी का कार्य करती है। यहीं से उसका दोहरा दायित्व शुरू हो जाता है।

एक तरफ मायके के संस्कार होते हैं, दूसरी तरफ ससुराल पक्ष की मर्यादाएं होती हैं। वह अपने परिवार को एक सूत्र में बांधने का भरसक प्रयास करती है। अपने परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाओं व जरूरतों को पूरा करने का सदैव प्रयास करती है। घर का प्रत्येक कार्य करती है व सबकी इच्छाओं का सम्मान करती है। अपने परिवार के प्रति समाज में एक विशिष्ट व सम्मानजनक प्रतिष्ठा कायम करती है। बहू बनकर सास–ससुर, भाभी बनकर देवर–ननदों के सामने कभी भी अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होती।

एक कुशल पत्नी से ही एक स्वस्थ परिवार का निर्माण होता है। मां ही बच्चों की प्रथम गुरु होती है। वही बच्चों का सही मार्गदर्शन करती है। एक शिक्षक बन कर उचित व अनुचित से अवगत कराती है। वह एक मित्र बनकर अपने बेटे के साथ अच्छा रिश्ता निभाती है। एक सखी बनकर अपनी बेटी के साथ मधुरता वाला व्यवहार करती है। क्योंकि उसके बच्चे ही उसके सारे जीवन की जमा पूंजी है, अतः जो कमियां स्वयं में रह जाती हैं, वह उन कमियों को दूर कर अपने बच्चों के जीवन में खुशहाली भरने का प्रयास करती है। यदि परिवार पर कभी मुसीबत या दुःख आ जाए, वह हिम्मत नहीं हारती बल्कि अपनी सांत्वना की मरहम से परिवार को सदैव सुख ही देती है। वह एक स्तम्भ बनकर अपने पति के साथ सुख व दुख में सदैव खड़ी रहती है। अपनी इच्छाओं का दमन कर हर हाल में खुश रहती है।

कहीं–कहीं तो वह प्रंशसा के दो मीठे बोलों के लिए भी तरस जाती है। स्वयं को कष्ट होते हुए भी सदैव अपने कार्य में जुटी रहती है। यदि नारी कुछ दिनों के लिए अपने घर से दूर चली जाए तो घर की क्या हालत होगी, यह आप स्वयं ही कल्पना कर सकते हैं। वह अपने दुःख से दुःखी न होकर अपने परिवार के सुख से सुखी होती है। चाहे कोई भी उदाहरण लें, नारी सदैव अपने परिवार के हित के लिए सोचती है। महाभारत में भी द्रोपदी अपने परिवार की मर्यादाओं के लिए ही अपमानित हुई थी। रामायण में सीता ने अपने सुखों व सुविधाओं का बलिदान देकर अपने परिवार व अपने कुल की मर्यादा की खातिर वन गमन किया था। ग्रंथों में भी हमें तारा, कुंती, गार्गी, शबरी, द्रौपदी जैसी आदर्श नारियों का उल्लेख मिलता है।

चाहे इतिहास के पन्नों को पलट कर देख लें, अपने घर परिवार के लिए नारी का अद्‌भुत योगदान भुलाये नहीं भूलता। रानी लक्ष्मीबाई ने अपने वंश व परिवार की खातिर ही युद्ध भूमि में तलवार उठाई थी। हमें छत्रपति शिवाजी जैसा वीर देने में उनकी माता का ही हाथ था। हम नारी के महत्व को न समझ कर सदैव उसे अपमानित करते हैं। नारी के प्रति बुरा बर्ताव रखना मानवता के प्रति अपराध है। नारी का अपमान हमारे धर्म और संस्कृति का अपमान है। ┐

15

हर रूप वंदनीय नारी का

–नागराज सोनीवाल, 12वीं डी
रा. पी. सी. बी. उ. मा. विद्यालय
सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

नारी गुणों की भण्डार है। उसमें सभी गुण कूट–कूट कर भरे होते हैं। वह जन्म से चंचल और अपनों के बारे में सोचने वाली होती है। उसे शुरू से ही ये संस्कार दिए जाते हैं कि उसे अपना घर बसाना है, सबको अपनापन देना है। वह इन संस्कारों को बहुत अच्छे से अपनाती है और जिन्दगी भर निभाती भी है।

किसी देश की उन्नति और अवनति वहां के नारी समाज पर अवलम्बित होती है। नारी भारतीय संस्कृति में देवी का रूप है। सृष्टि काल से ही नर–नारी का अटूट संबंध रहा है। नारी सृष्टि का केन्द्र है क्योंकि नारी के द्वारा ही संतानोत्पत्ति का क्रम चलता रहता है। वह पुरुष की प्रेरणा है। जिस देश की नारी जागृत, शिक्षित तथा गुणवती होती है, वही देश सबसे उन्नत समझा जाता है।

नारी की प्रशंसा और गुण पर विभिन्न लेखकों और कवियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। मनुस्मृति में कहा गया है –'*जहां नारियों को पूजा जाता है वहां देवता निवास करते हैं*। नारी के बारे में यह भी कहा गया है –

नारी निन्दा मत करो, नारी गुण की खान।
नारी से नर उपजे, ध्रुव, प्रहलाद समान।।

इस संसार में प्रत्येक प्राणी नारी के गर्भ से जन्म लेता है। उसका शरीर नारी के रक्त से निर्मित होता है। उसमें नारी की भावनाओं का संचार होता है। वस्तुतः माता का ही आत्मिक रूप उसकी संतान होती है। इसलिए नारी और मातृभूति के प्रति भक्ति–भावना रखना मानव का नैसर्गिक गुण है। कहा भी गया है –'*जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी*। अर्थात् माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। भारतीय मनीषियों ने माता के इसी महत्व को देखकर '*मातृदेवो भव*' की घोषणा करके मातृत्व को देवतुल्य माना है।

नारी प्रेम, दया, त्याग व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है और ये आदर्श मानव जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी का हर रूप वंदनीय है। भारत के वैदिक युग में नारी का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था। उसी समय भारत सब देशों का सिरमौर माना जाता था। उस युग में नारी का जितना सम्मान था, संसार के किसी देश में नहीं था। यहां नारी की पूजा होती थी। सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा आदि देवियां विद्या, धन और शक्ति की प्रतीक मानी जाती हैं। सतयुग में श्रीराम द्वारा आयोजित किए अश्वमेध यज्ञ की सफलता के लिए सीता के स्थान पर सोने की प्रतिमा स्थापित की गई। इससे ज्ञात होता है कि कोई भी यज्ञ या धार्मिक अनुष्ठान नारी के बिना अधूरे माने जाते हैं।

नारी अपने बचपन के घरौंदे अपने परिवार में रहकर भी विभिन्न बलिदान देती है। उसे कदम–कदम पर अग्नि–परीक्षा देनी पड़ती है। वह अपने परिवार की खुशी और भले की लिए सब कुछ भुला बैठती है। अपनी खुशियों का गला घोंट कर अपने परिवार को खुशी देती है। नारी तो सहनशीलता की देवी है। वह अपनों की खुशी के लिए सब कुछ सहन कर लेती है। वह सदैव सारी जिम्मेदारियां निभाने को तत्पर रहती है।

नारी गुणों का भण्डार है। उसमें सभी गुण कूट–कूट कर भरे होते हैं। वह जन्म से चंचल और अपनों के बारे में सोचने वाली होती है। उसे शुरू से ही ये संस्कार दिए जाते हैं कि उसे अपना घर बसाना है, सबको अपनापन देना है। वह इन संस्कारों को बहुत अच्छे से अपनाती है और जिन्दगी भर निभाती भी है।

वर्तमान युग की नारी में गुण बढ़ते जा रहे हैं। वह उच्च शिक्षा ग्रहण करने लगी है। अपना कैरियर बनाती है। वह एक जागरूक नागरिक बन गई है और अपना भला–बुरा भली–भांति सोचने लगी है। वह अपने काम और परिवार का संतुलन बनाए रखती है। वह बाहर नौकरी करके कमाती है और घर में परिवार को संभालती है। उनकी जरूरतों का ध्यान रखती है और उन्हें भी पूरा वक्त देती है। उन्हें किसी तरह की शिकायत का मौका नहीं देती है।

एक आदर्श नारी सब के लिए आदर्श का स्रोत बनती है। उससे सब को शिक्षा और प्रेरणा मिलती है। आदर्श नारी समाज और पूरे देश में अपनी एक पहचान बनाती है। ये सब उसकी योग्यताएं और गुणों से ही सम्भव हो सकता है। ┐

16

नारी बिना समाज कहां

–शीनम महाजन, 10वीं
भारती पब्लिक स्कूल
स्वास्थ्य विहार, विकास मार्ग, दिल्ली

माता के रूप में नारी का दायित्व गुरुत्व है, महान् है। माता का ॅदय बच्चे की पाठशाला है। बच्चे माताओं के संपर्क में अधिक रहते हैं। माताओं के संस्कारों, व्यवहारों व शिक्षा का प्रभाव बच्चों के मन–मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ता है। माता ही बच्चों के कोमल व उर्वर मन–मस्तिष्क में समस्त संस्कारों के बीज बो सकती है।

कोई समाज कितना सभ्य–संस्कृत और उन्नत है, इसका मानदण्ड समाज में नारी की स्थिति है। जिस समाज में नारी को जितना आदर–सम्मान प्राप्त होगा, वह समाज उतना ही सभ्य और सुसंस्कृत समझा जाएगा। कहा भी गया है –*'यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'*। इसका अर्थ यह है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं। नारी ही सृष्टि का प्रमुख उद्‌गम है। नारी के अभाव में समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

सृष्टि–सृजन से ही नारी का अस्तित्व रहा है। देवता से लेकर मानव तक की जन्मदात्री नारी ही रही है। वैदिक युग में भारतीय नारी को श्रद्धा और विश्वास का रूप माना जाता था। कोई भी धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान नारी के सहयोग के बिना सम्पन्न नहीं होता था। इसलिए उसे 'अर्द्धांगिनी' कहा गया था। उसके बिना पुरुष अपूर्ण समझा जाता था। प्राचीन भारत के इतिहास के पृष्ठ भारतीय नारियों की गौरवमयी कीर्ति से भरे पड़े हैं। उन्हें गृह–लक्ष्मी और गृह–देवियों के नाम से संबोधित किया जाता था। उन्हें पुरुषों के समान शिक्षा मिलती थी, उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। परिवार में उनका पद अत्यंत प्रतिष्ठापूर्ण था।

धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों के अतिरिक्त रण–क्षेत्र में भी भारतीय नारियां अपने पति को सहयोग देती थीं। देवासुर संग्राम में कैकेयी ने अपने अद्वितीय कौशल से महाराज दशरथ को चकित कर दिया था। अपनी योग्यता, विद्वता और विवेकपूर्ण बुद्धि के बल पर ही द्रौपदी अपने पांच पतियों को युद्ध एवं वनवास काल में भी सत्परामर्श देती थी। उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार पति चुनने का अधिकार था। मैत्रेयी, शकुंतला, सीता, अनुसूइया, दमयंती और सावित्री आदि स्त्रियां इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

अनेक नारियों, जैसे महारानी लक्ष्मीबाई, चांदबीबी, दुर्गावती, चेन्नमा आदि ने आधुनिक नारी–समाज के सामने अनेक आदर्श प्रस्तुत किए हैं। नारी–जीवन दो रूपों में विभक्त है –पत्नी और माता। पत्नी परिवार के लिए वरदान है। वह सुख, शांति तथा श्री की वर्द्धक है। कलह की विरोधिनी है। वह देश की भावी पीढ़ी को योग्य बनाने के कार्य में उचित मार्गदर्शन कर सकती है। शास्त्रों में श्रेष्ठ पत्नी के छः लक्षण बताए गए हैं –

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमयाधारित्री, भार्या व षाड्‌गुण्यवतीह दुर्लभा।।

'कार्येषुमंत्री' अर्थात् कामकाज में मंत्री के समान सलाह देने वाली हो। मंत्री रूप में उचित सलाह वही नारी दे सकती है, जिसमें विवेक हो तथा विकसित बुद्धि हो। 'करणेषु दासी' अर्थात् सेवादि में दासी के समान कार्य करने वाली हो। 'सेवा' करने के लिए सेवा के महत्व का ज्ञान तथा उसकी सीमा और विधि की जानकारी होनी चाहिए। 'भोज्येषु माता' अर्थात् माता के समान स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन कराने वाली हो। 'रमणेषु रम्भा' का अर्थ है सोने के समय अप्सरा के समान सुख देने वाली। 'धर्मानुकूला' अर्थात् धर्म के अनुकूल आचरण करने वाली। 'क्षमयाधारित्री' अर्थात् क्षमादि गुण धारण करने में धरती के समान स्थिर रहने वाली। नारी में क्षमा का गुण होना चाहिए।

माता के रूप में नारी का दायित्व गुरुत्व है, महान् है। माता का ॉदय बच्चे की पाठशाला है। बच्चे माताओं के संपर्क में अधिक रहते हैं। माताओं के संस्कारों, व्यवहारों व शिक्षा का प्रभाव बच्चों के मन–मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ता है। माता ही बच्चों के कोमल व उर्वर मन–मस्तिष्क में समस्त संस्कारों के बीज बो सकती है। आगे चलकर यही संस्कार अपने समाज, देश और राष्ट्र के उत्थान के लिए परम आवश्यक होते हैं। मनुष्य वही बनता है जो उसकी माता उसे बनाना चाहती है। अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह को तोड़ने की शिक्षा ली थी। शिवाजी को 'शिवा' बनाने में माता जीजाबाई का हाथ था। स्वस्थ, सुंदर और ज्ञानवान शिशु नारी ही प्रदान कर सकती है।

भारतीय नारी मातृत्व की गरिमा से मंडित है, पत्नीत्व के सौभाग्य से ऐश्वर्यशालिनी है, धार्मिक अनुष्ठानों की सहधर्मिणी होने से धर्मपत्नी तथा अर्धांगिनी है, गृह की व्यवस्थापिका होने के कारण वह गृह लक्ष्मी है, सम्भोग–सुख निमित्त पत्नी, प्रेयसी तथा रम्भा है, अर्थ–अर्जन में पुरुष की सहयोगिनी है। नारी के अभाव में समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। नारी जननी है, इसलिए सृष्टि की निर्मात्री है। पुरुष को पुत्र प्रदान कर उसको पितृऋण से मुक्त कराती है; पुत्री देकर संसार के अस्तित्व को स्थिर बनाए रखती है। इस रूप में वह पूज्या है, महत्वपूर्ण है। अतः नारी ही है परिवार के सर्वांगीण विकास का दृढ़ आधार। ┐

17

स्त्री से मिलती है समाज को नई दिशा

–दलीप कुमार प्रजापत, 12वीं बी
रा. जाजोदिया उ. मा. विद्यालय
सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

नारी का हर रूप वंदनीय एवं महिमामय है। प्राचीन समय में राम, शिव, विष्णु, कृष्ण आदि की पत्नी और प्रेयसी सीता, पार्वती, लक्ष्मी व राधा का नामोल्लेख उनके पतियों से पहले किया जाता था। वर्तमान में भी स्वंतत्र भारत में नारी को विविध क्षेत्र प्रदान किये गये हैं।

भारत में प्राचीन समय से ही नारी को समाज का परम विशिष्ट अंग माना गया है। नारी–विहीन जीवन और समाज की कल्पना असंभव–सी है। वह जननी है, मां है, सबसे प्रमुख सभी पुरुषों, घर–परिवार और संसार के अस्तित्व का कारण है। संसार में जो कुछ भी है, हुआ है अथवा हो रहा है, पृष्ठभूमि में करुणा के रूप में नारी जीवन विद्यमान है। प्रत्येक सफल पुरुष के पीछे कोई न कोई नारी अवश्य है। इसलिए भारतीय जीवन और परम्परा में नारी को आदिशक्ति और देवी तक कहा गया है। उस जैसी विशाल सॉदय और दयालु शायद ही कोई और होगी, इसीलिए भारतीय समाज या परिवार में नारी के लिए कहा गया है *–'यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*।

सृष्टि के आदिकाल से ही नर–नारी का अटूट संबंध रहा है। नारी को सृष्टि का केन्द्र भी माना जाता है, क्योंकि नारी के द्वारा ही संतानोत्पत्ति का क्रम चलता है, वही पुरुष की प्रेरणा है। पूजा–यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों एवं सामाजिक मांगलिक अवसरों पर नारी की उपस्थिति अनिवार्य घोषित की गई है। जिस देश की नारी जागृत–सुशिक्षित तथा संस्कारित होती है, वही देश और समाज संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है।

परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार नारी को माना गया है। इसमें नारी की अहम् भूमिका बतायी गई है। नारी को पुरुष का आधा अंग माना गया है, परंतु समाज में उसे पुरुष के समान सभी अधिकार प्राप्त नहीं हैं। हमारे देश में अब नारी परिवार के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। अब नारी परिवार से लेकर ग्राम पंचायत तथा संसद तक प्रतिनिधित्व करती है। इस तरह नारी अपने व्यवहार तथा परम्परागत संस्कारों से समाज या परिवार को नई दिशा देने में सक्षम है। वह परिवार में अपनों से बड़ों का आदर व सम्मान करती है तथा अपनी संतान को अच्छे संस्कार सिखा कर उसके सुखद भविष्य की कामना करती है।

बच्चों की पहली पाठशाला परिवार है व उसकी शिक्षक है मां। सर्वांगीण विकास के आधार पर चार आश्रमों का वर्णन किया गया है। प्रथम बाल्याश्रम, जिसमें बचपन से लेकर यौवन तक की अवस्था आती है। द्वितीय ब्रह्मचर्याश्रम जिसमें युवक या युवती के शिक्षा का स्तर रखा गया है। गृहस्थाश्रम में नारी के गृहस्थी जीवन को सम्मिलित किया जाता है। वानप्रस्थाश्रम में वृद्धाश्रम आता है। इस प्रकार नारी परिवार में गृहस्थी का भार वहन करती है और पारिवारिक समस्याओं का सामना भी वही करती है। वह अपने अधिकारों का स्वतंत्रता से उपयोग कर सकती है तथा पुरुष वर्ग की प्रेरणा बनकर मंगलमय पारिवारिक जीवन का निर्माण कर सकती है।

परिवार का रहन–सहन, आचरण, संस्कार, धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक आदर्श आदि सभी का प्रसार कर नारी पारिवारिक जीवन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। पूजा–यज्ञ आदि नारी के बिना अधूरे माने जाते हैं। पति के साथ हवन या मण्डप के समय नारी का उपस्थित होना आवश्यक होता है। परिवार या यूं कहें कि पूरी मानव जाति के विकास में नारी का पद पुरुष के पद से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। वह बहन, मां, पत्नी, पुत्री आदि विविध रूपों में प्रेम, दया–ममता तथा त्याग आदि की प्रतिमूर्ति है। नारी का हर रूप वंदनीय एवं महिमामय है। प्राचीन समय में राम, शिव, विष्णु, कृष्ण आदि की पत्नी और प्रेयसी सीता, पार्वती, लक्ष्मी व राधा का नामोल्लेख उनके पतियों से पहले किया जाता था। वर्तमान में भी स्वंतत्र भारत में नारी को विविध क्षेत्र प्रदान किये गये हैं।

आज की नारी एक ओर अपनी संतान को सुसंस्कारित करने में विशेष ध्यान रखती है तो दूसरी ओर अपने परिवार की भौतिक उन्नति में पति का पूरा साथ देती है। वह पुरुषों के समान सभी कार्यों में प्रवृत्त दिखाई देती है। इस तरह आधुनिक काल में समाज या परिवार निर्माण की दृष्टि से नारी का योगदान विशिष्ट है। वस्तुतः नारी अपने परिवार के साथ समाज के निर्माण और विकास की प्रमुख धुरी है। जो भी समाज एवं परिवार आज सुव्यवस्थित एवं समृद्ध है, उसमें नारी का विशिष्ट योगदान रहा है। नारी ने परिवार में अपना स्थान अपनी प्रतिभा, परिश्रम, निष्ठा, त्याग, सेवा भावना और समर्पण से प्राप्त किया है। उसका वर्तमान सुंदर और भविष्य उज्ज्वल है। ┐

18

घर को स्वर्ग बनाती है नारी

–अभय जोधपुरकर, 12वीं
विद्यासागर स्कूल
बिचौली मर्दाना, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

***'स्वर्गलोक की लक्ष्मी की तुलना में भूलोक की लक्ष्मी की मूर्तिमान पुत्री, गृहलक्ष्मी कहीं अधिक वास्तविक है*। घर में स्वर्ग सी परिस्थिति उत्पन्न करने में वह पूर्ण समर्थ है और उसका प्रत्यक्ष परिचय कहीं भी, कभी भी प्राप्त किया जा सकता है।'**

भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। समाज में आज नारी की स्थिति जो भी है, पर यह एक निर्विवाद सत्य है कि नारी ही भारतीय परिवार की धुरी है और यथार्थ यह भी है कि नारी के संबंध में मतैक्य भी नहीं। कहने का आशय यह है कि भले ही नारी के कितने ही महत्वों के बखानों पर पर्दा डाल भी दिया जाए तब भी हम नारी से विरक्त घर, समाज व देश की कल्पना भी नहीं कर सकते।

परिवार के सर्वांगीण विकास से तात्पर्य है परिवार के सदस्यों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं आर्थिक विकास होना। नारी ही परिवार की नींव व रीढ़ है और परिवार के प्रत्येक सदस्य की प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। एक ओर कोमल, तरल व सरल है तो दूसरी ओर कठोर, करारी होती है। शिशु के जन्म से ही शारीरिक व बौद्धिक विकास की ओर ध्यान देती है। शैशवकाल से ही बालकों में संस्कारों की पूर्ति कराती है। बालक का पहला शब्द एवं कदम उसी की बदोलत संपन्न होता है। वह ही बालक की प्रथम शिक्षक होती है।

परिवार का कोई भी ऐसा कार्य नहीं जो स्त्री के योगदान के बिना पूरा होता हो। वह परिवार के सदस्यों का मनोबल बढ़ाती है, छोटी–छोटी बातों से लेकर हर एक महत्वपूर्ण कार्य में हाथ बंटाती है। बच्चों की अभिरुचियों की खोज भी वही करती है। बच्चों में परिपक्वता का कारण वही है। इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक महापुरुष कहलाने के पीछे नारी का हाथ रहा है, भले ही वह एक मां के रूप में हो, जीवनसाथी के रूप में हो, बहन के रूप में हो या प्रेयसी के रूप में। गृहिणी आर्थिक दृष्टि से भी पारिवारिक सहयोग देती है। मितव्ययतापूर्ण कार्य करती है। घर के सारे कामों को करती है जिसका पैसों में मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

इतना ही नहीं, आज की स्त्री तो पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। धन कमाने के क्षेत्र में आर्थिक भार वहन करने के साथ ही घर की सभी जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रही है। सामुदायिक कार्यों में भी वह बढ़–चढ़ कर भाग लेती है एवं संतान को भी इसके लिए प्रेरित करती है। परंपराओं का पालन करने की प्रेरणा भी वही देती है। इस तरह स्त्री अपने विभिन्न स्वरूपों में परिवार का सर्वांगीण विकास करती है।

नारी प्रत्येक क्षण किसी न किसी चरित्र को निभाती रहती है, जैसे– मां, पत्नी, बहन, बेटी, बहू, दोस्त आदि। इतने सारे रिश्तों को निभाने में वह अपने आप पर केन्द्रित कभी नहीं रहती। सबसे महत्वपूर्ण किरदार मां का होता है। स्त्री अर्थात् एक मां ही अपने शिशु को कोख में ही संस्कार और नीति सिखा देती है। जो शिशु भविष्य में परिवार बसाएगा, उस शिशु को उन सभी आवश्यकताओं से अवगत कराती है जो परिवार के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। अतः मां ही आने वाले परिवार के संपूर्ण विकास की जननी होती है।

नारी अपने जीवन साथी को पत्नी के रूप में प्रत्येक प्रकार का सहयोग देती है। पति को हर संभव सुख देती है, उसके प्रत्येक दुःख को कम करती है, सुख–दुख में सहारा देती है। उसके प्रत्येक कार्य में मदद करती है। उसे मनोबल देती है। अतः पत्नी ही परिवार के मुखिया की हर तरफ से मदद करके घर–परिवार का संपूर्ण विकास करती है। बहू सुखी परिवार की नींव होती है। सास–ससुर की सेवा, संयुक्त परिवार को बांधकर रखना, प्रत्येक सदस्य की इच्छाओं का ध्यान रखना आदि अनेक कार्य करती है।

एक बहन अपने भाई को हर संभव लाड़–प्यार देती है। भाई के प्रति ममत्व भाव रखती है और एक पुत्री के रूप में माता–पिता का आदर करती है, उनकी सेवा करती है। वह उनकी लाज रखती है। आज यहां तक कि पुत्री अपने ही पैरों पर खड़े होकर माता–पिता के आर्थिक अभाव को पूर्ण कर खुद ही शादी करने की क्षमता रखती है। इस तरह स्त्री इतने सारे किरदारों को निभाते हुए परिवार का सर्वांगीण विकास करती है।

ऐसा कहा जाता है कि नारी का सृजन जिन तत्वों से हुआ है, उनमें क्षमा और करुणा का बाहुल्य है। आत्मीयता का निर्झर उसके अंतरंग से निःसृत होता है। स्नेह की मूल सत्ता बिना विकृत हुए अपने स्थान पर यथावत् बनी रहती है। नारी में अद्‌भुत सहनशीलता व उदारता होती है जिसके कारण समस्त मनुष्य समाज गौरवान्वित होता है।

परिवार रूपी एक छोटे राष्ट्र एवं समाज को स्त्री ही उच्च स्तरीय विभूतियों से भरा–पूरा बना देती है। अतः कहा जा सकता है कि *'स्वर्गलोक की लक्ष्मी की तुलना में भूलोक की लक्ष्मी की मूर्तिमान पुत्री, गृहलक्ष्मी कहीं अधिक वास्तविक है*। घर में स्वर्ग सी परिस्थिति उत्पन्न करने में वह पूर्ण समर्थ है और उसका प्रत्यक्ष परिचय कहीं भी, कभी भी प्राप्त किया जा सकता है।' अतः स्त्री ही परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार है। ┐

19

प्रत्येक क्षेत्र में नारी महत्वपूर्ण

–गुरजोत कौर, 9वीं ए
एम.आर.एम. सी.सै. स्कूल
शाहदरा, दिल्ली

यदि कोई पुरुष राष्ट्र निर्माण व समाज सुधार के काम में जाता है, वह तभी सम्भव हो सकता है जब नारियां उनके घर का काम सम्भाल कर उन्हें समाज के काम में जाने की अनुमति देती है। बिना नारी के सहयोग से वह घर से बाहर एक पग भी नहीं उठा सकता है।

परिवार के विकास में केवल पुरुषों की भूमिका महत्वपूर्ण नहीं होती बल्कि नारियां भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में सहायक होती हैं। प्रत्यक्ष रूप से भी संसार में ऐसी नारियां हुई हैं जिन्होंने पुरुषों की भांति अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। आज भी नारियां जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

हमारे यहां कहा गया है –*'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'*। जहां नारियों का सम्मान होता है, वहां देवताओं का वास होता है अर्थात् वहां पर देवता कार्यसिद्धि में सहायक होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जहां नारियां कार्यों में भाग लेती हैं, वहां पर निश्चित रूप से सफलता मिलती है। हमारे यहां के प्राचीन ग्रंथ नारियों की महिमा–गान से भरे पड़े हैं। नारी का रूप व्यापक है। वह एक ओर अबला कहलाती है जो उसका शांति का स्वरूप है, दूसरी ओर वह नारी 'शक्ति' कहलाती है, यह उसका रौद्र रूप है। उस रूप में पुरुष भी उससे शक्ति की याचना करता है, क्योंकि वह शक्ति की अधिष्ठात्री है। यह बात केवल कथनी की ही नहीं अपितु पूर्णरूपेण व्यावहारिक है।

नारी की शक्ति के सामने बड़े–बड़े वीर भी नहीं टिक पाते हैं। घर–गृहस्थी के निर्माण के लिए हो या किसी राष्ट के निर्माण के लिए, पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है नारी। यदि यह कहा जाए कि नारी के बिना किसी भी राष्ट्र का निर्माण पूर्ण नहीं हो सकता है तो यह अतिश्योक्ति नहीं है। हमारे देश में नारी को अर्द्धांगिनी कहा गया है। नारी के बिना पुरुष अपूर्ण है। इसी तरह नारी के बिना निर्माण कार्य भी अपूर्ण है।

समाज में नारी के विविध रूप हैं। वह माता, बहन, पत्नी, पुत्री है। इन विविध रूपों में वह पुरुष की सहायिका बनकर खड़ी रहती है। इन विविध रूपों में वह प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण में सहायक रहती है। यदि कोई पुरुष राष्ट्र निर्माण व समाज सुधार के काम में जाता है, वह तभी सम्भव हो सकता है जब नारियां उनके घर का काम सम्भाल कर उन्हें समाज के काम में जाने की अनुमति देती है। बिना नारी के सहयोग से वह घर से बाहर एक पग भी नहीं उठा सकता है।

आज की नारी आधुनिकता के परिवेश में जी रही है। वह अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष भी कर रही है। सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त उसे आर्थिक समस्याओं से भी जूझना पड़ रहा है। इसलिए उसे नौकरी करनी पड़ रही है। इस प्रकार वह परिवार को आर्थिक संकट से उबारने का प्रयत्न भी कर रही है।

वर्तमान समय में हर क्षेत्र में नारी राष्ट्र निर्माण में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने में लगी हुई है। विज्ञान, राजनीति, चिकित्सा, प्रशासन, खेल–कूद, शिक्षण और रक्षा संबंधी आदि अनेक कार्यों में नारियों का बहुत योगदान चल रहा है। भारत में आज नारी ने प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति के पद को सुशोभित करके राष्ट्र निर्माण ही नहीं किया, अपितु राष्ट्र के भाल को विश्व में उन्नत भी किया।

नारी नर की खान है। वह जननी है। नारी की गरिमा गौरवपूर्ण है। जिस देश की नारियां आगे नहीं आतीं, उस देश की प्रगति अधूरी रहती है। वह देश पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता है। इसलिए जीवन के हर क्षेत्र में नारियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ┐

20

स्त्री होती है मृत्युपर्यन्त संरक्षिका

–साधना कटियार, 9वीं बी
सरस्वती विद्या मंदिर
नोएडा, उत्तर प्रदेश

आज की स्त्रियां घर के सीमित क्षेत्र को छोड़कर समाज सेवा की ओर अग्रसर हो रही हैं। उनके ॅदय में सामाजिक चेतना का संचार हो गया है। आज भी भारतीय नारियां गृहस्थी का कार्यभार संभालते हुए अनेक आवश्यक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान कर रही हैं। आज नारी को पुरुषों की भांति सब अधिकार प्राप्त हैं।

सृष्टि के प्रारंभ से भारतीय नारी अनंत गुणों का सागर रही है। पृथ्वी के समान धैर्य धारण करने की क्षमता, समुद्र–सी गंभीरता, चन्द्रमा के समान शीतलता एक साथ नारी के ॅदय में होती है। वह दया, ममता, करुणा और प्रेम की पवित्र मूर्ति है। वह समय आने पर प्रचंड चंडी के समान हो जाती है। वह मनुष्य की जन्मदात्री है। नर और नारी एक–दूसरे के पूरक हैं। वह माता के समान हमारी रक्षा करती है और एक सच्चे गुरु की भांति मार्गदर्शन करती है। बचपन से लेकर वह मृत्युपर्यन्त हमारी संरक्षिका रहती है। गृहस्थ की सुख–शांति, आनंद तथा उत्थान नारी पर ही आधारित है। इन्हीं कारणों से भारतीय संस्कृति में नारी को गृहलक्ष्मी, गृहदेवी, सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी आदि कहा गया है।

प्राचीन काल में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। नारी के त्याग और बलिदान ने उसे उच्च स्थान पर पदासीन होने का अधिकारी बनाया। नारी घर में तथा घर के बाहर भी सम्मान की अधिकारिणी थी। मैत्रेयी, शकुंतला, सीता, अनसूइया, दमयंती, सावित्री, गार्गी आदि स्त्रियां इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। प्राचीन काल में कोई भी धार्मिक कार्य बिना पत्नी के सहयोग के पूर्ण नहीं होता था। धार्मिक कार्यों के अलावा नारियां युद्ध क्षेत्र में भी पूरा सहयोग देती थीं। देवासुर संग्राम में कैकेयी ने महाराज दशरथ को सहयोग देकर अपने अपूर्व कौशल का परिचय दिया था। गृहस्थ आश्रम का संपूर्ण अस्तित्व नारी के बलिष्ठ कंधों पर आधारित था। पुरुष द्वारा अर्जित धन की स्वामिनी एक मात्र नारी ही थी।

आज भारत में लड़कियों को भी पिता की संपत्ति में लड़कों की भांति हिस्से करने का प्रावधान किया गया है। आज की स्त्रियां घर के सीमित क्षेत्र को छोड़कर समाज सेवा की ओर अग्रसर हो रही हैं। उनके ॅदय में सामाजिक चेतना का संचार हो गया है। आज भी भारतीय नारियां गृहस्थी का कार्यभार संभालते हुए अनेक आवश्यक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान कर रही हैं। आज नारी को पुरुषों की भांति सब अधिकार प्राप्त हैं।

वर्तमान युग की नारी ने अपनी बुद्धि, योग्यता तथा आत्मविश्वास से यह भली–भांति सिद्ध कर दिया है कि नारी 'अबला' नहीं 'सबला' है। सामाजिक जीवन की आधारशिला है नारी। आज जीवन के हर क्षेत्र में वह पुरुषों के साथ कार्यरत है। आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, वह शिक्षित है। वह राजनीतिक दृष्टि से पुरुष के समकक्ष अधिकारों की अधिकारिणी है।

भारतीय संस्कृति का मूल रहा है 'सादा जीवन उच्च विचार'। आधुनिक नारियां सादगी से परे हैं। श्रृंगार प्रसाधनों के नाम पर अनावश्यक धन का व्यय कर दिया जाता है। आज की आधुनिक नारी अपने आपको बाह्य सौन्दर्य के रंगों से सराबोर कर आधुनिक रूप देने में ही सलंग्न है। रूप को सजाने एवं संवारने की यह प्रवृत्ति नारी–जगत में इतनी हावी हो चुकी है कि वह अपने कर्त्तव्यों को भूल रही है।

स्वतंत्र भारत की नारियों में नव चेतना एवं नवजागृति है। आज वह देश के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वह दिन दूर नहीं जब वह जीवन के प्रत्येक कर्मक्षेत्र में पुरुष के समतुल्य समझी जाएगी, अपनी प्रतिभा एवं काबलियत से देश के उत्थान में उल्लेखनीय कार्य कर नारी–जाति के आदर्श को स्थापित कर सकेगी। ┐

21

त्यागमयी वृत्ति न भूले नारी

–प्रियंका प्रजापति, 9वीं
श्रीराम बाल विद्या मंदिर मा. विद्यालय
छापर, सुजानगढ़, राजस्थान

आज की भारतीय नारियों को पश्चिमी देशों के रहन–सहन अथवा आचार–विचार का अंधानुकरण न करके अपने वैभवशाली प्राचीन युग से कुछ उत्तम आदर्श ग्रहण करने चाहिए तभी वे सीता और सावित्री की तरह इतिहास में ही नहीं, मानव मात्र के हृदय में उच्च स्थान प्राप्त कर सकेंगी।

किसी देश की उन्नति अथवा अवनति वहां के नारी समाज पर निर्भर करती है। जिस देश की नारी जागृत, शिक्षित तथा गुणवती होती है, वही देश संसार में सबसे अधिक उन्नत समझा जाता है। इस दृष्टिकोण से भारत के वैदिक युग में नारी का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था। उस समय भारत सब देशों का सिरमौर माना जाता था। उस युग में नारी का जितना सम्मान था, उतना संसार के किसी देश में नहीं था। यहां नारी की पूजा होती थी। सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा आदि देवियां विद्या, धन और शक्ति की प्रतीक मानी जाती थीं। सफल जीवन के लिए विद्या, धन और शक्ति तीन महत्वपूर्ण साधन हैं और ये तीनों साधन नारी रूपी देवियों की कृपा से ही प्राप्त हो सकते थे। अतः भारतवर्ष में सर्वत्र देवियों का पूजन होता था। मनु महाराज ने तो यहां तक कह दिया कि जिस घर में नारी को सम्मान नहीं मिलेगा उसको कभी रिद्धि–सिद्धि प्राप्त नहीं होगी।

शास्त्रकारों ने माता को पिता से सौ गुणा ऊंचा पद प्रदान किया है। गृहस्थ जीवन की सफलता और सुंदर संचालन के लिए स्त्रियों का विदूषी एवं शिक्षित होना तो आवश्यक था ही, उन्हें विविध कला–कौशल में भी पारंगत होना पड़ता था। सीता, सावित्री का नाम कौन नहीं जानता। गृहस्थ जीवन में माता मदालसा का ज्वलंत उदाहरण है, जिसने अपने पुत्रों को लोरियों से ही इच्छानुकूल संन्यासी व राजा बनाकर अपनी विधायक शक्ति का परिचय दिया।

आधुनिक युग में नारी के लिए पुनः विविध कार्य क्षेत्र खुल गए हैं। वे पढ़–लिखकर अध्यापिका, डॉक्टर, नर्स, सचिव, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, गवर्नर, राष्ट्रपति आदि सभी पदों पर प्रतिष्ठित हैं। समाज में उनका मान बढ़ गया है। पर्दा प्रथा समाप्त होने से आधुनिक नारी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में कुशलता से कार्य रही है।

भारतीय नारी परिवार की प्रथम शिक्षिका मानी जाती है। उस पर अपनी संतान का सही मार्गदर्शन करने की संपूर्ण जिम्मेदारी होती है। आजकल नारी का कार्य क्षेत्र घर की चारदीवारी को छोड़कर बहुत विस्तृत हो गया है। वह ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त करती है और सड़कों, बाजारों, होटलों में बेधड़क घूमती है। सिनेमा के प्रचार से नारी की स्वतंत्रता और भी बढ़ गई है।

भारतीय नारी की इस प्रगति से देश उन्नत होता जा रहा है। रहन–सहन का स्तर बढ़ रहा है, किंतु आधुनिक शिक्षित और प्रगतिशील नारी का समाज में वह पूज्य और सम्मानीय स्थान नहीं जो कि वैदिक युग में था। इसका कारण यह है कि आधुनिक नारी ने जो प्रगति की है, उसमें त्याग और गौरव कम, स्वार्थ और कृत्रिमता अधिक है।

नारी के लिए उचित है कि वह अपना गौरव और आदर बनाये रखने के लिए प्राचीन भारतीय नारी के आदर्शों को पढ़े और उनका युगानुकूल आचरण करने का प्रयत्न करे। नारियों को त्यागमयी वृत्ति अपनाना परम आवश्यक है। यदि फैशन के पीछे पागल होकर वह दौड़ती रही तो स्थिति में पुनः परिवर्तन की सम्भावना हो सकती है। आज की भारतीय नारियों को पश्चिमी देशों के सहन–सहन अथवा आचार–विचार का अंधानुकरण न करके अपने वैभवशाली प्राचीन युग से कुछ उत्तम आदर्श ग्रहण करने चाहिए तभी वे सीता और सावित्री की तरह इतिहास में ही नहीं, मानव मात्र के हृदय में उच्च स्थान प्राप्त कर सकेंगी। ┐

22

नारी नर की पथ–प्रदर्शक

–साक्षी पुण्डीर, 10वीं सी
मोतीराम मेमोरियल सी. सै. स्कूल
शाहदरा, दिल्ली

विश्व में भारतीय नारी को आदर्श रूप में स्वीकार किया जाता है। नारी तो नर की पथ–प्रदर्शक है, उसे जैसा चाहे बना दे। वीर पुरुषों, संतों, जननायकों और विद्वानों को जन्म देकर नारी राष्ट्र निर्माण एवं व्यक्तित्व निर्माण में योगदान देती है।

'**य**त्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। इससे स्पष्ट है कि भारतीय परिवारों में नारियों की महत्वपूर्ण स्थिति है। वस्तुतः नारी सृष्टिकर्ता की अद्‌भुत रचना है, वह शक्ति और प्रकृति प्रतिनिधि है।

भारतीय इतिहास के पन्ने नारियों की गौरवशाली कीर्ति से भरे पड़े हैं। उन्हें गृहलक्ष्मी और गृहदेवियों के नाम से संबोधित किया जाता है। परिवार में उनका पद प्रतिष्ठापूर्ण था और गृहस्थी का प्रत्येक निर्णय उनसे बिना पूछे नहीं किया जाता था। भारतीय नारी के रक्त में आज भी वही परम्परागत भारतीय भावनाएं काम करती हैं। पवित्रता, उदारता, ममता और स्नेहशीलता उसमें कूट–कूट कर भरी है।

वैदिक युग में नारी को समाज और परिवार में सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से सम्मान की स्थिति प्राप्त थी। समय परिवर्तन के साथ नारी को घर की शोभा का सामान समझा जाने लगा। आधुनिक युग में महर्षि दयानंद सरस्वती तथा राजाराम मोहनराय जैसे महापुरुषों ने नारी को समाज में उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया। जयशंकर प्रसाद ने नारी को महान् बताते हुए उसे श्रद्धा का रूप माना –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

नारी का मूल–रूप जननी, यानि धरती का है, जो नर–मादा सभी प्रकार की फसलों को न केवल जन्म देती, बल्कि अपने अंतर के अमृत से पाल–पोसकर बड़ा भी करती है। वह उसे सुख–समृद्ध भी बनाती है। अतः नारी के बिना किसी परिवार के नव–निर्माण की तो क्या, उसके मूल अस्तित्व की कल्पना तक कर पाना संभव नहीं है। वह नींव है, बुनियाद है, जिसकी उपेक्षा एवं अभाव में किसी भी प्रकार के निर्माण की बात तक नहीं सोची जा सकती।

घर में रहकर नारी ही पुरुष और अन्य सभी सदस्यों को संस्कार और सुविचार, प्रेरणा और सक्रियता प्रदान कर सकती है जो घर से बाहर जीवन, समाज एवं राष्ट्र–निर्माण के लिए परम आवश्यक ही नहीं, बुनियादी शर्त भी है। परंपरा के अनुरूप नारी का स्थान यदि घर–परिवार तक ही सीमित मान लिया जाए, तब भी वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वह इसलिए कि देश, समाज और राष्ट्र आदि सभी की सत्ता का उद्‌गम घर–परिवारों के साकार अस्तित्व से ही होता है।

गृहस्वामिनी के क्षेत्र एवं अधिकार तक सीमित रहकर भी यदि नारी हमें सृजनात्मक लालन–पालन एवं दृष्टिकोण दे पाएगी, तभी तो राष्ट्रीयता का भाव जाग सकेगा जो हमेशा युगानुकूल नव–निर्माण का ज्वलंत प्रश्न बना रहा करता है। अतः नव–निर्माण द्वारा प्रगति एवं समृद्धि की आकांक्षा रखने वाला कोई भी व्यक्ति और राष्ट्र नारी की उपेक्षा नहीं कर सकता।

समानाधिकार के इस युग में विश्व की जनसंख्या का आधा भाग विकास के मार्ग पर अग्रसर है। शिक्षा के विकास के साथ–साथ उसमें आत्मविश्वास जागृत हो रहा है। विश्व की अनेक विवेकशील स्त्रियों ने नारियों का पथ–प्रदर्शन किया है। दैन्य, दासता और दमन का चक्र अब विकास, विज्ञान और विवेक ने काट गिराया है। आज स्त्री स्वतंत्रता का युग है। नारियां अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं। आज की नारी शिक्षा प्राप्त कर रही है। शिक्षा ने आधुनिक नारी में जागृति पैदा कर दी है।

इसलिए वह सभी क्षेत्रों में आगे आई है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में उसका सम्मान बढ़ा है। आज महिलाएं कार्यालयों, यंत्र और वेद्यशालाओं में सम्मानित पदों पर हैं। वे पुलिस, फौज और गुप्तचरों के साहसिक पदों पर भी कार्य कर रही हैं।

एक नारी माता के रूप में साक्षात् वात्सल्य का अवतार है। तभी तो जन्मभूमि को भी मातृभूमि कहकर पुकारा जाता है। बेटी के रूप में वह अपने सुख–दुख को माता–पिता के सुख–दुख पर न्यौछावर कर देती है। पत्नी के रूप में वह पति की हर हालत में रक्षा एवं सहायता करती है। इसलिए विश्व में भारतीय नारी को आदर्श रूप में स्वीकार किया जाता है। नारी तो नर की पथ–प्रदर्शक है, उसे जैसा चाहे बना दे। वीर पुरुषों, संतों, जननायकों और विद्वानों को जन्म देकर नारी राष्ट्र निर्माण एवं व्यक्तित्व निर्माण में योगदान देती है। ⊥

23

सत्यम् शिवम् सुंदरम् है नारी

–सुरभि जैन, 12वीं
श्री गांधी बालिका विद्यालय
सुजानगढ़, चूरू, राजस्थान

किसी भी देश व समाज की उन्नति अथवा अवनति वहां की नारियों पर अवलम्बित है। जिस देश में नारी की स्थिति जितनी श्रेष्ठ है, वह देश संसार में सर्वाधिक उन्नत माना जाता है। इतना सब कुछ होने पर भी नारी का जीवन कष्टपूर्ण ही दिखाई देता है।

आदिकाल से नारी सृष्टि का केन्द्र और पुरुष की मूल प्रेरणा रही है। नारी के बिना नर की कल्पना विधान को मान्य नहीं है। इस विशेषता के कारण भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में नारी को सदैव सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है। यज्ञादि धार्मिक आयोजनों और सामाजिक–मांगलिक अवसरों पर नारी की उपस्थिति अनिवार्य घोषित की गई है। मानव जाति के विकास में नारी का स्थान पुरुष से श्रेष्ठ है।

नारी प्रेम, दया, करुणा, ममता, त्याग और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है तथा इन मानवीय गुणों के कारण ही नारी का हर रूप पूजनीय है। चाहे वह मां का हो, चाहे बहन या पत्नी का हो, उसकी महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। किसी भी देश व समाज की उन्नति अथवा अवनति वहां की नारियों पर अवलम्बित है। जिस देश में नारी की स्थिति जितनी श्रेष्ठ है, वह देश संसार में सर्वाधिक उन्नत माना जाता है। इतना सब कुछ होने पर भी नारी का जीवन कष्टपूर्ण ही दिखाई देता है।

प्राचीन काल में भारतीय नारी का स्वरूप समादरणीय रहा है। यहां नारी की प्रतिष्ठा अर्द्धांगिनी के रूप में की गई है। यहां पहले नारी को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का रूप माना जाता था। धार्मिक कार्यों में नारी की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। इस प्रकार वैदिक काल में नर–नारी के समान अधिकार एवं समान आदर्श थे, परंतु उत्तर–वैदिक काल में नारी की सामाजिक स्थिति निरंतर गिरती रही।

यह सार्वभौमिक सत्य है परंतु मात्र सृष्टा होना ही उसका संपूर्ण परिचय नहीं। वह सृष्टि के स्वरूप को अपने गर्भ में आधार देती है व उसकी रचना के पश्चात् उसके पालन–पोषण का उत्तरदायित्व भी वहन करती है। यही नहीं, उस सृष्टि का रूपा 'जीव' अथवा 'कृति' की रचना में राष्ट्र हित के संस्कारों का मूल बीजारोपण करने वाली भी यही जननी है। भारत में प्रारंभ में नारी के इस मातृ–रूप को अत्यंत आदरसूचक दृष्टि से देखा गया है।

सृजनात्मकता के परिप्रेक्ष्य में नारी का यह जननी रूप उसकी प्राकृतिक देन है जो निश्चय ही पूजनीय है। परंतु भारतीय नारी का दूसरा और महत्वपूर्ण वचनात्मक पक्ष उसका कर्म क्षेत्र है। वह कर्मठ, कष्ट–सहिष्णु और कल्याणकारी होने के साथ–साथ कलापरक मानी जाती है। उसकी आत्मा सत्यम् शिवम् सुंदरम् की भावना से ओत–प्रोत होती है। यही कारण है कि इन महिलाओं का घर की परिधि के भीतर व बाहर से युक्त प्रत्येक कर्म अपने आप में कला अथवा सर्जना का ही दूसरा रूप है।

प्रायः यह देखने को मिलता है कि युवक पुरुष अपनी आजीविका की तलाश में दूर–दराज के क्षेत्रों में चले जाते हैं तथा उनकी अनुपस्थिति में वे सभी कार्य महिलाओं को ही करने पड़ते हैं जो वह कर सकते थे। महिलाएं जहां एक तरफ पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह बड़ी तल्लीनता से करती चली आ रही हैं, वहीं दूसरी तरफ गृहेतर कार्यों को भी उतनी ही लगन के साथ करने के लिए विवश है। अब प्रश्न उनके अपने पारिवारिक अस्तित्व का है। इसी अस्तित्व की रक्षा के लिए उन्हें 10 से 15 घंटे तक प्रतिदिन कार्य करना पड़ता है। यदि सामान्य कार्य संपादन में नारी प्रतिशत का मूल्यांकन किया जाए तो यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि वह कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

प्रायः मानव जीवन के सभी कार्य किसी न किसी रूप में आर्थिक क्रिया से जुड़े हुए हैं चाहे वे घर–गृहस्थी से संबंधित कार्य हों या खेतों से जुड़े कार्य अथवा नौकरी या दफ्तर से संबंधित कार्य हों। वर्तमान समय में समस्त दैनिक कार्यों के संपादन में महिलाएं भी हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर की ही भागीदारी निभा रही हैं।

प्यार, घर और बच्चे मनुष्य की एक बड़ी आवश्यकता है। यह आवश्यकता स्त्री–पुरुष दोनों की है, इसलिए समान होनी चाहिए। पर पुरुष की यह मांग जहां उसकी अन्य मांगों में से एक है, वहां नारी के लिए यह जैसे अनिवार्यता ही है। आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद जब तक स्त्री पुरुष का संरक्षण खोजेगी, जब तक मातृत्व को अदम्य इच्छा मान इसकी अनिवार्यता स्वीकारेगी, वह पुरुष के समक्ष अभ्यर्थिनी बनी रहेगी, क्योंकि मां बनने के लिए पहले पत्नी बनना होगा और पत्नी बनने के लिए विवाह का कोई न कोई स्वरूप भी स्वीकारना होगा।

व्यक्ति के स्वस्थ विकास के लिए बच्चे को पिता का अपनत्व भरा अनुशासन और माता की ममतामयी गोद दोनों समान रूप से चाहिए, इस बात को विश्व भर के मनोवैज्ञानिक व समाजशास्त्री एक मत से स्वीकार करते हैं। ┐

24

प्रगति–पथ पर बढ़ते नारी के कदम

–महिमा सिंगला, 10वीं डी
डी.ए.वी. सैन्टनरी पब्लिक स्कूल
पश्चिम एंक्लेव, दिल्ली

शिशु के जन्म लेने पर उसका पालन–पोषण, उसकी शिक्षा–दीक्षा का कार्य नारी ही करती है। इस दृष्टि से पुरुष की तुलना में नारी का अधिक महत्व है। पुरुष यदि निर्माण करता है तो ध्वंस भी। परंतु स्त्री केवल सृजन करती है। अपने त्याग, सेवा, ममता आदि गुणों से वह सबका उपकार करती है।

एक युग था जब भारतीय नारी का सारा जीवन घर की चारदीवारी के भीतर बीतता था। वह अपना सारा समय और सारी शक्ति चूल्हे–चौके का काम करने, संतान का लालन–पालन करने में, गृहस्थी की देखभाल में बिताती थी। उसे गृहलक्ष्मी, गृहिणी कहकर उसके प्रति सम्मान भी प्रकट किया जाता था। मध्यकाल के सामंती वातावरण में वह पुरुष की दासी मात्र बन कर रह गई। वह चारदीवारी की लक्ष्मण रेखा को लांघ नौकरी करने के लिए निकल पड़ी।

एक नहीं दो–दो मात्राएं,
नर से बढ़कर नारी।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की उक्त पंक्तियों में उन्होंने व्याकरण की दृष्टि से नारी को नर की तुलना में अधिक बड़ा बताया है। परंतु विश्व के सभी देशों का इतिहास बताता है कि समाज सर्वत्र पुरुष प्रधान ही रहा है। इसका कारण मूलतः पुरुषों का शारीरिक दृष्टि से नारी की तुलना में अधिक सबल होना है। पुरुषों को घर के बाहर का काम करने और स्त्रियों को घर गृहस्थी संभालने का विधान बहुत प्राचीन काल से चलता आ रहा है। जीवन में अर्थ का, धन का महत्व सर्वाधिक है। इस बात को सभी मानते हैं। संस्कृत में उक्ति है –*'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते*। उधर मार्क्स अपने ग्रंथ डास कैपिटल में पूंजी को ही सब कष्टों का कारण बताते हैं और अर्थोपार्जन करता है पुरुष। आर्थिक दृष्टि से नारी सर्वत्र, सदैव पुरुष पर निर्भर रही है।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार नारी को विश्व की जननी माना गया है। कभी एक समय था जब नारी को भी पुरुष की भांति सब अधिकार प्राप्त थे। यही नहीं, हिन्दू धर्म में तो नारी को पुरुष से भी अधिक महत्व दिया गया है। प्राचीन काल की नारी जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती थी। शिक्षा के क्षेत्र में विश्वघोषा, युद्ध के क्षेत्र में कैकेयी, धर्म के क्षेत्र में मंदालसा, गृहस्थ के क्षेत्र में सावित्री, समाज के क्षेत्र में सीता और प्रेम के क्षेत्र में राधा के नाम से प्रसिद्ध है। उसी नारी ने अशिक्षित एवं विमूढ़ व्यक्ति को कालिदास बनाया। उसी ने विलासी बिल्वमंगल को भक्त सूरदास के रूप में प्रसिद्ध किया और उसी ने भोगी तुलसी को लोकनायक तुलसी का पद दिया।

उसी नारी ने सुनीति बन कर अपने तिरस्कृत पुत्र को गगन के चमकते हुए नक्षत्र के रूप में अमर किया, जीजाबाई बनकर अपने भोले–भाले शिवा को वीर शिवा के नाम से विख्यात किया। उसी ने पुतलीबाई का रूप धारण कर के अपने प्यारे सपूत मोहनदास को भारतीय संस्कृति का उपदेश देकर उसे 'महात्मा' और 'बापू' जैसी पवित्र उपाधियों से विभूषित किया। जीवन का वह कौन–सा क्षेत्र है जिसमें नारी ने पुरुष से बढ़कर कार्य करके नहीं दिखाया।

समय परिवर्तनशील है, प्रकृति का नियम ही परिवर्तन है। शिक्षा की सुविधा पाने पर जब भारतीय युवतियों ने अपनी प्रतिभा, अपने परिश्रम और लगन से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की, तो उनमें स्वाभिमान, आत्मविश्वास, आत्मगौरव की भावना उत्पन्न हुई और आज वे जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के समकक्ष ही नहीं, उससे बढ़ चढ़ कर नाम कमा रही हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर त्याग, बलिदान और देशप्रेम का परिचय दिया। आजादी के बाद संविधान में भी पुरुष के समान अधिकार नारी को दिए गए हैं और उन अधिकारों को पाकर निरंतर अपना बौद्धिक विकास तो कर ही रही हैं, देश की प्रगति में भी अपना योगदान दे रही हैं।

शिक्षा के प्रसार ने भारतीय नारी के जीवन और व्यक्तितव में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। अब उसकी शिक्षा केवल पढ़ने–लिखने, अंक गणित तक सीमित नहीं रह गई है। वह विश्वविद्यालय, आयुर्विज्ञान संस्थानों, प्रौद्योगिकी के प्रतिष्ठानों, विज्ञान की प्रयोगशालाओं में उच्च शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न कर्मक्षेत्रों में उतर पड़ी है। आज भारतीय महिलाएं डॉक्टर हैं, इंजीनियर हैं, प्रशासनिक अधिकारी हैं, वायुयानों में चालक तथा एयर हॉस्टेस के रूप में कार्य करती हैं। विद्यालयों तथा बैंकों में तो उनकी संख्या पुरुषों के बराबर दिखाई देती है। यह प्रगति देखकर लगता है कि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य पंक्तियां –'*अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आंचल में है दूध और आंखों में पानी*, आज के संदर्भ में बेमानी–सी हो गई हैं। वह नरकृत शास्त्रों के बंधन तोड़ रही है, स्वावलम्बी, स्वाभिमानी और आत्मगौरव से पूर्ण है।

नारी के अनेक रूप हैं। माता के रूप में वह अपने बच्चों को शिक्षा–दीक्षा, संस्कार देती है। इस प्रकार देश के नागरिकों का निर्माण करने वाली नारी ही है। शिशु के जन्म लेने पर उसका पालन–पोषण, उसकी शिक्षा–दीक्षा का कार्य नारी ही करती है। इस दृष्टि से पुरुष की तुलना में नारी का अधिक महत्व है। पुरुष यदि निर्माण करता है तो ध्वंस भी। परंतु स्त्री केवल सृजन करती है। अपने त्याग, सेवा, ममता आदि गुणों से वह सबका उपकार करती है। इसलिए जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में लिखा है –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

25

सामंजस्य की साक्षात् प्रतिमा नारी

–दीप्शी शर्मा, 9वीं ए
तितिक्षा पब्लिक स्कूल
रोहिणी, दिल्ली

नारी स्नेह की प्रतिमूर्ति है। वह व्यक्ति को मनुष्य बनाकर अपने बच्चों और माता–पिता को अच्छे काम के लिए प्रोत्साहित करती है। नारी–जीवन मुख्यतः पत्नी और माता, दो रूपों में विभक्त है। शिक्षित पत्नी परिवार के लिए वरदान है। स्नेह, सुख–शांति और श्री की वर्द्धक है। समन्वय, सामंजस्य और समझौते की साक्षात् प्रतिमा है।

भारतीय नारी मातृत्व की गरिमा से मंडित है, पत्नी के सौभाग्य से ऐश्वर्यशालिनी है, धार्मिक अनुष्ठानों की सहधर्मिणी होने से धर्मपत्नी तथा अर्धांगिनी है, गृह की व्यवस्थापिका होने कारण वह गृहलक्ष्मी है और धनार्जन में पुरुष की सहयोगी है।

नारी जननी है, इसलिए सृष्टि की निर्मात्री है। पुरुष को पुत्र प्रदान कर उसको पितृऋण से मुक्त कराती है, पुत्री देकर संसार के अस्तित्व को स्थिर बनाए रखती है। इस रूप में वह पूज्या है। महादेवी वर्मा के शब्दों में, *'भारत की सामान्य नारी शिक्षित न होकर भी संस्कृत है। जीवन–मूल्यों से उसका परिचय अक्षरों द्वारा न होकर अनुभवों द्वारा है। अतः उसके संस्कार समय के साथ गहराते गए। परिणामतः आज भी नीति, धर्म, दर्शन, आचार, कर्त्तव्य आदि का एक सहज–बोध रखने के कारण भारत की अशिक्षित नारी, शिक्षित नारी की अपेक्षा धरती के अधिक निकट और जीवन–संग्राम में ठहरने के लिए अधिक समर्थ है।*

भारतीय नारी का ॅदय प्रेम का रंगमंच है। नारी का सौन्दर्य आकर्षण का केन्द्र–बिन्दु है। नारी के चंचल कटाक्ष पत्थर को भी घायल कर देते हैं। उसकी मधुर मुस्कान पुरुष को पराजित कर देती है। उसे केवल नारी में सत् चित् आनंद के दर्शन होते हैं। उसमें सत्य, शिव और सुंदर की अनुभूति होती है।

धर्म सत्य का प्रतिष्ठापक है, चरित्र का निर्माता है, मन की तामसिक वृत्तियों का अवरोधक है, सुख–शांति तथा समृद्धि का स्रोत है। धर्म पर भारतीय नारी का अत्यंत विश्वास है। पूजा–अर्चना, स्नान–ध्यान, व्रत–पर्व पर उसकी श्रद्धा है। कुप्रथाएं, जादू–टोना, गंडे–तावीज पर उसे अंधविश्वास है। इसी धर्माचरण के कारण समाज में कुकर्मों के प्रति भय है। भय के कारण समाज सदाचरण के लिए विवश है। सदाचार की इस प्रेरणा के लिए भारतीय नारी समाज में पूज्य है, श्रद्धा की प्रतिमा है।

नारी स्नेह की प्रतिमूर्ति है। वह व्यक्ति को मनुष्य बनाकर अपने बच्चों और माता–पिता को अच्छे काम के लिए प्रोत्साहित करती है। नारी–जीवन मुख्यतः पत्नी और माता, दो रूपों में विभक्त है। शिक्षित पत्नी परिवार के लिए वरदान है। स्नेह, सुख–शांति और श्री की वर्द्धक है। समन्वय, सामंजस्य और समझौते की साक्षात् प्रतिमा है।

भारतीय नारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा फिर लिखती हैं –*'आदिम काल से आज तक विकास–पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और ॅदय का विकास किया है, उसी का पर्याय है नारी*।

भारतीय नारी वैदिक काल से सामाजिक दृष्टि से उच्च पद पर प्रतिष्ठित है। पंचकन्या रूप में प्रातः स्मरणीया है। समाज उसके वात्सल्यमय आंचल में स्थान पाता है, इसलिए माता के नाते पूज्या है। निःस्वार्थ समाज–सेवा की सुधा बांटती देवी है। त्याग के बल पर समाज की 'साम्राज्ञी' है। सत्य आनंद की स्रोतस्विनी के नाते वह समाज की 'मोहिनी' है। उसका क्रोध समाज में भूकम्प ला देता है तो उसका पतन समाज के जीवन–मूल्यों को धूल–चटा देता है।

भारतीय नारी सदा सामाजिक संस्था बनकर दीप्त रही है, सहस्त्र दल कमल दिखती है। रस लेती रहती है अपने मायके से वाणी की तरह और लक्ष्मी की तरह लहराती रहती है ससुराल में। किसी की ननद है, किसी की भाभी, किसी की जेठानी, किसी की देवरानी, इन संबंधों में एक होकर वह पूर्ण प्रस्फुटित कमल बनती है। तभी उसके भीतर पराग भरता है।

भारतीय नारी एक ओर प्राकृतिक सृजन–शक्तियों के उदार मानवीकरण के नाते जीवन के विकास की प्रतीक बनी, दूसरी ओर सामाजिक सदस्य के रूप में सर्वाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद पर आसीन हुई। अदिति मानव मुक्तिदात्री मानी गई। सरस्वती ज्ञान का, इडा मेधा का, पृथ्वी मातृशक्ति का प्रतीक बनी।

वह प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री, राज्यपाल, विधायक, न्यायाधीश, आई.सी.एस., पी.सी.एस. अधिकारी बन राष्ट्र–संचालन करती है। दूसरी ओर, युगों से पीड़ित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार भारतीय नारी में बन गए थे, उन्हें आधुनिक भारतीय नारी ने अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया है कि अपने स्वरूप के लिए समाज से याचना करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ┐

26

रिद्धि–सिद्धि दायनी है नारी

–अनिता प्रजापत, 12वीं
श्री सेठ सूरजमल भू.रा.बा.उ.मा. विद्यालय
लाडनूं (राजस्थान)

नारी विवाह के बाद दो परिवारों को अपनाती है। वह शादी के बाद एक तरफ अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार को आर्थिक समस्या से दूर रखती है तो दूसरी ओर अपने सास–ससुर की सेवा करती है एवं अपने बच्चों की देखभाल करती है।

सृष्टि के आदिकाल से ही नर–नारी का अटूट बंधन रहा है। नारी का नामोच्चार हमेशा पुरुष से पहले होता है जैसे लक्ष्मी–नारायण, भवानी–शंकर, सीता–राम, राधा–कृष्ण आदि। नारी को सृष्टि का केन्द्र भी माना जाता है क्योंकि नारी के द्वारा ही संतानोत्पत्ति का क्रम चलता है, वही पुरुष की प्रेरणा है।

भारतीय संस्कृति की आदर्श परम्परा में नारी को सदैव सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ है। पूजा–यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों एवं सामाजिक मांगलिक अवसरों पर नारी की उपस्थिति अनिवार्य घोषित की गई है। मानव जाति के विकास में नारी का पद पुरुष के पद से कहीं श्रेष्ठ है। वह बहन, मां, पत्नी, पुत्री आदि विविध रूपों में प्रेम, दया, ममता, त्याग आदि की प्रतिमूर्ति है। वस्तुतः यह आदर्श मानव–समाज की उन्नति का उच्चतम आदर्श है।

नारी का हर रूप पूजनीय एवं महिमामय है। किसी देश व समाज की उन्नति अथवा अवनति वहां के नारी समाज पर निर्भर है। जिस देश की नारी जागृत, शिक्षित तथा संस्कारित होती है, वही देश और समाज संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है। नारी के योगदान से ही परिवार का सर्वांगीण विकास संभव है।

यद्यपि सभी सदस्य परिवार के विकास में सहायक होते हैं लेकिन नारी का अपने परिवार के सर्वांगीण विकास में विशेष योगदान होता है। आज नारी एक ओर अपनी संतान को सुसंस्कारित करने में विशेष ध्यान रखती है, तो दूसरी ओर अपने परिवार की भौतिक समुन्नति में पति का पूरा साथ देती है व पुरुषों के समान सभी कार्यों में प्रवृत्त दिखाई देती है।

नारी शादी से पहले अपने परिवार वालों, माता–पिता के हर सुख–दुख में साथ देती है, उनकी सेवा करती है। कहते हैं कि बेटा शादी के बाद परिवार वालों को भूलने लगता है, अर्थात् उसका माता–पिता के प्रति लगाव कम होने लगता है लेकिन एक बेटी की शादी होने के बाद उसका लगाव अपने माता–पिता के प्रति और अधिक बढ़ जाता है। नारी विवाह के बाद दो परिवारों को अपनाती है। वह शादी के बाद एक तरफ अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार को आर्थिक समस्या से दूर रखती है तो दूसरी ओर अपने सास–ससुर की सेवा करती है एवं अपने बच्चों की देखभाल करती है।

परिवार की सुख–समृद्धि की वृद्धि में नारी का विशेष योगदान होता है। अर्द्धांगिनी होने के कारण शिक्षित नारी गृह–कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न करती है। बजट संतुलित होने से पारिवारिक जीवन में सुख एवं समृद्धि का संचार होगा। पारस्परिक सहयोग एवं सूझ–बूझ से प्रत्येक समस्या का समाधान सरलता से हो सकेगा।

नारी पति के कार्य–भार में हाथ बंटाकर सहचरी की भूमिका निभाती है। नारी संतान की शिक्षा–दीक्षा में महत्वपूर्ण योगदान करती हुई उसमें श्लाघनीय गुणों का बीजारोपण करती है, जिससे परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी सुख व शांति बनी रहे। नारी के रूप में सबसे उच्च स्थान मां का होता है। मां अपने पुत्र से अत्यंत प्रेम करती है। माता का सान्निध्य पुत्र के विकास में सहायक होता है। इस प्रकार नारी पुत्री, बहन, पत्नी एवं मां के रूप में परिवार के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

नारी जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने की क्षमता रखती है। शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, धर्म, समाजसेवा और सेना में नारी प्रशंसनीय भूमिका निभा रही है। नारी ब्रह्म है, विद्या है, श्रद्धा है, शक्ति है,

पवित्रता है। वह सब कुछ है, जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ है। नारी कामधेनु है, वह अन्नपूर्णा है, रिद्धि है, सिद्धि है। वह समस्त अभावों और संकटों का निवारण करती है। यदि नारी को श्रद्धा की भावना अर्पित की जाए, तो वह विश्व के कण–कण को स्वर्गीय भावनाओं से ओत–प्रोत कर सकती है।

नारी एक सनातन शक्ति है। वह आदिकाल से उन सामाजिक दायित्वों को अपने कंधों पर उठाए आ रही है, जिन्हें केवल पुरुषों के कंधों पर डाल दिया जाता तो वह कब का लड़खड़ा गया होता। परिवार के सर्वांगीण विकास के साथ राष्ट्र की समृद्धि में भी नारी का महत्वपूर्ण योगदान है। नारी अपने व्यवहार एवं संस्कारों से समाज को नई दिशा प्रदान करती है। भारतीय नारी का गौरव विशाल है। ┐

27

सफल पुरुष के पीछे नारी

–मोनिका लाकड़ा, 9वीं
महाराजा अग्रसेन विद्यापीठ
दिल्ली

व्यक्ति के व्यक्तित्व के गठन पर उसके गृहिणीपन का प्रभाव पड़ता है। निश्चय ही उस व्यक्ति का सामाजिक और सार्वजनिक जीवन असंतुलित और असंतुष्ट ही होगा, जिसका पारिवारिक जीवन संतुष्ट नहीं रहता। पति–पत्नी के संबंध के ऊपर ही व्यक्ति की क्षमता भी निर्भर रहती है।

नारी सृष्टि निर्माता की अद्वितीय रचना है। नारी के अभाव में सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह एक ऐसा छायादार वृक्ष है, जिसकी छाया तले पुरुष अपनी समस्त व्यथा को भूल जाता है। नारी कोमलता, पवित्रता, मधुरता आदि दिव्य गुणों की प्रतिमूर्ति होती है। वह अपना सर्वस्व पुरुष के चरणों में न्यौछावर कर देती है। यह कहा जाता है *'हर सफल पुरुष के पीछे नारी का हाथ होता है*। बड़े–बड़े साहित्यकारों ने यह प्रमाणित भी कर दिया है। विचारणीय विषय तो यह है कि जिस नारी की प्रेरणा मात्र से सामान्य पुरुष प्रसिद्धी प्राप्त करने में सफल हो गए तो क्या वह नारी स्वयं क्षमताओं और शक्तियों में कम होगी, कदापि नहीं।

आधुनिक युग में नारी ने अपनी महत्ता को पहचाना है। उसने दासता के बंधनों को तोड़ दिया और स्वतंत्रता की सांस ली। आधुनिक नारी ने शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सुंदर परिचय दिया है। आजकल किशोरों की अपेक्षा किशोरियां शिक्षा के क्षेत्र में कहीं आगे हैं। आधुनिक नारी ने राजनीति के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। आज महिलाएं समुद्र की गहराई और आकाश की ऊंचाई नाप रही हैं। महिलाएं केवल हेलिकॉप्टर और मालवाहक जहाज चला कर खुश नहीं हैं, वे पनडुब्बी भी चलाना चाहती हैं। अब तक केवल पुरुषों का क्षेत्र समझे जाने वाले शेयर बाजार में भी वह मौजूद हैं और पत्रकारिता में भी। आज की नारी नौकरी के द्वारा धन का अर्जन करती है। इस प्रकार वह आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुष को सहयोग देती है। आधुनिक नारी प्राचीन अंधविश्वासों की बेड़ियों से मुक्त हो गई है। वह भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को अधिक महत्व देने लगी है।

समाज में रहती हुई नारी अनेक प्रकार की भूमिकाएं निभाती है। मां, बहन, पुत्री, भाभी आदि के रूप में एक परिवार में उसकी महत्ता सहज ही स्पष्ट है। व्यक्ति घर से संतुष्ट रहे बिना बाहर कुछ भी नहीं कर सकता। परिवार के पुरुषों के साथ नारी विभिन्न रूपों में संयुक्त होकर एक सुखी परिवार का निर्माण करती है। परिवार के बच्चों का भविष्य परिवार की नारियों पर ही निर्भर करता है। किसी समाज में कितने अच्छे और स्वस्थ बच्चे हैं, इसका सीधा संबंध उस समाज की नारियों के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है।

बच्चों की आरम्भिक शिक्षा मां की गोद में ही होती है। उसके भविष्य के बीज मां की गोद में ही प्रायः पड़ जाया करते हैं। बड़ा होने पर भी बच्चा मां के व्यक्तित्व से सर्वत्र प्रभावित होता है। स्पष्ट है कि स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए स्वस्थ एवं सुयोग्य बच्चों के निर्माण का कार्य नारी ही पूरा करती है। पत्नी के रूप में भी नारी का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं। व्यक्ति के व्यक्तित्व के गठन पर उसके गृहिणीपन का प्रभाव पड़ता है। निश्चय ही उस व्यक्ति का सामाजिक और सार्वजनिक जीवन असंतुलित और असंतुष्ट ही होगा, जिसका पारिवारिक जीवन संतुष्ट नहीं रहता। पति–पत्नी के संबंध के ऊपर ही व्यक्ति की क्षमता भी निर्भर रहती है।

नारी यदि पुरुष या अपने पति का हाथ न बंटाए तो पुरुष कभी भी निश्चिंतता और दक्षता की सांस नहीं ले सकता। घर के बाहर काम करने की क्षमता घर के भीतर की परिस्थितियों से ही निर्मित होती है। इस दृष्टि से नारी का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। अकेला नर शक्ति, पौरुष होते हुए भी नारी के बिना असहाय और बेबस है। उसके अकेले जीवन का कोई महत्व नहीं। नारी जननी है, इसलिए सृष्टि का निर्माण करने वाली है। पुरुष को पुत्र प्रदान कर उसको पितृऋण से मुक्त कराती है तथा पुत्री देकर संसार के अस्तित्व को स्थिरता प्रदान करती है। इस रूप में वह पूज्या है।

सृष्टि के आरंभ से ही यदि हम देखें तो मनु और इडा, आदम तथा ईव और इब्बा के मिलन से ही मानव संस्कृति का विकास हुआ है। विधाता ने इनकी सृजना इसी उद्देश्य से की थी। मानव–जाति के पालन–पोषण और विकास करने में पुरुष से अधिक स्त्री का योगदान होता है। नर का योगदान तो शिशु के गर्भाधान तक ही होता है। उसके पश्चात् सारा दुख–दर्द नारी स्वयं अकेले ही झेलती है। वह शिशु के भरण–पोषण का भार वहन करती है। वह स्वयं अनेक कष्टों को झेलती हुई शिशु को पूर्णत्व प्रदान करती है।

स्वस्थ समाज में नारी की भूमिका विविधमुखी है। नारी समाज के आधे अंग का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी कार्य क्षमता समाज के लिए जितनी उपादेय है, उतना ही महत्वपूर्ण नारी का व्यक्तित्व भी है। प्राकृतिक विधान के अनुसार नारी की कुछ खास विशेषताएं हैं जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। नारी ने अब अपनी महत्ता को पहचाना है तथा सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। केवल भारत की राजनीति में ही नहीं, बल्कि विश्व की राजनीति में उसका महत्वपूर्ण स्थान था। महिलाएं नित नए क्षेत्रों में कदम रख रही हैं। आज संवैधानिक रूप से देश के सबसे बड़े पद पर भी स्वयं एक महिला विराजमान है।

अतः हम कह सकते हैं कि नारी के अभाव में मनुष्य का सामाजिक जीवन बेकार है। मातृत्व की गरिमा से मंडित, पत्नी के सौभाग्य से ऐश्वर्यशालिनी, धार्मिक अनुष्ठानों की सहधर्मिणी, गृह की व्यवस्थापिका तथा गृहलक्ष्मी, पुरुष की सहयोगिनी, शिशु की प्रथम शिक्षिका तथा अनेक गुणों से गौरवान्वित नारी के महत्व को आदिकाल से स्वीकारा गया है। इसलिए मनु ने कहा –'*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता*'। जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता वास करते हैं। आधुनिक नारी नौकरी करते हुए भी आदर्श माता, आदर्श पत्नी तथा गृह–स्वामिनी के कर्तव्यों को भली–भांति वहन करने के लिए तत्पर है। ┐

28

मांगलिक अवसरों पर नारी की उपस्थिति शुभ

–अश्विनी पूनिया, 9वीं बी
श्री लाड मनोहर बाल निकेतन मा. विद्यालय
लाडनूं, नागौर (राजस्थान)

नारी नौकरी और व्यवसाय के साथ–साथ घर का सारा काम–काज भी करती है। यह सब काम करना अगर नारी रोक दे तो कितनी असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा। इस प्रकार पुरुष का जीवन नारियों के सहयोग पर ही निर्भर है। नारियों से ही समाज तथा परिवार सुखी रह सकता है। अतः नारी का परिवार में बहुत महत्व है।

सृष्टि के आदि काल से नर–नारी का पारस्परिक संबंध है। नारी को सृष्टि का केन्द्र भी माना जाता है, क्योंकि नारी के द्वारा ही सृष्टि का क्रम चलता है। वह पुरुष की प्रेरणा है। भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में नारी को सदैव सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ है। यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों एवं सामाजिक मांगलिक अवसरों पर नारी की उपस्थिति अनिवार्य घोषित की गई है। मानव जाति के विकास में नारी का पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक महत्व है।

नारी प्रेम, दया, त्याग व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है और ये आदर्श मानव जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी का हर रूप वंदनीय है चाहे वह मां का हो, बहन का हो या पत्नी का, नारी की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। किसी देश की अवनति अथवा उन्नति वहां के नारी समाज पर अवलंबित होती है। जिस देश की नारी जागृत, शिक्षित होती है वही देश संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है। परिवार में लड़की का जन्म होना तो 'लक्ष्मी या देवी' का आगमन माना जाता है। हिन्दू समाज में तो कन्या को देवी की तरह पूजा जाता है तथा मांगलिक अवसरों पर उसकी उपस्थिति शुभ मानी जाती है।

नारी के तीन रूप माने जाते हैं –कन्या, माता एवं बहन। इसमें कन्या अर्थात् लड़की का विशेष महत्व है। क्योंकि लड़की ही किसी की बहन होती है और वही आगे चलकर गृहिणी एवं माता बनती है। माता के रूप में बच्चे को अच्छे संस्कार देती है, पति का पूरा सहयोग करती है। बहन के रूप में प्यार, स्नेह, सहयोग देती है तथा माता–पिता एवं पति के कुल को गौरवान्वित करती है। ईश्वर की दृष्टि में नारी का विशेष महत्व है। उसके बिना यह मानव सृष्टि अपूर्ण मानी जाती है। नारी के प्रयास से ही घर–परिवार रूपी गाड़ी गतिशील एवं सुख समृद्धिमय बनती है।

आजकल लड़कियां डॉक्टर, इंजीनियर, व्यवसायी, अधिकारी आदि जैसी योग्यता प्राप्त कर लड़कों के समान प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। नारी कन्या, पत्नी, माता आदि सभी रूपों में पुरुष वर्ग का उपकार करती है। उसका समग्र जीवन पुरुष के लिए समर्पित रहता है। नारी अपने घर–परिवार का सही ढंग से संचालन करती है तथा अपनी संतान को अच्छे संस्कार देती है। वर्तमान अर्थप्रधान युग में नारी पति को पूरा सहयोग, समर्थन देती है। नारी अपने पैरों पर खड़े होकर आपदाओं का निवारण करती है। वह सिलाई–बुनाई आदि से लेकर उद्योग–व्यवसाय तक संभाल सकती है और पुरुष की सच्ची अर्द्धांगिनी बनकर परिवार में आनंद एवं सुख–सम्पन्नता का संचार करने में सक्षम रहती है।

भारतीय समाज में नारी का स्वरूप सम्माननीय रहा है, उसकी प्रतिष्ठा अर्द्धांगिनी के रूप में की गई है। प्राचीन काल में नारी को सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा का रूप माना जाता था। सरस्वती विद्या की, लक्ष्मी धन की तथा दुर्गा को शक्ति की देवी माना गया था। सफल जीवन के लिए विद्या, धन और शक्ति ही महत्वपूर्ण साधन हैं। ये तीनों साधन नारी रूपी देवी की आराधना से ही प्राप्त हो सकते हैं। अतः प्राचीन भारत में सर्वत्र नारी का देवी रूप पूज्य था। यज्ञ आदि अवसरों पर पुरुष के साथ नारी की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। भारतीय समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है।

नारी अपने बच्चे को अच्छे संस्कार देती है। बड़ों का आदर करना, अतिथियों का सत्कार करना, सभी के साथ परिवार में मिलजुल कर रहना, छोटे–छोटे कामों में बड़ों की सहायता करना, पड़ोसियों से अच्छे संबंध बनाए रखना, पढ़ाई करना, अनुशासित रहना, कमजोर सहपाठियों की सहायता करना आदि शिक्षाएं देती है।

नारी का परिवार और पड़ोस के अलावा समाज और राष्ट्र की उन्नति में भी बहुत महत्व है। कुछ नारियां नौकरी करती हैं तो कुछ व्यापार तथा अपने परिवार का पालन–पोषण करती हैं। कुछ नारियां पुलिस, प्रशासन, न्याय आदि से जुड़कर समाज में शांति एवं व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी निभाती हैं। कभी–कभी कुछ लोगों को यह भ्रम हो जाता है कि वे आत्मनिर्भर हैं और

नारी घर का सारा काम–काज, चूल्हा–चौका, कपड़े धोना आदि काम करती है। परिवार में संतुलन बनाए रखना, घर का ध्यान रखना, सहयोग–समन्वय, सुख–दुख में साथ होती है। हर पुरुष की सफलता के पीछे नारी का हाथ अवश्य होता है। पुरुषों का नारियों के बिना काम नहीं चलता। अकेला पुरुष कुछ नहीं कर सकता। नारी नौकरी और व्यवसाय के साथ–साथ घर का सारा काम–काज भी करती है। यह सब काम करना अगर नारी रोक दे तो कितनी असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा। इस प्रकार पुरुष का जीवन नारियों के सहयोग पर ही निर्भर है। नारियों से ही समाज तथा परिवार सुखी रह सकता है। अतः नारी का परिवार में बहुत महत्व है। ┐

29

संस्कृति की अमूल्य निधि नारी

–गौरव मित्तल, 9वीं ए
विश्व भारती पब्लिक स्कूल
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)

आदर्श नारी से घर का ही उद्धार और कल्याण नहीं होता है, वह समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है। देश के नागरिकों का सभ्य होना, सुशिक्षित होना, अनुशासनप्रिय होना सब आदर्श नारी पर आधारित है।

नारी के बिना परिवार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वह अपने बुद्धि बल, चरित्र बल और अपने त्यागमय जीवन से परिवार को हर मुसीबत से बचाती है। माता की तरह रक्षा करती है और मित्र और गुरु के समान शुभ कार्यों के लिए प्रेरित करती है। परिवार की सुख–शांति, आनंद और उत्थान उसके सबल कंधों पर आधारित हैं। यदि नारी चाहे तो घर को स्वर्ग या नरक बना सकती है। नारी का त्याग–बलिदान भारतीय संस्कृति की मूल्य निधि है। आदर्श नारी से घर का ही उद्धार और कल्याण नहीं होता है। वह समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है। देश के नागरिकों का सभ्य होना, सुशिक्षित होना, अनुशासनप्रिय होना, सब आदर्श नारी पर आधारित हैं। बच्चे के लिए शिक्षा, सभ्यता, अनुशासन, शिष्टता आदि सभी विषयों की प्राथमिक पाठशाला परिवार ही है जिसकी प्रधानाचार्या माता ही है। वह जैसा चाहे बालक को बना सकती है।

भारत में जितने भी महापुरुष हुए हैं, इतिहास साक्षी है कि उनके जीवन पर उनकी माताओं के उज्ज्वल चरित्र की स्पष्ट छाप अंकित है। छत्रपति शिवाजी की माता जीजाबाई ने जो संस्कार उन्हें दिए, वही जीवन के अंतिम क्षणों तक उनके साथ रहे। सत्यभाषिणी पुतलीबाई के संस्कार ज्यों के त्यों उनके पुत्र मोहन दास में दृष्टिगोचर हुए। आज भी उन्हें सत्य और अहिंसा के पुजारी के रूप में जाना जाता है। समाज और देश के उत्थान और भावी समृद्धि के लिए एक नारी जितना उपकार कर सकती है, उतना कोई दूसरा नहीं कर सकता।

आज समय बदल गया है। परिवार की आवश्यकताएं बढ़ गई हैं। परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नारी की भी कुछ आवश्यकताएं है। नारी को शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा से मनुष्य की बुद्धि का परिमार्जन होता है। उसे कर्त्तव्यों का ज्ञान होता है। गुण और अवगुणों की पहचान होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि गृहलक्ष्मी सुशिक्षित हो। एक सुशिक्षित नारी ही अपने परिवार का सर्वांगीण विकास कर सकती है। अपने बच्चों को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर सकती है।

परिवार के विकास के लिए शिक्षा के साथ–साथ नारी में अन्य गुणों का भी होना आवश्यक है। उसे घरेलू काम–काजों में भी दक्ष होना चाहिए। उसे स्वच्छता और प्राथमिक चिकित्सा का भी ज्ञान होना चाहिए। भारतीय नारी सदैव अपने परिवार के दुख में दुखी और सुख में सुखी रहती है। उसकी एक महान् विशेषता सहनशीलता है। यदि घर में नारी सहनशील है और मधुरभाषिणी है तो परिवार में सुख–शांति रहती है और जिस परिवार में सुख–शांति रहती है उसी परिवार का विकास होता है। उसी परिवार के बच्चे अच्छे संस्कारी होते हैं।

आदर्श नारी का चरित्र गंगा जल के समान पवित्र होना चाहिए। जिस स्त्री के चरित्र में छल–कपट हो वह कभी अपने परिवार का विकास नहीं कर सकती। नारी के चरित्र में द्वेष, छल–कपट, मिथ्या–भाषण और दुर्व्यवहार जैसे अवगुण उसके परिवार का सर्वनाश कर डालते हैं। अपने आदर्श–चरित्र बल से ही नारी परिवार को भी चरित्रवान बनाती है। इस संदर्भ में नेपोलियन ने कहा : *'तुम मुझे अच्छी मां दो, मैं तुम्हें अच्छा राष्ट्र दूंगा'*।

स्वतंत्र भारत में आज नारी का एक और भी कर्त्तव्य है कि वह समाज की कुरीतियों का बहिष्कार करे। आज नारी में नवचेतना है, नवजागृति है। वह अपने अधिकारों के प्रजित जागरूक है। वह हर क्षेत्र में उन्नति कर रही है। लेकिन वह पाश्चात्य सभ्यता के रंग में भी रंगती जा रही है। इस कारण परिवार टूटने के कगार पर हैं और बच्चे गलत रास्ते पर जा रहे हैं। नई पीढ़ी रास्ता भटक रही है।

आज नारियों को इस बात का अहसास कराने की आवश्यकता है कि अपनी उन्नति के साथ–साथ अपने परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्यों को न भूलें। एक समझदार, सुशिक्षित नारी ही परिवार के विकास का आधार है। जब वह अपने परिवार के सुख को अपना सुख समझेगी तभी भावी पीढ़ी को उन्नति की राह पर चला सकती है और परिवार में सुख–समृद्धि ला सकती है। ┐

29

संस्कृति की अमूल्य निधि नारी

–गौरव मित्तल, 9वीं ए
विश्व भारती पब्लिक स्कूल
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)

आदर्श नारी से घर का ही उद्धार और कल्याण नहीं होता है, वह समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है। देश के नागरिकों का सभ्य होना, सुशिक्षित होना, अनुशासनप्रिय होना सब आदर्श नारी पर आधारित है।

नारी के बिना परिवार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वह अपने बुद्धि बल, चरित्र बल और अपने त्यागमय जीवन से परिवार को हर मुसीबत से बचाती है। माता की तरह रक्षा करती है और मित्र और गुरु के समान शुभ कार्यों के लिए प्रेरित करती है। परिवार की सुख–शांति, आनंद और उत्थान उसके सबल कंधों पर आधारित हैं। यदि नारी चाहे तो घर को स्वर्ग या नरक बना सकती है। नारी का त्याग–बलिदान भारतीय संस्कृति की मूल्य निधि है। आदर्श नारी से घर का ही उद्धार और कल्याण नहीं होता है। वह समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है। देश के नागरिकों का सभ्य होना, सुशिक्षित होना, अनुशासनप्रिय होना, सब आदर्श नारी पर आधारित हैं। बच्चे के लिए शिक्षा, सभ्यता, अनुशासन, शिष्टता आदि सभी विषयों की प्राथमिक पाठशाला परिवार ही है जिसकी प्रधानाचार्या माता ही है। वह जैसा चाहे बालक को बना सकती है।

भारत में जितने भी महापुरुष हुए हैं, इतिहास साक्षी है कि उनके जीवन पर उनकी माताओं के उज्ज्वल चरित्र की स्पष्ट छाप अंकित है। छत्रपति शिवाजी की माता जीजाबाई ने जो संस्कार उन्हें दिए, वही जीवन के अंतिम क्षणों तक उनके साथ रहे। सत्यभाषिणी पुतलीबाई के संस्कार ज्यों के त्यों उनके पुत्र मोहन दास में दृष्टिगोचर हुए। आज भी उन्हें सत्य और अहिंसा के पुजारी के रूप में जाना जाता है। समाज और देश के उत्थान और भावी समृद्धि के लिए एक नारी जितना उपकार कर सकती है, उतना कोई दूसरा नहीं कर सकता।

आज समय बदल गया है। परिवार की आवश्यकताएं बढ़ गई हैं। परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नारी की भी कुछ आवश्यकताएं है। नारी को शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा से मनुष्य की बुद्धि का परिमार्जन होता है। उसे कर्त्तव्यों का ज्ञान होता है। गुण और अवगुणों की पहचान होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि गृहलक्ष्मी सुशिक्षित हो। एक सुशिक्षित नारी ही अपने परिवार का सर्वांगीण विकास कर सकती है। अपने बच्चों को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर सकती है।

परिवार के विकास के लिए शिक्षा के साथ–साथ नारी में अन्य गुणों का भी होना आवश्यक है। उसे घरेलू काम–काजों में भी दक्ष होना चाहिए। उसे स्वच्छता और प्राथमिक चिकित्सा का भी ज्ञान होना चाहिए। भारतीय नारी सदैव अपने परिवार के दुख में दुखी और सुख में सुखी रहती है। उसकी एक महान् विशेषता सहनशीलता है। यदि घर में नारी सहनशील है और मधुरभाषिणी है तो परिवार में सुख–शांति रहती है और जिस परिवार में सुख–शांति रहती है उसी परिवार का विकास होता है। उसी परिवार के बच्चे अच्छे संस्कारी होते हैं।

आदर्श नारी का चरित्र गंगा जल के समान पवित्र होना चाहिए। जिस स्त्री के चरित्र में छल–कपट हो वह कभी अपने परिवार का विकास नहीं कर सकती। नारी के चरित्र में द्वेष, छल–कपट, मिथ्या–भाषण और दुर्व्यवहार जैसे अवगुण उसके परिवार का सर्वनाश कर डालते हैं। अपने आदर्श–चरित्र बल से ही नारी परिवार को भी चरित्रवान बनाती है। इस संदर्भ में नेपोलियन ने कहा : *'तुम मुझे अच्छी मां दो, मैं तुम्हें अच्छा राष्ट्र दूंगा'*।

स्वतंत्र भारत में आज नारी का एक और भी कर्त्तव्य है कि वह समाज की कुरीतियों का बहिष्कार करे। आज नारी में नवचेतना है, नवजागृति है। वह अपने अधिकारों के प्रजित जागरूक है। वह हर क्षेत्र में उन्नति कर रही है। लेकिन वह पाश्चात्य सभ्यता के रंग में भी रंगती जा रही है। इस कारण परिवार टूटने के कगार पर हैं और बच्चे गलत रास्ते पर जा रहे हैं। नई पीढ़ी रास्ता भटक रही है।

आज नारियों को इस बात का अहसास कराने की आवश्यकता है कि अपनी उन्नति के साथ–साथ अपने परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्यों को न भूलें। एक समझदार, सुशिक्षित नारी ही परिवार के विकास का आधार है। जब वह अपने परिवार के सुख को अपना सुख समझेगी तभी भावी पीढ़ी को उन्नति की राह पर चला सकती है और परिवार में सुख–समृद्धि ला सकती है। ┐

30

नारी स्वस्थ परिवार का आधार

–मोहित, 9वीं ए
अनुपम सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल
गोविन्द नगर, सिरसा (हरियाणा)

पहले लोग मानते थे कि नारी का पढ़ा–लिखा होना कोई जरूरी नहीं है। उसे घर चलाने में कुशल होना चाहिए। परंतु आजकल सभी ये बात मानते हैं कि परिवार में नारी का पढ़ा–लिखा होना सबसे अधिक आवश्यक है। यदि मां पढ़ी–लिखी हो तो वह बच्चों को शिक्षित करने में बड़ा योगदान देती है। अनपढ़ नारी भी अपने परिवार को शिक्षित करने में रुचि रखती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के बिना रहने में उसे कठिनाई होगी। एक यूनानी विद्वान का मत है कि यदि कोई मनुष्य अकेला रहता है, फिर तो वह पागल है या फिर पहुंचा हुआ महात्मा। कहने का भाव यह है कि हम सभी समाज के बिना जीवित नहीं रह सकते और समाज की सबसे अधिक महत्वपूर्ण इकाई है परिवार। यदि परिवारों का सर्वांगीण विकास हो जाता है तो समाज के सर्वांगीण विकास अपने आप ही हो जाता है। यदि समाज का सर्वांगीण विकास हो जाता है तो देश का सर्वांगीण विकास स्वयं ही हो जाता है।

विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सबसे अधिक समाज के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाना चाहिए। यह काम कर सकती है केवल नारी। नारी से हमारा तात्पर्य गृहस्वामिनी से है। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक महान् व्यक्ति के पीछे एक नारी का ही हाथ है। ऐसे ही किसी परिवार को महान् बनाने के पीछे भी नारी का ही हाथ होता है। यदि गृहिणी कुशल होती है तो वह परिवार समाज में अपना एक विशेष स्थान बना लेता है और उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है अर्थात् उसका सर्वांगीण विकास हो जाता है।

परिवार के सर्वांगीण विकास से हमारा तात्पर्य यह है कि परिवार आर्थिक, सामाजिक, नैतिक शिक्षा तथा स्वास्थ्य आदि से कितना विकसित होता है। ऊपर लिखित सभी विकासों का कोई अंत तो नहीं है। यह तो गृहिणी की कुशलता पर निर्भर करता है कि वह अपने परिवार को किस ऊंचाई पर ले जाती है। हम किसी परिवार के विकास के इन पहलुओं पर अलग–अलग विचार करेंगे और देखेंगे कि नारी का उनमें कितना योगदान है।

किसी भी परिवार का आर्थिक पहलू अधिकतर गृहिणी पर ही निर्भर करता है। पहले तो केवल पुरुष ही कमाता था, अब तो नारी भी कमाने लग गई है। नारी चाहे न भी कमाए फिर भी परिवार के आर्थिक पहलू के विकास में नारी का ही सबसे अधिक योगदान है। पुरुष केवल कमा सकता है। उसमें धन को मितव्ययता से खर्च करने की क्षमता नहीं होती है। यह तो केवल नारी ही कर सकती है। किसी प्रकार की आर्थिक स्थिति केवल कमाई पर ही निर्भर नहीं करती है। यह तो इस बात पर निर्भर करती है कि कमाई को किस प्रकार खर्च किया जा रहा है।

बूंद–बूंद जोड़ने से घड़ा भर जाता है और असावधानी से खर्च करने से भरा घड़ा भी खाली जो जाता है। बहुत से ऐसे परिवार देखे हैं जिनकी कमाई के साधन बहुत कम है परंतु वे आर्थिक दृष्टि से बहुत खुशहाल हैं क्योंकि उस परिपार की नारी एक–एक पैसे को बड़े ध्यान से खर्च करती है। वह उसी कमाई में थोड़ा–थोड़ा बचाकर महल खड़े कर लेती है। हम कहेंगे कि परिवार के आर्थिक विकास का आधार घर की नारी ही है।

समाज से बाहर रहने वाला व्यक्ति असामाजिक बन जाता है। परिवार में रहकर रिश्तेदारी से मेल–जोल, पड़ोसियों से हमारे संबंध, गली–मौहल्ले में हमारा लेन–देन, सामाजिक समारोह में अर्थात् विवाह–शादियों में, दाह संस्कार के समय, जन्म दिन उत्सव, अतिथि सत्कार आदि सारे सामाजिक कार्य हैं। केवल नारी ही इन सामाजिक कार्यों को भली प्रकार निभाती है। पुरुष इनमें कम रुचि लेता है। किसी सामाजिक अवसर पर क्या लेन–देन करना है, यह गृहस्वामिनी का ही कार्य है। यदि गृहस्वामिनी कुशल है तो परिवार का सामाजिक विकास बड़ा उच्च–कोटि का होता है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि परिवार के सामाजिक विकास का आधार भी नारी ही है।

परिवार के नैतिक विकास का सबसे अधिक महत्व होता है। यदि कोई परिवार नैतिक दृष्टि से उन्नत हो जाता है तो उसकी समस्याएं बड़ी आसानी से हल हो जाती है। बच्चों की विवाह–शादियां, पैसों का लेन–देन, घर के सदस्यों का सम्मान ये सब परिवार की नैतिकता पर निर्भर करता है। जब कोई विवाह–शादी करनी होती है तो केवल यही देखा जाता है कि लड़का या लड़की किस प्रकार का है। यदि वह अच्छे परिवार का है तो गरीब होने पर भी यह कार्य संपन्न होता है। यदि कोई परिवार बड़ा अमीर है, परंतु नैतिकता की दृष्टि से गिरा हुआ है तो ऐसे परिवार से न तो रिश्तेदारी करता है और न ही लेनदेन करता है।

पहले लोग मानते थे कि नारी का पढ़ा–लिखा होना कोई जरूरी नहीं है। उसे घर चलाने में कुशल होना चाहिए। परंतु आजकल सभी ये बात मानते हैं कि परिवार में नारी का पढ़ा–लिखा होना सबसे अधिक आवश्यक है। यदि मां पढ़ी–लिखी हो तो वह बच्चों को शिक्षित करने में बड़ा योगदान देती है। अनपढ़ नारी भी अपने परिवार को शिक्षित करने में रुचि रखती है। वह आर्थिक तंगी में भी अपने बच्चों को पढ़ाने का प्रयत्न करती है। इससे यह ज्ञात होता है कि परिवार को शिक्षित करने में भी नारी का महत्वपूर्ण योगदान है।

यदि मां–बाप स्वस्थ हैं, विशेषकर मां स्वस्थ है तो बच्चे स्वस्थ ही पैदा होते हैं। परिवार में बच्चों का स्वास्थ्य मां पर ही निर्भर करता है। क्योंकि मां बच्चों को ठीक समय पर उठाती है। उनको नहलाने में योगदान देती है। सादा और स्वास्थ्यवर्धक भोजन देती है। उन्हें साफ–सुथरे कपड़े पहनने के लिए देती है। उनकी बुरी आदतों को कठोरता से समाप्त कर देती है। परिवार के सर्वांगीण विकास में नारी के स्थान के बारे में हर पहलू से विचार करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार केवल नारी ही है और कोई नहीं हो सकता। ┐

31

स्वतंत्र जहां नारी, विकास रहे जारी

–विकास कुमार, 12वीं ए
राजकीय व. मा. बाल विद्यालय
क्यू ब्लॉक, मंगोलपुरी, दिल्ली

जिस परिवार में नारी को मुक्त नहीं रखा जाता, उस परिवार का विकास नहीं हो सकता क्योंकि युगों–युगों से नारी अपना सहयोग परिवार को प्रदान करती रही है और समय–समय पर सही राह दिखाती रही है। भारत में नारी को विशेष महत्व दिया जाता है जिससे वह भी स्वयं के साथ राष्ट्र की उन्नति में सहभागी बने।

भारत की सभ्यता और संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। हमारे देश में पहले नारी को समाज में बहुत उच्च स्थान प्राप्त था, जिससे वह अपने परिवार का विकास अधिक से अधिक करती थी। किसी ने कहा है। जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं और जहां नारी की पूजा नहीं होती, वहां किसी भी फल की प्राप्ति नहीं होती। वैदिक काल में स्त्रियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार था, जिससे वह अपना और अपने परिवार का विकास कर सके। इससे नारी अपने पति के कार्यों में बराबर हिस्सा लेती थी और इसी कारण परिवार का विकास अधिक होता था।

यदि नारी शिक्षित हो तो वह घर में ही अपने परिवार वालों को शिक्षा दे सकती है। माता–पिता का उत्तरदायित्व है कि वह अपनी संतान को शिक्षा दिलाएं, जिससे वे सही विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। परिवार के विकास में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज और देश के विकास में बराबर भाग लेती हुई नारी अपना भी विकास करती है। किसी कवि ने कहा है –

कर पदाघात अब मिथ्या के मस्तक पर
सत्यान्वेषण के पथ पर निकलो नारी।
तुम बहुत दिनों तक बनी दीप कुटिया का
अब बनो क्रांति की ज्वाला की चिंगारी।

भारत की नारी ने उस चुनौती को स्वीकार कर अपने कार्य–क्षेत्र को बदलना प्रारंभ कर दिया। नारी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उपस्थित दिखाई देने लगी तथा उसका प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होने लगा है। जब नारी पूरे देश का विकास कर सकती है तो एक परिवार का सर्वांगीण विकास क्यों नहीं कर सकती ? परिवार के सर्वांगीण विकास में नारी की महत्पपूर्ण भूमिका रही है।

परिवार में नारी के बिना विकास नहीं हो सकता। जब तक परिवार में नारी का योगदान रहता है, तब तक परिवार का विकास चलता रहता है। जिस परिवार में नारी को मुक्त नहीं रखा जाता, उस परिवार का विकास नहीं हो सकता क्योंकि युगों–युगों से नारी अपना सहयोग परिवार को प्रदान करती रही है और समय–समय पर सही राह दिखाती रही है। भारत में नारी को विशेष महत्व दिया जाता है जिससे वह भी स्वयं के साथ राष्ट्र की उन्नति में सहभागी बने।

नारी द्वारा परिवार का सर्वांगीण विकास बड़ा ही जरूरी है। नारी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकती है तथा उनमें अच्छी आदतें तथा अच्छे संस्कार उत्पन्न कर सकती है। साथ ही साथ अपने पति को भी सहायता पहुंचा सकती है। जहां नारी अपना योगदान प्रदान करती है, वह परिवार तथा समाज विकासशील रहता है और उस राष्ट्र का विकास तीव्र गति से होता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में नारी का बहुत बड़ा योगदान होता है और मुख्य रूप से परिवार के सर्वांगीण विकास में। इसलिए कहा गया है –

जब नारी की इज्जत हो चारों ओर,

तब मानव, समाज और राष्ट्र बढ़े विकास की ओर।

32

नारी सुखमय जीवन की प्रतीक

–मो. सलीम, 12वीं
रघुनाथ विद्यालय
रतनगढ़, चूरू (राजस्थान)

बालक बचपन से ही जिससे सर्वाधिक प्रभावित होता है, वह है मां और मां अपने बालक की गुरु मानी जाती है। नारी मां के रूप में श्रेष्ठ गुरु, पत्नी के रूप में आदर्श गृहिणी, बहन के रूप में स्नेही मित्र और मार्गदर्शिका होती है।

सृष्टि के आदिकाल से ही नर–नारी का अटूट संबंध रहा है। नारी को सृष्टि का केन्द्र भी माना जाता है, क्योंकि नारी के द्वारा ही संतानोत्पत्ति का क्रम चलता है। वही पुरुष की प्रेरणा है। मानव जाति के विकास में नारी का स्थान पुरुष से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। भारतीय संस्कृति की आदर्श परम्परा में नारी को सदैव सम्मानित स्थान प्राप्त है।

परिवार के सर्वांगीण विकास में नारी की अहम् भूमिका पाई जाती है। नारी की शुरुआत एक बेटी के रूप होती है। एक बेटी के रूप में वह परिवार के विकास में सहयोग करती है। एक बेटी अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह पूर्ण जिम्मेदारी के साथ करती है। वह एक भली बेटी बनने का पूर्ण प्रयास करती है।

फिर वह अपने पिता के घर से अन्यत्र, दूसरे घर चली जाती है, जहां वह किसी की पत्नी होती है। वहां उसके लिए अपरिचित सा माहौल होता है, लेकिन वह अपने दया, त्याग आदि गुणों के कारण वहां भी घुलमिल जाती है। वह अपने पति के साथ भी समन्वय स्थापित कर लेती है।

एक पत्नी, पति का सहयोग करके जीवन रूपी नैया को आगे बढ़ाती है। वह पति के साथ समन्वय रखती है। यदि पत्नी, पति का सहयोग नहीं करेगी तो परिवार का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है। विलियम ब्लैक स्टोन ने लिखा है –'*मनुष्य समाज के लिए बना है। वह अकेले रहने में सक्षम नहीं है और न ही उसमें ऐसा करने का साहस है*'।

जब एक नारी भली पत्नी होगी तो वह घर–परिवार को बिना किसी परेशानी के आगे बढ़ा सकती है। इस प्रकार परिवार के सर्वांगीण विकास में नारी के पत्नी रूप को महत्व के साथ देखा जा सकता है। बेटी, पत्नी के बाद नारी एक मां के रूप में भी परिवार में विशेष योगदान देती है। विधाता की सृष्टि में मानव का विशेष महत्व है। उसमें भी नर के समान नारी का समानुपात नितांत वांछित है। नर और नारी दोनों के संसर्ग से भावी संतान का जन्म होना है तथा एक नारी पहले बेटी, बाद में पत्नी तथा फिर एक मां का रूप धारण कर लेती है।

एक बच्चे की प्रथम गुरु उसकी मां ही होती है। बच्चा सबसे पहले मां कहना ही सीखता है। मां ही अपने बच्चे को आदर्श संस्कार आदि सिखाती है। एक बालक अपनी मां से ही सब कुछ सीख पाता है। नारी परिवार की परिधि में कभी कन्या, कभी नववधू, कभी माता आदि रूपों में नियंत्रित रहती है। गृहिणी के रूप में वह अपने घर–परिवार का संचालन कुशलता से कर सकती है। वह अपनी संतान को वीरता, त्याग, उदारता, कर्मठता, सदाचार, अनुशासन आदि के ढांचे में आसानी से ढाल सकती है। वह अपनी संतान के लिए कुछ भी कर सकती है। बालक बचपन से ही जिससे सर्वाधिक प्रभावित होता है, वह है मां और मां अपने बालक की गुरु मानी जाती है। नारी मां के रूप में श्रेष्ठ गुरु, पत्नी के रूप में आदर्श गृहिणी, बहन के रूप में स्नेही मित्र और मार्गदर्शिका होती है।

एक नारी बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बना देती है और आपदाओं का सहजता से निवारण कर सकती है। आदर्श गृहिणी घर के प्रत्येक कार्य में कुशल होती है, वह अपव्यय से बचाती है, परिवार की प्रतिष्ठा का ध्यान रखती है। भोजन बनाने में कुशलता दिखाती है, सिलाई–बुनाई–कढ़ाई आदि कार्यों में दक्ष होती है वह स्वावलंबन अपनाना जानती है। शिशु परिचर्या से सुपरिचित रहती है, स्वच्छता–सजावट में रुचि रखती है, अंधविश्वासों व ढोंगों से मुक्त रहती है तथा हर प्रकार से और हर उपाय से अपनी गृहस्थी को सुखी–समृद्धशाली बनाने की चेष्टा करती है।

प्राचीन काल में नारी का सामाजिक जीवन में सीमित कार्य क्षेत्र था, परंतु मानव सभ्यता के साथ ही नारी की स्थिति अधिक व्यापक बनती गई। वर्तमान युग में नारी एक कुशल प्रशासनिक अधिकारी, मंत्री, शिक्षिका, डॉक्टर, व्यवसायी, वकील, नर्स, पुलिसकर्मी आदि रूपों में अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार कर रही है।

नारी ही सुखमय जीवन का प्रतीक है। नारी परिवार की व्यवस्था और सुचारू संचालन का भी दायित्व निभाती है। नारी ही परिवार की आय, परिस्थिति तथा घर के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता का ध्यान रखकर उचित व्यवस्था बनाए रखने में सक्षम हो सकती है। वह आवश्यकता पड़ने पर घर के लिए अपनी शिक्षा के बल पर अर्थोपार्जन करके परिवार को अर्थिक संबल भी प्रदान कर सकती है। ┐

33

प्रदर्शन–प्रवृत्ति से मानवीय गुणों में ह्रास

–रितु रानी, 12वीं डी
राज. व. मा. कन्या विद्यालय नं. 2
उत्तम नगर, नई दिल्ली

नर और नारी समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं। समाज के कुछ पुरातनपंथी स्त्री–शिक्षा के विरोधी हैं। वे आज भी स्त्री को 'पराया धन', 'अनुत्पादक' मानकर पुरुषों के समकक्ष नहीं होने देना चाहते। वे इस तथ्य को भूल जाते हैं कि स्त्रियां ही मां बनकर बच्चों को पालती हैं और उनमें अच्छे संस्कार डालती हैं तभी उनका सही विकास हो पाता है।

हमारे समाज की रचना का मूल आधार नर और नारी हैं। दोनों के पारस्परिक सहयोग और साहचर्य से ही परिवार और समाज परिपुष्ट होता है। कहा जाता है कि सभ्यता के प्रारंभ में लगभग सभी समाज मातृसत्तात्मक थे अर्थात् उनमें स्त्रियों की स्थिति महत्वपूर्ण होती थी। परंतु धीरे–धीरे स्त्री और पुरुष दोनों के मध्य कार्यों का विभाजन होता गया। भारतीय नारी आज अधिक आत्म–विश्वासी, अधिक स्वतंत्र और साहसी दिखाई देती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत हर लड़की का स्वप्न कुछ कर दिखाने का होता है।

आधुनिक नारी बच्चों की शिक्षा–दीक्षा के लिए सैकड़ों–हजारों रुपये व्यय करने के लिए तैयार है परंतु नौकरी के सहारे बड़े हो रहे बच्चे के लिए उसके पास समय का अभाव है। क्लबों, पार्टियों और होटलों की संस्कृति का विकास तेजी हो रहा है। माता–पिता के उचित संरक्षण का अभाव आगामी पीढ़ी को कुंठाग्रस्त बना देता है। प्रदर्शन की इस प्रवृत्ति ने नारी को सहज मानवीय गुणों से वंचित कर दिया है। परंतु भारत में अधिकांश नौकरी–पेशा महिलाएं वे हैं जो पारिवारिक समस्याओं के समाधान के लिए घर से बाहर निकलती हैं। नारी समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग है। वर्तमान समय में नारी को अधिक स्वतंत्रता देने तथा नारी सशक्तीकरण जैसे आंदोलन चल रहे हैं।

हमें इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव में अन्य किसी प्रकार की आजादी का कोई महत्व नहीं है। आधुनिक युग में नारी को जहां अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, वहीं वह अनेक समस्याओं से घिर गई है और उसकी जिम्मेदारियां भी बहुत हद तक बढ़ गई हैं। समाज में महत्वपूर्ण स्थान पा लेने के पश्चात् उसके उत्तरदायित्वों में वृद्धि हो गई है। वह आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है।

यदि हमें परिवार में आपने वाली समस्याओं के समाधान को ध्यान में रखना है तो कुछ विशेष कार्यक्षेत्र को नारी के लिए सुरक्षित करना होगा। शिक्षा, चिकित्सा, शिशु संरक्षण, कुटीर उद्योग में कार्य करने आदि से उसे घर के लिए भी पर्याप्त समय मिल सकेगा। अंशकालीन कार्य उसे धन भी दे सकेगा तथा सत्य का सामंजस्य बना सकेगा। नौकरी उसमें आत्मविश्वास का संचार करती है।

इन सभी समस्याओं के बावजूद हमें यह बात अपने दिल–दिमाग पर बैठानी होगी कि नारी के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए उसका आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का हल तो खोजा जा सकता है, फिर भी पुरुष वर्ग को अपनी मानसिकता बदलनी होगी और उसे नारी को आर्थिक दृष्टि से संपन्न बनाना होगा। इससे परिवार की संपन्नता में भी वृद्धि होगी।

शिक्षा के संदर्भ में एक प्रश्न सहसा उत्पन्न होता है कि जब आज की नारी शिक्षित है, स्वावलंबी है, साहसी और योग्य है तब भी वह इस दीन–हीन दशा का शिकार क्यों होती है ? क्यों नहीं वह इस अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध खड़ी होती है ? उत्तर स्पष्ट है, आधुनिकता के बावजूद हम और हमारा समाज अभी तक मध्यकालीन संस्कारों का दास है। हमें इन संस्कारों को तोड़ना होगा ताकि भारतीय नारी वास्तव में आधुनिक बन सके।

ऐसा नहीं है कि भारतीय नारियां सदा से ही अशिक्षित रही हैं। प्राचीन काल में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा दी जाती थी। गार्गी, लीलावती आदि विदूषियों ने अपने ज्ञान से समाज को प्रभावित किया था। दुर्भाग्य से भारतवर्ष को शाताब्दियों तक आक्रमणकारियों के युद्ध झेलने पड़े। भारतीय नारी को अपनी लाज बचाने के लिए घर की दहलीज़ तक सीमित रहना पड़ा।

नर और नारी समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं। समाज के कुछ पुरातनपंथी स्त्री–शिक्षा के विरोधी हैं। वे आज भी स्त्री को 'पराया धन', 'अनुत्पादक' मानकर पुरुषों के समकक्ष नहीं होने देना चाहते। वे इस तथ्य को भूल जाते हैं कि स्त्रियां ही मां बनकर बच्चों को पालती हैं और उनमें अच्छे संस्कार डालती हैं तभी उनका सही विकास हो पाता है।

भारतीय समाज में प्रारंभ से ही नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मनु के शब्दों में –'*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*'। इसका अर्थ यह है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं। नारी राष्ट्र की निर्माता है। यद्यपि वह कोमल है, परंतु उसका ॲदय अधिक मजबूत है। वह पुरुष को उन्नति की प्रेरणा देने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण शक्ति तथा प्रेम, दया एवं त्याग की प्रतिमूर्ति है। महात्मा गांधी ने नारी को अहिंसा की प्रतिमूर्ति बताया है। अतः हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान है। ⊥

34

अर्थोपार्जन में भी नारी निपुण

–रूबिया बानो, 9वीं ए
श्री गांधी बाल निकेतन
रतनगढ़, चूरू (राजस्थान)

1980 के दशक में विश्व स्तर पर यह विचार उठा कि सभी प्रकार के कार्यों का, जिनमें अर्थोपार्जन भी शामिल है, लिंग के आधार पर बंटवारा नहीं किया जाना चाहिए, अतः महिलाएं घर की जिम्मेदारी के साथ अर्थोपार्जन में भी अपनी भूमिका निभा रही हैं।

भारतीय समाज में नारी का स्वरूप सम्माननीय रहा है। उसकी प्रतिष्ठा अर्द्धांगिनी के रूप में की गई है। प्राचीन भारत में सर्वत्र नारी का देवी रूप पूज्य थी। परंतु उत्तर वैदिक काल में नारी की सामाजिक स्थिति में गिरावट आई। उसका अस्तित्व घर की चारदीवारी तक सीमित रह गया। मध्यकाल में मुस्लिम जातियों के आगमन से भारतीय समाज में कठोर प्रतिक्रिया हुई। उसके विषैले घूंट नारी को ही पीने पड़े।

जैसा की हम यह जानते हैं, सृष्टि में मानव का विशेष महत्व है। उसमें भी नर के समान नारी का समानुपात नितांत वांछित है। नर और नारी दोनों के संसर्ग से भावी संतान का जन्म होता है, सृष्टि–प्रक्रिया आगे बढ़ती है। भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में नारी को सदैव सम्माननीय स्थान प्राप्त हुआ है। नारी प्रेम, दया, त्याग और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है और ये आदर्श मानव–जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। किसी देश की अवनति अथवा उन्नति वहां के नारी समाज पर अवलम्बित होती है। जिस देश की नारी जागृत और शिक्षित होती है, वह देश संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है।

19वीं शताब्दी में ज्ञान–विज्ञान का प्रचार बढ़ा। भारतीय समाज सुधारकों ने नारी की हीन अवस्था पर ध्यान दिया। उन्होंने देश के सुधार के लिए सर्वप्रथम नारी की दशा में सुधार आवश्यक बतलाया। स्त्री–शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ। वर्तमान युग में हम नारी के दो रूप देखते हैं, एक तो वे नारियों हैं जो देहातों में रहती हैं, अशिक्षित और कोई काम करने में असमर्थ हैं और दूसरी शहरों में रहने वाली शिक्षित महिलाएं हैं। देहातों की अशिक्षित महिलाओं को प्राचीन नारी के रूप में भी देखा जा सकता है। शिक्षा के अभाव में अभी भी वह सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त हैं।

आज सामाजिक परिवर्तन के कारण महिलाओं और पुरुषों कार्य का बंटवारा तथा सामाजिक भेद नहीं रहा है। महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता कम हो गई। समता और स्वतंत्रता के साथ महिलाओं ने समाज के हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। समाज के इस बदलते वातावरण में अब महिला और पुरुष के बीच समरसता और सद्भाव बढ़ा है। घर–परिवार के निर्णय लेने एवं अन्य कार्यों में महिलाओं के विचारों को प्रमुखता दी जा रही है।

अब तक यह अब धारणा प्रचलित थी कि घर के कार्यों का संपूर्ण दायित्व महिलाओं का एवं अर्थोपार्जन का दायित्व पुरुषों का है। 1980 के दशक में विश्व स्तर पर यह विचार उठा कि सभी प्रकार के कार्यों का जिनमें अर्थोपार्जन भी शामिल है, लिंग के आधार पर बंटवारा नहीं किया जाना चाहिए, अतः महिलाएं घर की जिम्मेदारी के साथ अर्थोपार्जन में भी अपनी भूमिका निभा रही हैं। महिलाओं ने पुरुषों के साथ मजदूरी एवं पढ़ी–लिखी महिलाओं ने नौकरी और व्यापार में अपनी प्रभावी उपस्थिति दी है।

भारतीय नारी ने स्वतंत्र भारत में जो प्रगति की है, उससे देश उन्नत होता जा रहा है, रहन–सहन का स्तर बढ़ रहा है। अब नारी पुरुष के समान डॉक्टर, वकील, जज, शिक्षिका, प्रशासनिक अधिकारी, मंत्री आदि सभी पदों और सभी क्षेत्रों में कुशलता से काम कर रही है। सारे देश में नारी–शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। नारी सशक्तीकरण के अनेक कार्यक्रम राष्ट्र–स्तर पर चलाये जा रहे हैं, फिर भी नारी को वैदिक युग में जो सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त भी, वह आधुनिक सुसभ्य नारी को अभी तक नहीं मिली है।

ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियां शिक्षा के अभाव के कारण अभी भी कुरीतियों में जकड़ी हुई हैं। इस कारण आज भी बाल–विवाह, दहेज प्रथा, दहेज के लिए हत्या, आत्महत्या, सती प्रथा आदि कुरीतियां प्रचलित हैं। इन सब बुराइयों का निवारण करने में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वतंत्र भारत में नारी पुनः अपने गौरव एवं आदर्शों की प्रतिष्ठा प्राप्त करने लग गई है। हमारे राष्ट्रीय उत्थान में नारी की भूमिका सर्वमान्य है। ┐

35

शिक्षित नारी बनाए उन्नत समाज

–नैना मेहता, 10वीं बी
सेंट सिसीलियाज़ पब्लिक स्कूल
विकास पुरी, नई दिल्ली

यह सर्वथा ध्यान रखना चाहिए कि चाहे नारी घर में भीतर रहे अथवा घर के बाहर नौकरी करे, आधुनिकता उसकी सोच में होनी चाहिए, जिससे घर एवं परिवार में समृद्धि बनी रहे और नारी के सम्मान की रक्षा हो सके। उसके व्यक्तित्व में और निखार आए।

नारी में वह शक्ति है जो मनुष्य को भी देवता बना सकती है। वह जननी है, शक्ति है। एक सभ्य परिवार व समाज के निर्माण करने में उसका योगदान है। बच्चों के चरित्र–निर्माण और देश की उन्नति में नारी का सहयोग रहता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि नारी शिक्षित हो।

नारी पुरुष को उसके कार्य में परामर्श दे सकती है। उसकी कठिनाई को समझ सकती है। शिक्षित होने के कारण स्त्री सेवा का अर्थ समझने में सक्षम होती है। शिक्षित नारी पति और बच्चों के स्वास्थ्य, खान–पान आदि का पूरी तरह ध्यान रख सकती है। वह पति के स्वभाव को जानते हुए उसकी रुचि के अनुसार भोजन बना सकती है। घर की देख–भाल, साज–सजावट सुरुचिपूर्ण ढंग से कर सकती है।

नारी जीवन मुख्यतः पत्नी और माता, दो रूपों में विभक्त है। शिक्षित पत्नी परिवार के लिए वरदान है। स्नेह, सुख, शांति और श्री की वर्द्धक है। समन्वय, सामंजस्य और समझौते की साक्षात् प्रतिमा है। शास्त्रों में श्रेष्ठ नारी के छः लक्षण बताए गए हैं–

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमयाधारित्री, भार्या व षाड्गुण्यवतीह दुर्लभा।।

'कार्येषुमंत्री' अर्थात् कामकाज में मंत्री के समान सलाह देने वाली।
'करणेषु दासी' अर्थात् सेवादि में दासी के समान कार्य करने वाली।
'भोज्येषु माता' अर्थात् माता के समान स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन कराने वाली।
'रमणेषु रम्भा' का अर्थ है शयन के समय अप्सरा के समान सुख देने वाली।
'धर्मानुकूला' अर्थात् धर्म के अनुकूल काम करने वाली।
'क्षमयाधारित्री' अर्थात् क्षमादि गुण धारण करने में पृथ्वी के समान स्थिर रहने वाली।

नारी–जीवन का दूसरा रूप है माता का। मातृ रूप में नारी का दायित्व गुरुतर है, महान् है। माता की गोद बच्चे की प्रथम पाठशाला है। मनुष्य वही बनता है जो उसकी माता उसे बनाना चाहती है। अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह को तोड़ने की शिक्षा ली थी। शिवाजी को 'शिवा' बनाने में माता जीजाबाई का हाथ था।

नारी ही अपने बच्चों, परिवार, कुल, समाज और राष्ट्र में संस्कार व सुरुचि जागृत करेगी। श्रेष्ठतर चरित्र का निर्माण करेगी। सुशिक्षित नारी नौकरी कर गृहस्थी की आय बढ़ाएगी। अध्यापिका बनकर राष्ट्र को शिक्षित करेगी। परिचारिका बनकर रोगियों और पीड़ितों की वेदना हरेगी। लिपिक बनकर कार्यालय–संचालन में सहयोग देगी। विधिवेत्ता बनकर समाज को न्याय प्रदान करेगी। नेत्री बनकर देश को कुशल नेतृत्व प्रदान करेगी।

वर्तमान समाज में नौकरीपेशा महिलाओं की जिम्मेदारियां पुरुषों की तुलना में कहीं ज्यादा हैं। जिस संस्था अथवा विभाग में वे काम कर रही हैं, वहां तो अपनी ड्यूटी पूरी करनी ही होती है, काम से लौटने के बाद घर की संपूर्ण जिम्मेदारियों

का भी निर्वहन उन्हें करना पड़ता है। खाना बनाने से लेकर छोटे बच्चों की देखभाल, घर की आंतरिक व्यवस्था आदि भी उन्हें करनी पड़ती है। जिस घर में नारी इन दायित्वों का सही निर्वहन कर रही है, वह घर सुखी, सम्पन्न एवं विकासशील है।

आधुनिक समाज में नारी की सार्थक उपस्थिति से रूढ़िवादी परम्पराएं व रीति–रिवाज बहुत तेजी से समाप्त हो रहे हैं। यह एक अच्छा लक्षण है। नारी जब खुद आधुनिक सोच विचार वाली होगी तो उसकी संतान व परिवार अपने आप विकसित होगा। कहा भी गया है कि बालक यदि शिक्षा पाता है, तो स्वयं शिक्षित होता है लेकिन यदि लड़की या नारी को शिक्षित किया जाता है तो परिवार शिक्षित होता है। आधुनिकता की इस लहर में नारी की आधुनिक सोच का अधिक योगदान है।

यह सर्वथा ध्यान रखना चाहिए कि चाहे नारी घर में भीतर रहे अथवा घर के बाहर नौकरी करे, आधुनिकता उसकी सोच में होनी चाहिए, जिससे घर एवं परिवार में समृद्धि बनी रहे और नारी के सम्मान की रक्षा हो सके। उसके व्यक्तित्व में और निखार आए। ऐसा व्यवहार एवं ऐसी सोच आधुनिक है और ऐसी आधुनिकता का स्वागत हर समाज में होता है। ┐

36

गौरवपूर्ण अतीत न भुलाए स्त्री–शक्ति

–परमजीत कौर, 9वीं ए
महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल
सिरसा (हरियाणा)

नारी को अपने गौरवपूर्ण अतीत को ध्यान में रखकर त्याग, स्नेह, समर्पण, सरलता आदि गुणों को नहीं भूलना है। यूरोपीय संस्कृति के मोह में न फंसकर भारतीयता को बनाये रखना है। इसमें उसका, उसके परिवार, समाज और राष्ट्र का हित है।

प्रत्येक मनुष्य अधिक से अधिक सुख–समृद्धि की कामना करता है। वह चाहता है कि जब तक वह जीवित रहे तब तक उसे सभी प्रकार की सुख–शांति प्राप्त होती रहे। इसलिए वह परिवार का गठन करता है। मनुष्य मृत्युपर्यन्त अपने लिए, अपने परिवार के लिए जूझता रहता है ताकि वह सुखपूर्वक रह सके। व्यक्ति से अगली इकाई परिवार की है। पति–पत्नी, माता–पिता एवं बच्चे मिलकर परिवार बनाते हैं। परिवार एक ऐसी इकाई है जो समाज और राष्ट्र से जुड़ी रहती है। परिवार को सुखी व सुचारू रूप से चलाने के लिए नर और नारी दोनों ही समाज रूप से सहयोगी हैं।

जिस प्रकार तार के बिना सितार तथा धुरी के बिना पहिया बेकार होता है, उसी प्रकार नारी के बिना नर का जीवन चल नहीं सकता। गृहस्थी की गाड़ी नर तथा नारी दोनों के सहयोग से आगे बढ़ती है। गृहस्थी का कोई भी कार्य नारी के बिना संभव नहीं। वैदिक काल में नारियों को बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

गौरी–शंकर, लक्ष्मी–नारायण, सीता–राम, राधा–कृष्ण आदि उदाहरणों से यह बात स्पष्ट है कि प्रायः नारीत्व को प्रथम स्थान दिया गया है। कहा जाता है कि भारतीय जीवन में समाज की कल्पना करते समय नारी को पहला और प्रमुख स्थान दिया गया और पुरुष को दूसरा या उसके बाद का। नारी को पुत्र के समान अधिकार प्राप्त है। वे शिक्षा प्राप्त करती हैं। नारी अपने पति की हमेशा सहायता करती है और उसे पूरी स्वतंत्रता भी प्राप्त है।

नारी समाज की दुर्दशा के प्रति सजग व सावधान है। वह समाज–सुधार के कार्यक्रम में व्यस्त है। भारत की वर्तमान समस्याओं भुखमरी, महंगाई, बेकारी आदि को सुलझाने के लिए भी वह प्रयत्नशील है। श्रीमती इंदिरा गांधी, सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, महावेदी वर्मा, अमृता प्रीतम आदि ऐसी भारतीय नारियां हैं जिन पर भारतवर्ष को सदैव गर्व रहेगा।

आज भारतीय नारी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि वह पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है। वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। आज नारी अध्यापिका, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, राजदूत, गवर्नर, पायलट, ट्रक–ड्राइवर तथा खेलों में भी भाग ले रही है। आज नारी ने अपने व्यक्तित्व को पहचान लिया है। नौकरी करने से एक ओर उसमें आत्म–विश्वास पैदा हुआ है, वहीं दूसरी ओर उसने अपने घर व परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारा है।

कहा जाता है कि यदि लड़का पढ़ता है तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है और यदि लड़की पढ़ती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। एक शिक्षित नारी न केवल अपने परिवार के स्तर को ऊंचा उठाती है, बल्कि वह समाज के प्रति भी सजग होती है। वह वर्तमान समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करती है तथा समाज सुधार के कार्य करती है। भारतीय नारी ने शिक्षित तथा आधुनिक बनकर भी नम्रता, लज्जा तथा मर्यादा आदि गुणों को नहीं त्यागा।

आधुनिक युग में जहां नारी को हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, वहीं उसे पग–पग पर अनेक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। उसके उत्तरदायित्वों में बहुत बढ़ोत्तरी हो गई है। घर के सभी काम करने के बाद वह घर के बाहर नौकरी भी करती है। घर तथा नौकरी की जिम्मेदारियों के नीचे वह पिस रही है। पुरुष के सहयोग के बिना मशीन की भांति काम करते हुए उसमें मानसिक कष्ट पैदा हो रहा है।

उसमें नीरसता बढ़ती जा रही है। कई बार वह मातृत्व का दायित्व भी कुशलतापूर्वक निभा नहीं पाती। परंतु आधुनिक नारी इन सब समस्याओं पर विजय पाने का प्रयास कर रही है। आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित होने पर वह आत्मविश्वास के साथ समस्याओं का सामना करती है, पुरुष के अत्याचार को सहन नहीं करती, अपने जीवन को भार नहीं समझती और अपने हक के लिए लड़ती है।

नारी अपनी सभी जिम्मेदारियों को सही ढंग से पूरा करती है और कठिनाइयों का सामना करती है। पर हम पूरी तरह से यह नहीं कह सकते कि नारी ही परिवार चला सकती है। नर और नारी दोनों समान रूप से एक–दूसरे पर निर्भर रहते हैं। दोनों ही परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारते हैं।

अतः नारी को अपने गौरवपूर्ण अतीत को ध्यान में रखकर त्याग, स्नेह, समर्पण, सरलता आदि गुणों को नहीं भूलना है। यूरोपीय संस्कृति के मोह में न फंसकर भारतीयता को बनाये रखना है। इसमें उसका, उसके परिवार, समाज और राष्ट्र का हित है। उसे सभी का सुख चाहने वाली, त्यागमयी, ममता की देवी बनना है। नारी का मातृत्व तथा पत्नीत्व अत्यंत गौरवपूर्ण तथा महान् रहा है। आशा है भारतीय नारी का यह महिमामण्डित गौरव सदैव बना रहेगा और विश्व भारतीय नारियों को सम्मानजनक दृष्टि से देखता रहेगा। ┐

37

नारी–अमंगल में परिवार का विनाश

–शिवांगी शर्मा, 10वीं
सरस्वती विद्यालय
सरस्वती भवन, दरियागंज, दिल्ली

सारे संबंधों का जो शील के साथ निर्वाह कर पाती है, ऐसी ही स्त्री का परिवार में महत्व है। एक पत्नी के रूप में वह स्नेह और सौजन्य की देवी है। वह नर रूपी पशु को मनुष्य बनाती है, मधुर वाणी से पारिवारिक जीवन को अमृतमय बनाती है। उसके नेत्रों में पारिवारिक आनंद के दर्शन होते हैं।

परिवार मनुष्य की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति द्वारा स्थापित महत्वपूर्ण संस्था है। पारिवारिक जीवन की मूल आधार बनी नारी। परिवार में नारी की भूमिका विशेष रूप से पुत्री, पत्नी तथा माता के रूप में है। इन तीनों रूपों में भी परिवार में पत्नी का स्थान सर्वोपरि है। माता के रूप में वह ममतामयी बनकर संतान के लिए अखण्ड सुख–ऐश्वर्य की कामना करती है। पुत्री का महत्व तो स्वयंमेव निर्धारित है, क्योंकि पत्नी और माता उसी के विकसित रूप हैं।

पत्नी परिवार का आधार है, उसका जीवन–प्राण है। पत्नी गृहस्थी का मूल है, गृहस्थी की आत्मा है। ऋग्वेद के अनुसार पत्नी ही घर–परिवार है। परिवार में पत्नी की महत्ता सिद्ध करते हुए लिखा गया है –*'घर, घर नहीं, अपितु गृहिणी ही घर है'*। दूसरी ओर, मानव भूतल पर जन्मतः ऋषि–ऋण, देव–ऋण एवं पितृ–ऋण का ऋणी है। पत्नी यज्ञ में पति के साथ रहकर देव ऋण से तथा पुत्रोत्पन्न कर पितृ–ऋण से मुक्त करवाती है।

भारतीय नारी पारिवारिक रूप में इसलिए विशेष महत्व पाती है क्योंकि उसके अनेक रिश्ते हैं। डॉ. विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में –*'वह सास होती है, बहू–बेटी होती है, बहन–ननद, भाभी होती है और न जाने क्या–क्या होती है तथा पत्नी का अभिनय भी करती है'*। इन सारे संबंधों का जो शील के साथ निर्वाह कर पाती है, ऐसी ही स्त्री का परिवार में महत्व है। एक पत्नी के रूप में वह स्नेह और सौजन्य की देवी है। वह नर रूपी पशु को मनुष्य बनाती है, मधुर वाणी से पारिवारिक जीवन को अमृतमय बनाती है। उसके नेत्रों में पारिवारिक आनंद के दर्शन होते हैं। वह संतप्त पारिवारिक ॅदय के लिए शीतल छाया है। उसके हास्य में पारिवारिक निराशा को मिटाने की अपूर्व शक्ति है।

पृथ्वी की सी सहिष्णुता, समुद्र की सी गम्भीरता, हिम की सी शीतलता, पुष्पों की सी कोमलता, गंगा की सी पवित्रता, वीणा की सी मधुरता, गौ की सी साधुता, हिमालय की सी उच्चता तथा आकाश की सी विशालता आदि अनेक गुणों द्वारा माता ही पारिवारिकता अखण्डता की वृद्धि करती है।

ऋणों का उल्लेख करते हुए जैसा कि पहले कहा जा चुका है, माता बच्चे को जन्म देकर परिवार को पितृ–ऋण से मुक्त करती है। वह तन–मन–धन से एकाग्रचित, आत्मविस्मृत हो शैशव में आत्मज की सेवा करती है। बाल्यकाल में संतान की शिक्षा–दीक्षा की पूर्ति के लिए सतत चिंता करती है। पेट को काटकर भी बच्चे की ज्ञान–वृद्धि करना चाहती है। समय पर भोजन एवं भोजन के साथ स्वच्छ वस्त्रों का भी प्रबंध तथा पाठ्य–वातावरण उत्पन्न कर संतान को ज्ञानवान बनाने में सहायक बनाती है। यौवन की दहलीज पर आते ही संतान को गृहस्थ धर्म में प्रवेश करवाती है। विवाह का आयोजन कर स्वयं 'सास' की उपाधि से अलंकृत होती है। अब वह पुत्र–वधू को परिवार के संस्कार प्रदान करना अपना कर्त्तव्य समझती है।

पुत्री की परिवार में भूमिका कालांतर में पत्नी और मां की पृष्ठभूमि है। अतः पुत्री की भूमिका आदर्श पत्नी, कुशल गृहिणी तथा उदात्त मातृत्व के गुणों का शिक्षणकाल है। वह परिवार में रहकर दया, ममता, सेवा, धैर्य, सहानुभूति तथा विनय के सौम्य गुणों की शिक्षा ग्रहण करती है। शिक्षा–अर्जन का ज्ञान प्राप्त करती है। बुद्धि का विकास करती है। जीवन और जगत के लिए व्यावहारिक सिद्धांतों, मान्यताओं, भावनाओं का प्रयोग करती है।

पुत्री परिवार में रहकर मां की भूमिका, पिता के व्यवहार, भाई–बहनों के आचरण को देखती है। बुद्धि के अनुसार विवेचन करती है। सत्–प्रणाली को गांठ बांधती है, दुष्कर्मों की हानि से सचेत रहने वाली शिक्षा ग्रहण करती है। नारी के बिना परिवार की

कल्पना मृग–मरीचिका है। नारी के सौम्य–गुणों के अभाव में परिवार की सुख–शांति असंभव है। नारी की कर्त्तव्य–उपेक्षा में परिवार की क्षति है, ह्रास है। नारी के अमंगल में परिवार का विनाश है। नारी की पीड़ा में परिवार की क्षति है। ┐

38

पुरुष बनने की चेष्टा छोड़े स्त्री

–शिवानी भट्ट, 10वीं सी
माता गुजरी पब्लिक स्कूल
ग्रेटर कैलाश भाग 2, नई दिल्ली

संस्कारवान स्त्री अपने सद्गुणों से संतान को सुयोग्य नागरिक बनाती है। पिता आर्थिक रूप में इसमें मदद करता है परंतु प्रमुख भूमिका मां की होती है। गुणवती कन्या अपने जीवन की नाव खेती है और उस नाव में बैठकर अपने परिवार का भी कल्याण करती है।

'*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*' का आदर्श स्थापित करने वाले भारतीय समाज परिस्थितियों एवं काल के थपेड़ों में नारी–शक्ति की महिला को भुला बैठा है। अबला कहकर उसका संसार घर की चारदीवारी के भीतर सीमित कर दिया गया। उसे शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक गतिविधियों में हिस्सा लेने की अनुमति नहीं दी गई, किंतु भूखी शेरनी कब तक पिंजरे में बंद रहती ? मन की अदम्य इच्छाओं और ज्ञान की भूख ने उसे इन दीवारों को तोड़ डालने पर विवश कर दिया। अबला कह कर प्रताड़ित की जा रही नारी ने दासता एवं बंधन का जीवन सदा–सदा के लिए त्याग दिया। अब उसने अपने महत्व को पहचान लिया है और मजबूत इरादों तथा दृढ़ आत्मविश्वास के साथ वह निकल पड़ी है समाज में अपना स्थान बनाने के लिए। पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर उन्नति के मार्ग पर।

है आज भरा मुझमें कितना, रे बल का पारावार नहीं
मुझको अबला कहने का अब, कवि को भी अधिकार नहीं।।

'सुमन' जी की उपर्युक्त पंक्तियों ने आधुनिक नारी के अदम्य विश्वास को प्रकट किया है। आज नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं। चिकित्सा–शिक्षा से लेकर प्रशासन–राजनीति, उद्योग–व्यवसाय, सैन्य–सुरक्षा और पर्वतारोहण जैसे चुनौती भरे और पुरुषों के एकाधिकार वाले कोई भी क्षेत्र उससे अछूते नहीं रहे। प्रगति की इस दौड़ में कहीं–कहीं तो वह पुरुषों से भी आगे निकल गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि अब वह उस पूर्व–प्रतिष्ठित गरिमा को प्राप्त करके ही दम लेगी, जब उसे मनुष्य में देवत्व का जागरण कर धरती पर स्वर्ग जैसा वातावरण सृजित करने का सौभाग्य प्राप्त था। सांस्कृतिक चेतना की संवाहक होने के कारण ही वह देवी के रूप में पूजनीय और वंदनीय थी।

भारतीय साहित्य में नारी एवं पुरुष को समान अधिकार, समान महत्व एवं समान गरिमा प्राप्त है। ईश्वरीय शक्ति देवी एवं माता के रूप में वह सदैव पूजनीय रही। भारतीय दर्शन में प्रकृति और पुरुष इन दोनों तत्वों को ही सृष्टि का आधार माना गया है। दोनों तत्व परस्पर सहयोगी एवं पूरक हैं। दोनों ही एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं। प्राचीन काल में स्त्री–ऋषिका भी थी और पुरोहित भी। घर–परिवार में वह गृह–स्वामिनी, सहचरी, अर्द्धांगिनी एवं गृह की समृद्धि के रूप में गृहलक्ष्मी आदि अलंकारों से सुशोभित थी। कोई भी अनुष्ठान, अभियान एवं कर्म उसके बिना पूरा नहीं होता था।

साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों के नारी–जागरण के इन प्रयासों को गति दी डॉ. कर्वे एवं महात्मा गांधी जैसे मनीषियों ने। परिणामस्वरूप अनेक महिलाएं राष्ट्रीय स्वतंत्रता सांगाम के आंदोलन में कूद पड़ीं। 21वीं सदी की नारी को अधिकार मांगने की नहीं बल्कि अर्जित करने की जरूरत है। अर्जित अधिकार ही उसका वास्तविक सहारा एवं संपत्ति होंगे जिसे कोई नहीं छीन सकता। अर्जित तेज के आगे हर किसी को झुकना पड़ता है। किंतु पुरुष से संघर्ष की बराबरी में उसे अपने नारी–सुलभ गुणों का त्याग नहीं करना चाहिए। वह ममता, वात्सल्य, उदारता, सहिष्णुता आदि जैसे नारी–सुलभ गुणों के कारण ही पुरुष की सहयोगी नहीं, उसकी जीवनदायिनी एवं प्रेरक शक्ति भी सिद्ध हुई है। संस्कारवान स्त्री अपने सद्गुणों से संतान को सुयोग्य नागरिक बनाती है। पिता आर्थिक रूप में इसमें मदद करता है परंतु प्रमुख भूमिका मां की होती है। गुणवती कन्या अपने जीवन की नाव खेती है और उस नाव में बैठकर अपने परिवार का भी कल्याण करती है।

आज नारी ने जो छवि बनाई है, उसे धूमिल न होने दें। भटकाव का प्रथम मोड़ है–अपनी मौलिक सांस्कृतिक गरिमा को भुलाकर पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण। जिसका परिणाम है कि वह अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीन हो रही है और

पुरुष से प्रतिद्वंद्विता के चक्कर में पड़कर उचित–अनुचित में अंतर कर पाना भी भूलती जा रही है। अतः पुरुष बनने की चेष्टा न करके पुरुष को अपने गौरवमय स्वरूप से अभिभूत और अपनी आत्म–शक्ति से शासित करने का उसे प्रयत्न करना चाहिए।

आधुनिक आगृत नारी का कर्त्तव्य है कि पिछड़ी हुई लाखों नारियों को अपने साथ लेकर चले। उनके दुखों को बांटकर उन्हें प्रगति की राह पर चलना सिखाएं। उन्हें स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति जागरूक करें। उन्हें आर्थिक स्वावलंबन का पाठ पढ़ाएं। यदि प्रगति की दिशा में अग्रसर नारी यह कर पाई तो उसकी स्वतंत्रता उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेगी जिसे वह स्वयं चाहती है। इसी स्तर पर प्रतिष्ठित होकर अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र के प्रति दायित्वों का निर्वहन करके अपनी उच्चाकांक्षाओं को पूरा करना होगा। ┐

39

नारी एक वरदान

–प्रिया, 10वीं
सावित्री पब्लिक स्कूल
संगम विहार, नई दिल्ली

आधुनिक भारतीय नारी संघर्ष करके समाज में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। समाज एकाएक नहीं बदलता। पुरुष और नारी समाज के दो अनिवार्य अंग हैं। दोनों के समान विकास से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। नारी की उपेक्षा से समाज प्रगति पथ पर अग्रसर होगा, ऐसा सोचना मूर्खतापूर्ण है।

आधुनिक भारत में नारी परिवार के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। स्वर्ग से सुंदर भारतवर्ष, जिसके तन–मन तथा प्राणों में नवचेतना उत्पन्न होती है, अपनी सभ्यता और संस्कृति के अंतर्गत नारी की पवित्रता, उसकी दैविक शक्तियों तथा अलौकिक गुणों के लिए विश्व भर में प्रख्यात है। नारी एक ओर घर–गृहस्थी संभालकर पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर रही है, वहीं दूसरी ओर नौकरी तथा अन्य व्यवसायों के माध्यम से धनोपार्जन कर रही है। नारी दोनों स्थितियों के मध्य अत्यधिक संघर्षशील हो गई है।

नारी सृष्टिकर्ता का एक अद्‌भुत वरदान है। वह दया, करुणा, समर्पण से परिपूर्ण है। पत्नी के सौभाग्य से ऐश्वर्यशालिनी है, धार्मिक अनुष्ठानों की सहधर्मिणी होने से धर्मपत्नी व अर्द्धांगिनी है, गृह की संचालिका होने के कारण गृहलक्ष्मी है, पारस्परिक सुख के निमित्त पत्नी प्रेयसी और रंभा है, अर्थ के अर्जन में पुरुष की सहयोगी है। नारी जननी है, सृष्टि की निर्मात्री है। पुरुष को पुत्र प्रदान कर पितृ–ऋण से मुक्ति और पुत्री देकर संसार के अस्तित्व को स्थिरता प्रदान करती है।

एक समय था जब भारत में नारी का स्थान बहुत आदरणीय था। प्रत्येक कार्य में उसका समान अधिकार था। पुरुष के समान ही सभा, उत्सव व अन्य सामाजिक कार्य में भाग लेने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। कोई भी अनुष्ठान उसके बिना अधूरा माना जाता था। उस युग की नारी गौरवमयी थी।

मध्य युग की नारी को पुत्री के रूप में पिता पर, पत्नी के रूप पति पर और वृद्ध होने पर अपने पुत्रों पर आश्रित रहना पड़ता था। आधुनिक युग जागृति का युग है। देश में जहां सामाजिक, राजनैतिक क्रांति आई, वहां नारी समाज को भी उन्नति का अवसर मिला नारी ने अपने खोए हुए अधिकारों के लिए समाज के साथ प्रबल संघर्ष किया और समय परिवर्तन के साथ–साथ उसकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होता चला गया। स्वतंत्रता के पश्चात नारी–शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। इसके सुपरिणाम सामने आए हैं। आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहां नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चल रही है।

यह तो सभी को ज्ञात है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नारी ने अपना पूरा सहयोग दिया, कठिन मुसीबतें आईं। उसने घर भी संभाला, घर छोड़ा तो जेल के बंधन को भी स्वीकार किया। नारी के इस त्याग और सहनशक्ति को देखकर समाज ने विवश होकर उसकी शक्ति को स्वीकार किया। महात्मा गांधी ने भी नारी के बारे में कहा है *'नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज शुद्ध और सही भावना से करती है, तब पहाड़ों को भी हिला देती है।* भारतीय नारी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा ने कहा *'आदिम काल से आज तक विकास–पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व चेतना और ॅदय का विकास किया है, उसी का पर्याय है नारी*।

सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में नारी पूर्ण स्वतंत्रता के साथ भाग लेने लगी है। इस स्थिति को देखकर देश के वर्तमान कर्णधारों ने उसकी महान्‌ता को स्वीकार करते हुए पुरुष के समान ही उसको स्थान प्रदान किया और रहे–सहे बंधनों के विरुद्ध एक प्रबल आंदोलन किया गया। राजाराम मोहनराय, दयानंद सरस्वती ने नारी को समाज में पुरुषों के समान अधिकार देने के लिए आवाज बुलंद की। उसी आंदोलन की ध्वनि कविवर पंत की इन पंक्तियों में व्यक्त है –

मुक्त करो नारी को, चिर वंदिनी नारी को।
युग–युग की बर्बर कारा से जननी प्यारी को।।

आधुनिक भारतीय नारी संघर्ष करके समाज में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। समाज एकाएक नहीं बदलता। पुरुष और नारी समाज के दो अनिवार्य अंग हैं। दोनों के समान विकास से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। नारी की उपेक्षा से समाज प्रगति पथ पर अग्रसर होगा, ऐसा सोचना मूर्खतापूर्ण है।

मानवता का रूप है, नारी गुण की खान।
नारी इस संसार में, ईश्वर का वरदान।।

40

सम्मान की प्रतीक नारी

–तूषा रहमान कुरैशी, 11वीं
ए.बी.एम. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

भारतीय समाज में तेजी से हो रहे परिवर्तन का श्रेय भारतीय नारी को भी है। इन परिवर्तनों के पीछे उसे स्वयं को समझना होगा। उसे स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। वह अब आर्थिक रूप से पुरुषों पर आश्रित नहीं रही, इसलिए उसमें आत्मविश्वास की भावना जरूर होनी चाहिए।

भारत में नारी सदा पूज्य रही है। वह त्याग, तपस्या और पावनता का प्रतीक रही है। उसका स्थान वैदिक काल से ही सम्मानजनक और विशिष्ट रहा है। उस समय नारी के बिना कोई भी धार्मिक कार्य अधूरा माना जाता था। उसे पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे। देश में विदेशी आक्रमणों के कारण नारी का रूप बदल गया। उसे चारदीवारी में बंद होना पड़ा। इस कारण उसे अपने अधिकारों से वंचित होना पड़ा। लेकिन स्वंतत्रता प्राप्ति के बाद फिर उसका पुराना समय लौटा। भारतीय इतिहास नारियों के महान् कर्त्तव्यों, क्षमताओं तथा वीरता के कार्यों से भरा पड़ा है। नारी भारतीय समाज में हमेशा आदर व सम्मान का प्रतीक रही है।

यह ठीक है कि विधाता ने ही नारी को पुरुष की तुलना में कोमल, संवेदनशील, ममता, प्रेम, वात्सल्य, पवित्रता तथा दया की मूर्ति बनाया है। अतः उसकी श्रेष्ठता पुरुषों में अलग है। इसलिए वह पुरुष के जीवन–संरक्षण में जीवनपर्यन्त रहती है। पिता बचपन में अपनी पुत्री की रक्षा करता है, पति युवावस्था में रक्षा करता है अपनी पत्नी की और पुत्र वृद्धावस्था में अपनी मां का भार वहन करता है। इस प्रकार स्त्री जीवन में कभी स्वतंत्रता नहीं रहती। नारी के संबंध में यह कथन जीवन की विडम्बना को व्यक्त करता है, किंतु यह सत्य के अन्यंत निकट है –*'आज त्याग तप संयम साधन, सार्थक हो पूजन आराधन।*

आज की नारी पुरुषों के समान समस्त कार्य करने के साथ–साथ कुशल भी है। घर–गृहस्थी के समस्त कार्य करने के साथ–साथ वह बच्चों को पढ़ाती है, सुसंस्कृत बनाती है। मूलतः नारी मातृरूपा है। उसकी ममता से ही घर, घर बना हुआ है। अगर किसी घर में नारी न हो तो वह घर–घर नहीं रहता। वह एक मकान बनकर रह जाता है।

नारी अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाती है। किंतु कभी–कभी घर और ऑफिस की जिम्मेदारी निभाते निभाते वह तनावपूर्ण हो जाती है। कार्यालयों के समस्त उत्तरदायित्वों को निभाने के साथ–साथ वह घर–गृहस्थी के उत्तरदायित्व भी निभाती है। इससे उस पर मानसिक और शारीरिक बोझ बढ़ गया है। इसी कारण उसे अनेक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। इसका सामना करते–करते वह अनेक रोगों से ग्रस्त हो रही है।

भारतीय समाज में तेजी से हो रहे परिवर्तन का श्रेय भारतीय नारी को भी है। इन परिवर्तनों के पीछे उसे स्वयं को समझना होगा। उसे स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। वह अब आर्थिक रूप से पुरुषों पर आश्रित नहीं रही, इसलिए उसमें आत्मविश्वास की भावना जरूर होनी चाहिए। गृहस्थ जीवन पुरुष और नारी के सहयोग और आपसी समझ से ही चलता है। इसकी सफलता पुरुष से अधिक नारी की सूझ–बूझ पर निर्भर करती है।

आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरुष वर्ग उसे मात्र अबला न समझे। उसे अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। नारी को प्रकृति ने स्वाभाविक रूप से दया, क्षमा, प्रेम, उदारता, त्याग, बलिदान जैसे गुण दिए हैं। यदि हमे उन्हें थोड़ा सा प्रोत्साहन दें तो उनमें शक्ति क्षमता, आत्मविश्वास, संकल्प, दृढ़ता, साहस धैर्य जैसे गुण भी विकसित हो सकेंगे। आज की नारियों को स्वयं में आत्मविश्वास रखकर अपनी संपूर्ण क्षमता से मार्ग के अवरोधों को दूर करते हुए कर्त्तव्य–पथ पर अग्रसर होना चाहिए। ┐

41

नारी में छिपा है उज्ज्वल भविष्य

–कोमल, 9वीं बी
सर्वोदय सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय
नई दिल्ली

यह आवश्यक नहीं है कि महिलाएं ऊंचें पदों पर जाकर बैठे अथवा उन्हें पुरुषों के बराबर वेतन मिले। यह भी आवश्यक है कि महिलाएं समाज सेवा और देश के नवयुवकों व बच्चों को सही मार्ग दिखाए और उन्हें उस मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दें। यदि महिलाएं अपने कर्त्तव्यों का पालन करती रहें तो उनके अधिकारों से उन्हें कोई वंचित नहीं कर सकता।

राष्ट्र निर्माण व राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का कार्य एक महान् कार्य है। इसमें जितना भी योगदान दिया जाए, कम है। राष्ट्रीय हित के लिए प्रत्येक बलिदान कम है। राष्ट्रीय उन्नति के लिए प्रत्येक पग प्रशंसा का प्रात्र है। राष्ट्र की सुरक्षा में ही सभी की सुरक्षा है। राष्ट्र की उन्नति में ही सभी की उन्नति है। राष्ट्रीय कार्यों के लिए जब भी आवश्यकता हुई है, भारतीय नारियां कभी पीछे नहीं रहीं। भारतीय नारियों ने प्रत्येक वह बलिदान दिया है, जो पुरुषों ने दिया है। स्वतंत्रता संग्राम में वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर विदेशियों को भारत–भूमि से बाहर निकालने के लिए अग्रसर थीं। बलिदान दिये और जेलों के कष्टों को सहा तथा स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय पुनर्निर्माण व विकास के कार्यों में भी जी जान से जुटी हुई है।

उन्हें गृहलक्ष्मी और गृहदेवियों के नाम से संबोधित किया जाता था। परिवार में उनका पद प्रतिष्ठापूर्ण था और गृहस्थी का प्रत्येक निर्णय उनसे बिना पूछे नहीं किया जाता था। भारतीय नारी के रक्त में आज भी वहीं परम्परागत भारतीय भावनाएं काम करती हैं। पवित्रता, उदारता, ममता और स्नेहशीलता उनमें कूट–कूटकर भरी हुई हैं।

पराधीनता के उस युग में जब भारत पर विदेशियों का राज था, देश की स्वतंत्रता का तो हरण हुआ ही, साथ ही स्त्रियों की स्वतंत्रता का भी हरण हुआ। समर्पण, प्रेम और बलिदान की भावना उनके लिए ही विनाशकारी बन गई। उन्हें पर्दे में रहने के लिए विवश किया गया और शिक्षा का अधिकार भी उनसे छिन गया। आर्थिक रूप से पिछड़ापन, अशिक्षा, पर्दा–प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह और दहेज की समस्याओं से ग्रस्त भारतीय नारी का अपना वह प्राचीन गौरवशाली रूप कहीं खो गया।

महान् समाज सुधारक राजाराम मोहनराय, महर्षि कर्वे, स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी ने नारी उत्थान के लिए अनेक प्रयास किए और नारी को घर की चारदीवारी से मुक्त कर खुले वातावरण में निकाल कर लाए।

समान अधिकार के इस युग में विश्व की जनसंख्या का आधा भाग विकास के मार्ग पर अग्रसर है। शिक्षा के विकास के साथ–साथ उनमें आत्मविश्वास जागृत हो रहा है। विश्व की अनेक विवेकशील स्त्रियों ने नारियों का पथ–प्रदर्शन किया है। दैन्य, दासता और दमन का चक्र अब विकास, विज्ञान और विवेक ने काट गिराया है। आज स्त्री–स्वतंत्रता का युग है। नारियां अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं।

आज की नारी शिक्षा प्राप्त कर रही है। वह प्राचीन नारी की भांति अशिक्षित जीवन व्यतीत करना नहीं चाहती। शिक्षा ने आधुनिक नारी में जागृति पैदा कर दी है, इसलिए वह सभी क्षेत्रों में आगे आई है। राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में उसका सम्मान बढ़ा है। आज महिलाएं कार्यालयों, कार्यशालाओं, यंत्र और वेधशालाओं में सम्मानित पदों पर हैं। पुलिस, सेना और गुप्तचर विभाग के साहसिक पदों पर भी कार्य कर रही हैं।

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था, *'ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं कर सकतीं*। विश्व की समस्याओं के समाधान एकता और आपसी सद्भावना है और यह महिलाओं के सहयोग के बिना संभव नहीं है। जब तक महिलाओं को भी समाज में उनका उचित और आदरपूर्ण स्थान नहीं मिल जाता, तब तक कोई भी देश या समाज उन्नति नहीं कर सकता। कोई भी प्रगति तब तक संभव नहीं है, जब तक पूरी

नहीं, संसार की आधी जनसंख्या का उसमें पूर्ण सहयोग न हो। साथ ही महिलाओं को भी चाहिए कि कोई भी अधिकार तब तक पूरा नहीं है जब तक कि हम अपने कर्त्तव्यों का ठीक ढंग से पालन नहीं करते।

यह आवश्यक नहीं है कि महिलाएं ऊंचें पदों पर जाकर बैठे अथवा उन्हें पुरुषों के बराबर वेतन मिले। यह भी आवश्यक है कि महिलाएं समाज सेवा और देश के नवयुवकों व बच्चों को सही मार्ग दिखाए और उन्हें उस मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दें। यदि महिलाएं अपने कर्त्तव्यों का पालन करती रहें तो उनके अधिकारों से उन्हें कोई वंचित नहीं कर सकता। चाहे अंतरिक्ष की उड़ान हो या हिमालय की चोटियों पर चढ़ाई, नारियां किसी भी क्षेत्र में आज पीछे नहीं हैं। नृत्य, संगीत, वाद्यकला, खेल–कूद, राजनीति, सिनेमा, विज्ञान अथवा प्रशासन सभी क्षेत्रों में आज नारियों ने दिखा दिया है कि वे पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

हम यह जानते हैं कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का आधार नारी और सिर्फ नारी है। नारी स्वावलंबी होकर हर क्षेत्र में परस्पर सहभागिता के लिए तैयार है। वैज्ञानिक सोच एवं आधुनिक विचारधारा ने नारी जगत के सामने भी संभावनाओं के नए क्षितिज खोले हैं। पुराने रीति–रिवाज, रूढ़ियां धीरे–धीरे टूट रही हैं। यदि कहीं कोई पारस्परिक बंधन है तो अज्ञानता के कारण वह भी धीरे–धीरे एक दिन समाप्त अवश्य होगा। ┐

42

नारी है शक्ति स्वरूपा देवी

–अमित कुमार गुप्ता, 9वीं सी
आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय
छत्तरपुर, नई दिल्ली

किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहां के नारी वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र नारी को केवल भोजन पकाने एवं बच्चे पैदा करने का साधन समझते हैं, वे दुर्भाग्य से अभी भी सभ्यता, संस्कृति तथा शिष्टता की दौड़ में पीछे हैं।

जिस प्रकार कोई वाहन बिना पहिए के चल नहीं सकता या कोई पक्षी बिना पंखों के उड़ नहीं सकता, उसी प्रकार नारी के बिना कोई परिवार ठीक प्रकार से विकसित नहीं हो सकता है। किसी ने कहा है –'जिस परिवार में नारी सुशिक्षित तथा चतुर होती है, उस परिवार में लक्ष्मी का वास होता है' अर्थात् नारी की तुलना लक्ष्मी से की गई है। इसके कई कारण हैं – जब बच्चा परिवार में जन्म लेता है तो सर्वप्रथम उसकी देखभाल करने वाली उसकी मां होती है अर्थात् मां बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। मां के द्वारा ही सबसे पहले बच्चे में संस्कार प्रस्फुटित किए जाते हैं, उसके बाद वह पाठशाला में प्रवेश करता है। यदि बच्चे में मां के द्वारा अच्छे संस्कार डाल दिए जाते हैं तो ऐसा बच्चा देश के विकास में काफी योगदान देता है, देश और समाज का कल्याण भी करता है। इस प्रकार नारी का योगदान एक परिवचार के विकास से लेकर देश के विकास तक फैला हुआ है।

जिस परिवार में नारी को सम्मान मिलता है, उस परिवार का चहुंमुखी विकास होता है। परिवार में सुख–शांति और अमन–चैन होता है। जब कोई परिवार प्रगति की तरफ अग्रसर होगा तो उसका प्रभाव समाज के दूसरे परिवारों पर पड़ेगा। ठीक इसके विपरीत जिस परिवार में नारी को सम्मान नहीं मिलता है, वह कलह, अशांति में रहता है। उस परिवार का विकास किसी भी सूरत में नहीं होता। अतः नारी का सम्मान और प्रतिष्ठा ही सही समाज का निर्माण करता है। इसलिए आज महिला सशक्तीकरण की ओर सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

नारी आज पुरुष की बराबरी में कार्य कर रही है। इसलिए नारी उत्थान के लिए उसे आरक्षण दिया जा रहा है। हमारा महिला समाज विकास करेगा तो निश्चित रूप से देश का विकास होगा। किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहां के नारी वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र नारी को केवल भोजन पकाने एवं बच्चे पैदा करने का साधन समझते हैं, वे दुर्भाग्य से अभी भी सभ्यता, संस्कृति तथा शिष्टता की दौड़ में पीछे हैं। प्राचीन युग में भी स्त्रियां, पुरुषों के साथ प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में समान रूप से भाग लेने की अधिकारिणी थीं।

द्वापर युग के आने पर अविश्वास उत्पन्न हुआ। अनेक बंधनों में नारी को बांध दिया गया। मध्यकाल में नारी को गुलाम बनाकर पतन की दिशा की ओर धकेल दिया गया। धर्मिणी के स्थान पर वह केवल दासी एवं वासनापूर्ति का साधन मात्र बन गई। इसलिए मध्य युग के इतिहासकारों ने इसे अंधकार युग माना है।

आधुनिक काल में नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारतीय संविधान में भी नर–नारी को समान अधिकार दिए गए हैं। शिक्षित महिला वर्ग ने स्वयं पर्दे का त्याग किया। हर क्षेत्र में नारी ने अपना अधिपत्य जमा लिया। यहां तक कि देश की बागडोर भी उसी के हाथ आ गई।

आज 21वीं सदी में नारी पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर भारत के निर्माण में जुटी हुई है। संघर्षों में शक्ति स्वरूपा बनकर पुरुष को सहयोग दे रही है और उसकी प्रेरक शक्ति बनी हुई है। भारतीय नारी का भविष्य निश्चित ही अत्यंत उज्ज्वल है।

यह संसार परिवर्तनशील है। यहां प्रत्येक क्षण स्थिति बदलती रहती है। नारी वर्ग की स्थिति में भी बदलाव आया है। मुगलकाल में नारी की दशा गिरावट की ओर चली गई और स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तक नारी जाति को शोषण का शिकार बनाया गया। कुछ समाज सुधारकों ने उसकी इस दशा के विरुद्ध आवाज उठाई।

आधुनिक युग नवजागरण का युग है। इसका प्रभाव भारत की नारियों पर पड़ा है। गत दो दशकों में नारी जागरण में काफी प्रगति हो रही है। इसका मूल कारण है नारी शिक्षा में प्रगति। आज की नारी आधुनिकता के परिवेश में जी रही है। वह अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष भी कर रही है। सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त उसे आर्थिक समस्याओं से भी जूझना पड़ रहा है।

नारी के सात रूप हैं जिससे मां सबसे श्रेष्ठ और वैश्या सबसे निकृष्ट रूप है। नारी ही शक्ति स्वरूपा है और इस धरती को भी धरती माता के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह धरती ही हमें सब कुछ प्रदान करती है। अतः नारी का सम्मान परिवार का सम्मान है, एक स्वच्छ समाज का निर्माण है।

लबों पर कभी जिसके बद्दुआ नहीं होती,
सिर्फ एक मां है जो खफ़ा नहीं होती।

अतः किसी भी दृष्टिकोण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अगर परिवार समाज और राष्ट्र की उन्नति करनी है तो महिला सशक्तीकरण को और सुदृढ़ करना ही होगा। ⊥

43

विविध रूपों की साम्राज्ञी है नारी

–स्वाति खेत्रपाल, 9वीं बी
दिल्ली कॉन्चेंट स्कूल
गणेश नगर, दिल्ली

आधुनिक युग में, विशेषकर स्वतंत्रता के पश्चात् राजनीतिक परिस्थिति और वैधानिक दृष्टि से भारत की नारी अधिक अधिकार सम्पन्न हुई, समाज में प्रतिष्ठित हुई। आज वह केवल पत्नी, माता आदि संबंधों के द्वारा ही अपना परिचय नहीं देती, अपितु अपने आपको राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में उपस्थित करती है।

भारतीय नारी वैदिक काल से सामाजिक दृष्टि से परम उच्च पद पर प्रतिष्ठित है। पंचकन्या रूप में प्रातः स्मरणीया है। समाज उसके वात्सल्यमय आंचल में स्थान पाता है। इसलिए मति के नाते पूज्या है। निःस्वार्थ समाज सेवा की सुधा बांटती 'देवी' है। त्याग के बल पर समाज की 'साम्राज्ञी' है। सत्य आनंद की स्रोतस्विनी के नाते वह समाज की 'मोहिनी' है।

अन्य समाजों में नारी केवल भोग्या है, पुरुष की वासनाओं की मोहावृत्त प्रतिभूति के रूप में प्रतिष्ठित है। पूजनीया और स्वर्गादपि गरीयसी माता रूप में नहीं। नारी पुरुष के अहं की भंजक और उसके पौरुष की चुनौती है। उसका क्रोध समाज में भूकम्प ला देता है तो उसका पतन समाज के जीवन–मूल्यों को धूल चटा देता है।

भारतीय नारी सदा सामाजिक संस्था बनकर दीप्त रही है। सहस्त्र दल कमल दीखती है वह। रस लेती रहती है अपने मायके से वाणी की तरह और लक्ष्मी की तरह लहराती रहती है अपने ससुराल में। किसी की ननद है, किसी की भाभी, किसी की जेठानी, किसी की देवरानी, किसी की चाची, किसी की मौसी आदि। अनेक संबंधों में एक होकर वह पूर्ण प्रस्फुटित कमल बनती है। तभी उसके भीतर पराग भरता है।

भारतीय नारी एक ओर प्राकृतिक सृजन शक्तियों के उदार मानवीकरण के नाते जीवन के विकास की प्रतीक बनी, दूसरी ओर सामाजिक सदस्य के रूप में सर्वाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद पर आसीन हुई। अदिति मानव मुक्ति दात्री मानी गई है। सरस्वती ज्ञान का और पृथ्वी का प्रतीक बनी। ब्रह्मवादिनी मैयेत्री का तत्व मंत्र आज भी समाज का प्रकाश स्तभ है, *'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतगमय'*। गार्गी, घोषा अपाला, लोपामुद्रा विश्वधारा, श्रद्धा, कामायनी, अम्मृण, अम्मृण ऋषि की कन्या वाक् मंत्र–दृष्टा प्रतिष्ठित हुईं। महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली में विविध शक्तियों का सामंजस्य हुआ।

साक्षात् अपने पति को मौत के मुंह से छुड़ाने वाली सती सावित्री के रूप में प्रतिष्ठित है तो शंकराचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित मंडन मिश्र की पत्नी जो दोनों के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ थीं, देवी भारती श्रृंगेरी और द्वारिका मठों में अध्यापक के पद पर प्रतिष्ठित हुईं।

भारतीय नारी का दूसरा रूप है गृहस्वामिनी का। पति में प्रभु की मूर्ति प्रतिष्ठित करके वह अपने सर्वस्व का समर्पण कर देती है। परिणामतः वह पति गृह की साम्राज्ञी बनी और सभी कार्यों की सहयोगिनी, धर्मकार्यों में सहधर्मिणी तथा पारिवारिक सम्पत्ति में सह अधिकारिणी बनी।

जब–जब समाज में *'यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'* के नारी सम्मान को चुनौती मिली तो साध्वी पत्नी अग्नि–ज्वाला में झुलसी, देवताओं के मनोरंजन के लिए देवदासी बनी। बौद्धकालीन नारी की स्थिति इतनी दयनीय थी कि भगवान बुद्ध को नारियों के उद्धार के लिए 'भिक्षुणी' बनने की स्वीकृति देनी पड़ी।

आधुनिक युग में, विशेषकर स्वतंत्रता के पश्चात् राजनीतिक परिस्थिति और वैधानिक दृष्टि से भारत की नारी अधिक अधिकार सम्पन्न हुई, समाज में प्रतिष्ठित हुई। आज वह केवल पत्नी, माता आदि संबंधों के द्वारा ही अपना परिचय नहीं देती, अपितु अपने आपको राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में उपस्थित करती है। वह राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री,

राज्यपाल, विधायक, न्यायाधीश, आई.सी.एस., पी.सी.एस. अधिकारी बन कर राष्ट्र–संचालन करती है। भारत भाग्य विधाता होने का गौरव प्राप्त करती है।

समाज को ज्ञान बांटने (अध्यापन) और नागरिक सेवा क्षेत्र (चिकित्सा) में नारी 'गुरु' और 'दीनबंधु' के पद की अधिकारिणी बनी। खेल–कूद, पर्वतोरोहण, वकालत और इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र नारी से गौरवान्वित हुए हैं। एयर होस्टेस, सेल्स गर्ल, मॉडल, कला, नृत्य–संगीत पर नारी का वर्चस्व स्थापित हुआ है।

अर्थ का अभाव, स्वावलम्बन की इच्छा तथा कुछ कर दिखाने की लालसा ने नारी को नगरों में घर से बाहर तो निकाला, किंतु उसकी स्थिति शंका से देखी गई। दिन भर श्रम से जुटी नारी को विश्राम और शांति चाहिए। वह स्थिति संगत नहीं बैठती। नौकरी और सामाजिक क्षेत्र में उसकी श्रृंगार–प्रियता तथा स्वतंत्रता में उच्छृंखलता का भ्रम हो जाना सहज है। परिणामतः परिवार संबंधों में संघर्ष और कटुता उत्पन्न हुई। 'स्व' के भविष्य चितंन ने संगति के भविष्य पर प्रश्न–चिन्ह लगा दिया है।

महादेवी वर्मा के शब्दों में *'भारत की सामान्य नारी शिक्षित न होकर भी प्रस्कृत है। जीवन–मूल्यों से उसका परिचय अक्षरों द्वारा न होकर अनुभवों द्वारा हुआ। अतः उसका संस्कार समय के साथ गहरा होता गया'*। परिणामतः नारी द्वारा आज भी नीति धर्म, दर्शन, आचार कर्त्तव्य आदि का एक सहज–बोध रखने के कारण भारत की धरती के अधिक निकट और जीवन संग्राम में ठहरने के लिए अधिक समर्थ है। दूसरी ओर, युगों से पीड़ित होने के कारण जो हीनता के संस्कार भारतीय नारी में बन गए थे, उन्हें आधुनिकवाद ने अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया है कि आगामी नारी को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा। अपने स्वरूप के लिए समाज से याचना करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ┐

44

स्त्री मनुष्य की प्रेरक शक्ति

–अमन त्यागी, 10वीं ए
ग्लोबल पब्लिक स्कूल
इंदिरा विहार, कोटा, राजस्थान

नारी की कार्यक्षमता पर तो प्रश्नचिन्ह लगाया ही नहीं जा सकता। नारी का विवेकपूर्ण व्यवहार पति–परिवार, बॉस या कार्यस्थल के त्रिकोण को संतुष्ट रखने की रामबाण औषधि है।

सभ्यता के आदिकाल से पुरुष और नारी का साथ रहा है। पुरुष और नारी सभ्यता के प्रत्येक दौर में जीवन रथ के दो पहिए के रूप में काम करते आ रहे हैं। प्राचीन काल में नारियों का समाज में समादरपूर्ण स्थान था। उस समय नारी और पुरुष के अधिकारों में अंतर नहीं था। गृहस्थ जीवन का कोई भी कार्य उनकी सहमति के बिना नहीं होता था, यज्ञादि कार्य तो बिना उनके सम्पादित ही नहीं होते थे। अश्वमेध यज्ञ के समय में श्रीराम को सीता के न रहने की स्थिति में उनके स्थान पर स्वर्ण प्रतिमा बनाकर रखी गई थी। युद्धादि कार्यों में भी नारी ने पुरुषों का साथ दिया है।

नारियां जो प्रेम और बलिदान की महिमामयी मूर्ति थीं, समय के बदलने के साथ उनकी स्वायतत्ता में अंतर आता गया। आज बढ़ती महंगाई, महत्वाकांक्षाओं, जरूरतों एवं समस्याओं से डटकर टक्कर लेती हुई नारी का नौकरी से जुड़ जाना कितना लाभकर वह हितकर साबित हो रहा है ? कमरतोड़ महंगाई में दो वक्त की रोटी, उच्च शिक्षा के साधन जुटाने तथा समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने में जब पुरुष स्वयं को असमर्थ पाने लगा तो नारी ने आगे बढ़ कर अपने कौशल से धनार्जन में उसका सहयोग देने में कतई हिचकिचाहट नहीं बरती। नारी की त्याग भावना ने ही उसे घर के अतिरिक्त बाहर के क्षेत्र में भी कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

घर–संसार तो आदिकाल से ही उसका कर्म–स्थल रहा है। नारी की कार्यक्षमता पर तो प्रश्नचिन्ह लगाया ही नहीं जा सकता। नारी का विवेकपूर्ण व्यवहार पति–परिवार, बॉस या कार्यस्थल के त्रिकोण को संतुष्ट रखने की रामबाण औषधि है। स्वयं को दोहरे बोझ से बोझिल करने के पीछे उसका एकमात्र स्पप्न है –बच्चों की उच्च शिक्षा और परिवार में आधुनिक सुख–सुविधाओं से सम्पन्नता।

हां, यह भी ठीक है कि नारी के घर से निकलने के कारण परिवार बिखरने लगे हैं। आधुनिक जीवन में पुराने जीवन–मूल्य बेमानी होते जा रहे हैं। अच्छे संस्कारों के आगे प्रश्नचिन्ह लग रहे हैं। लेकिन क्या यह सब केवल नारी के नौकरी पर जाने के कारण ही हो रहा है ? नहीं, अगर पुरुष भी नारी की आशाओं, अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं को समझें, उनकी दोहरी जिंदगी के साथ सहयोग दें और भावनात्मक स्तर पर उनका साथ दें, तभी नारी आगे बढ़ सकती है।

इस युग के कवियों की दृष्टि भी नारी पर गई। अब वह तितली या भोग–विलास की सामग्री न होकर मनुष्य की प्रेरक–शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुई। वह दया, माया, ममता, मधुरिम एवं अगाध विश्वास का कलश लेकर मानव जीवन में प्रवेश कर मनुष्य के हृदय में व्याप्त विलास के झंझावात को समाप्त कर रही है। नारी के बिना नर का जीवन अधूरा है, नारी के बिना नर निष्क्रिय एवं निष्पंद है।

भारतीय समाज में नारियों की गौरव–गाथा की कोई कमी नहीं है। महारानी लक्ष्मीबाई के गौरवमय बलिदान को कौन भूल सकता है, जो अंग्रेजों की सेना का डटकर मुकाबला करते हुए स्वाधीनता संग्राम में अपना बलिदान देकर अमर हुईं। गांधीजी की प्रेरणामयी जननी पुतलीबाई और पत्नी कस्तूरबा के त्याग को कौन नहीं जानता ? सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, इंदिरा गांधी आदि समाज की अद्‌भुत प्रतिभाएं हैं, जिन्होंने अपने समाज और देश को प्रभावित किया।

नर–नारी समानता का जो स्वर सामाजिक परिवेश में उभरा है, उसके परिप्रेक्ष्य में नारी में प्रगति की दिशा में चलने की ललक बढ़ी है। शिक्षा के प्रसार और आर्थिक स्थिति में आते सुधार के कारण नारियों की समस्याओं का धीरे–धीरे अंत होना सुनिश्चित है। देर हो सकती है पर नारियों के प्रति अंधरे की गुंजाइश नहीं है जिससे कि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो।

यदि समाज से कुप्रथाएं आदि समाप्त हो जाएं तभी एक परिवार भी प्रसन्न, खुशहाल व विपत्तिरहित परिवार माना जाएगा। परिवार को ही तो समाज निर्माण की इकाई माना गया है। एक स्त्री ही परिवार का निर्माण करती है जिससे की समाज का निर्माण होता है परंतु वही परिवार व समाज को पलक झपकते ही ध्वस्त कर सकती है। अतः नारी ही परिवार और समाज के निर्माण एवं सर्वांगीण विकास का आधार है। ┐

45

नारी पर निर्भर है विकास

–प्रदीप मिश्रा, 12वीं ए
राजकीय उ.मा. बाल विद्यालय नं. 1
गुरु तेग बहादुर नगर, दिल्ली

पुरुष–स्त्री से यह अपेक्षा रखता है कि घर का प्रबंध भी सुचारू रूप से होता रहे तथा पत्नी की नौकरी से धन भी आता रहे। बच्चे को भी कोई कष्ट न उठाना पड़े। संपूर्ण आधुनिकता के बावजूद हम और हमारा समाज अभी तक मध्यकालीन संस्कारों का दास बनकर अपना जीवन यापन कर रहा है। हमें इन संस्कारों को तोड़ना होगा, जिसमें आज भारतीय नारी सचमुच आधुनिक बन सकें।

हमारे समाज की रचना का मूलाधार नर और नारी है। भारतीय समाज में शुरू से ही नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। वह देवी के रूप में पूज्या है। नर तथा नारी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे का व्यक्तित्व अपूर्ण है। नारी राष्ट्र निर्माता है। वह पुरुष की अपेक्षा कोमल है परंतु उसका ॅदय पुरुष से ज्यादा मजबूत माना जाता है।

नर तथा नारी के पारस्परिक सहयोग और सहचर्य से ही परिवार और समाज परिपुष्ट होता है। ऐसा माना जाता है कि गति स्त्री–पुरुष दोनों की गति पर आधारित है। ऐसा कहा जाता है कि सभ्यता के प्रारंभ में लगभग सभी समाज मातृसत्तात्मक थे। यदि हमें परिवार की समस्याओं को ध्यान में रखना है तो कुछ विशेष कार्य क्षेत्रों को नारी के लिए सुरक्षित करना होगा।

शिक्षा, चिकित्सा, शिशु संरक्षण, कुटीर उद्योग आदि में कार्य करने से उसे घर के लिए पर्याप्त समय भी मिल सकेगा। अंशकालीन कार्य उसे धन प्राप्ति का अवसर प्रदान करेगा तथा समय का सामंजस्य भी बना रह सकेगा। नौकरी उसमें आत्मविश्वास का संचार करती है तथा ऐसा करते–करते नारी अपने परिवार का ध्यान भी रख पाएगी। अनेक प्रकार की समस्याओं के बावजूद हमेंयह भी बात अपने दिल तथा दिमाग में बैठानी होगी कि नारी व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए उसका आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना अत्यंत आवश्यक है।

पुरुष समाज को भी अपनी मानसिकता बदलनी होगी। नारी को भी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक ज्ञान से सम्पन्न बनाना होगा। इसमें सबसे पहला मुनाफा तो परिवार की सम्पन्नता से होगा। आज के समय में नारी सामाजिक व्यवस्था में स्थान रखती है। पुरुषों की भांति वह उच्च शिक्षा ग्रहण करती है। सभी प्रकार की ट्रेनिंग लेती है तथा घर की सीमा से बाहर निकल कर स्कूल, कॉलेजों, कार्यालयों, अस्पतालों में अपनी कार्यक्षमतानुसार स्थान प्राप्त करती है। राजनीति, वैज्ञानिक संस्थान, पर्वतारोहण, क्रीड़ा जगत, पुलिस आदि कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जहां नारी का प्रवेश न होता हो।

एक बात तो नारी जगत ने यह साफ सिद्ध कर दिखाई है कि शिक्षा तथा नौकरी से कोई लाभ मिला हो या नहीं, एक लाभ तो यह अवश्य मिला है कि वह पुरुष की निरंकुशता से मुक्ति पाकर अपने परिवार का सर्वांगीण विकास करने का एकमात्र साधन है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत हर लड़की का स्वप्न नौकरी कर अपने परिवार का सर्वांगीण विकास करने का होता है। विवाह के बाद पारिवारिक मान्यताएं महत्वहीन होती जा रही हैं।

पुरुष–स्त्री से यह अपेक्षा रखता है कि घर का प्रबंध भी सुचारू रूप से होता रहे तथा पत्नी की नौकरी से धन भी आता रहे। बच्चे को भी कोई कष्ट न उठाना पड़े। संपूर्ण आधुनिकता के बावजूद हम और हमारा समाज अभी तक मध्यकालीन संस्कारों का दास बनकर अपना जीवन यापन कर रहा है। हमें इन संस्कारों को तोड़ना होगा, जिसमें आज भारतीय नारी सचमुच आधुनिक बन सकें। ऐसा नहीं कि भारतीय नारी सदा से ही अशिक्षित रही हो। प्राचीन काल में भी स्त्री को पुरुषों के समान शिक्षा दी जाती थी। हैरत होती है कि प्राचीन काल में स्त्री उच्च ज्ञान से परिपूर्ण थी।

नर तथा नारी समाज रूपी रथ के दो पहिए है। फिर भी हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि स्त्रियां ही मां बनकर बच्चों को पालती है तथा उनमें अच्छे संस्कार डालती है और उनमें अच्छे बुरे का विचार करना सिखाती है। मां ही शिशु की

प्रथम गुरु मानी जाती है। वही बच्चे को अपने कल्पित सांचे में ढालती है। वह उसे देवता भी बना सकती है तथा राक्षस भी। परिवार का सर्वांगीण विकास करने तथा कराने में उसे शिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। मेघतिथि ने लिखा है –'पति–पत्नी केवल शरीर से भिन्न हैं लेकिन अन्य कार्यों में वे एक दूसरे से सम्बद्ध हैं।'

अरस्तु के अनुसार *'नारी की उन्नति तथा अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है*। दार्शनिक बनडि शॉ का कथन है कि *'किसी व्यक्ति का चरित्र कैसा है, यह उसकी माता को देखकर साफ बताया जा सकता है*। ┐

46

नारी का त्याग अमूल्य निधि

–आरजू मंसूरी, 11वीं
शारदा विद्या मंदिर हायर सैकेण्ड्री स्कूल
पेटलावद छाबुआ, (मध्य प्रदेश)

चरित्र किसी एक विशेष गुण का नाम नहीं है। सभी गुणों के समन्वय को चरित्र की संज्ञा दी जाती है। आदर्श नारी का चरित्र भागीरथी के पवित्र जल की भांति उज्ज्वल होना चाहिए। चरित्र बल से ही मनुष्य समाज में उन्नत और सम्भ्रांत होता है। नारी का त्याग व बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है।

किसी विद्वान कवि ने कहा है कि *'गृहिणी गृहमित्याहुः न गृहं गृहमुक्यते'* अर्थात् गृहिणी से ही घर है। बिना गृहिणी के घर को घर नहीं कहा जा सकता। नारी गृहस्थ जीवन रूपी नौका की पतवार है। वह अपनी बुद्धि, बल, चरित्र तथा अपने त्यागमय जीवन से इस नौका को थपेड़ों और भंवरों से बचाती है। आनंद और उत्थान इसके कंधों पर आधारित रहते हैं। यदि नारी चाहे तो अपने पारिवारिक जीवन को स्वर्ग बना सकती है।

बच्चे की प्राथमिक पाठशाला घर ही है जिसकी प्रधानाचार्या उस घर की नारी ही होती है। यहीं से वह शिक्षा, सभ्यता, अनुशासन, शिष्टाचार आदि का पाठ पढ़ता है। वह जैसा चाहे अपने बालक को वैसा ही बना सकती है। इतिहास साक्षी है कि हर महान् व्यक्ति के जीवन पर उनकी माताओं के उज्ज्वल चरित्र की स्पष्ट छाप अंकित हुई है। धर्मपरयाण पुतलीबाई के शुभ संस्कार ज्यों के त्यों उनके पुत्र मोहनदास में बचपन से ही दृष्टिगोचर हुए।

समाज और देश के उत्थान और भावी समृद्धि के लिए एक नारी जितना उपकार कर सकती है, उतना कोई दूसरा नहीं। कहा गया है कि हर महान् पुरुष के पीछे किसी नारी का हाथ होता है। किंतु कुछ स्त्रियां हमारे देश में ऐसी भी हुई है, जिनका महान् व्यक्तित्व व त्याग हमारे लिए पथ प्रदर्शक है। उनका आदर्श जीवन अनुकरणीय है।

भारतीय नारी सृष्टि के आरंभ से अनंत तक गुणों का आगार रही है। पृथ्वी की सी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र की सी गम्भीरता, चन्द्रमा की सी शीतलता, पर्वतों की सी मानसिकता हमें एक साथ नारी के ॅदय में दृष्टिगोचर होती है। वह दया, करुणा, ममता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है और समय पड़ने पर प्रचण्ड चण्डी भी। वह मनुष्य के जीवन की जन्मदात्री है।

भारतीय नारी का एक स्वरूप गृहलक्ष्मी का है और दूसरा विनाशकारी काली का। दूसरे रूप में हम यह कह सकते हैं कि पारिवारिक जीवन रूपी गाड़ी के पति–पत्नी दो आधारभूत पहिए हैं। वर्तमान समय में नारी का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा से उसे अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान होता है। गुण और अवगुणों की पहचान होती है। एक शिक्षित नारी अपनी पारिवारिक परिस्थितियों को भलिभांति संभाल सकती है। वह गुरु की भांति बुरे मार्ग पर चलने से पहले पति व बच्चों को रोकती है। अतः नारी के लिए शिक्षा आवश्यक है।

भोजनादी की व्यवस्था करने में आदर्श नारी को कभी कोई संकोच या लज्जा नहीं होती। भोजन की व्यवस्था के साथ, आय–व्यय का हिसाब भी गृहणी ही रखती है। प्रारंभिक चिकित्सा का ज्ञान भी परिवार में नारी का ही होता है। पुराने समय में छोटे–छोटे रोगों का इलाज स्त्रियां घर में ही कर लिया करती थीं।

भारतीय नारी सदैव अपने पति के सुख में सुखी और दुःख में दुःखी रहती है। उसकी दूसरी महान् विशेषता सहनशीलता है। यह एक ऐसा गुण है जो उसे श्रद्धा के चरम शिखर पर आसीन कर देता है। घर में सभी व्यक्ति होते हैं। आवश्यक नहीं कि सभी एक जैसे स्वभाव के हों। कोई कटुभाषी होगा, कोई मधुर भाषी होगा, कोई उदासीन होगा और कोई झगड़ालु होगा। नारी को सहनशील होना चाहिए। यदि सहनशीलता में थोड़ा–सा भी अंतर आ गया तो समझ लीजिए कि घर कलह का अणु बन जाएगा। अतः नारी सदैव शांत और सहनशील होनी चाहिए।

चरित्र किसी एक विशेष गुण का नाम नहीं है। सभी गुणों के समन्वय को चरित्र की संज्ञा दी जाती है। आदर्श नारी का चरित्र भागीरथी के पवित्र जल की भांति उज्ज्वल होना चाहिए। चरित्र बल से ही मनुष्य समाज में उन्नत और सम्भ्रांत होता है। नारी का त्याग व बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। आध्यात्मिक धन के समक्ष सांसारिक धन तुच्छ है। 'जहां पति है, वहीं अभिन्न रूप से पत्नी है।

तात्पर्य यह है कि भारत की नारियों में आज नव चेतना है, नव जागृति है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं। परंतु इसके साथ ही कर्त्तव्य के प्रति भी उनका ध्यान है। अपने परिवार के उत्थान के साथ–साथ अपने देश के भी उत्थान में हाथ बटा रही है। वह समय निकट ही है, जब वे जीवन के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में पुरुषों के समान समझी जायेंगी और अपनी प्रतिभा से देश को और समृद्ध बना सकेंगी। ┐

47

मातृत्व में नारी महान्

–वैशाली जैन, 10वीं
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, दिल्ली

वेदों की ऋचाओं की द्रष्ट तक नारियां मानी जाती हैं फिर उन्होंने कई ऋषि–मुनियों की आदर्श गृहणियां बनकर उनके घरों–आश्रमों का संचालन तो किया ही, सामाजिक संरचना का मूल आधार घर–परिवार का आदर्श स्वरूप भी प्रतिष्ठापित किया। घर–परिवार में सांस्कृतिक मूल्यों को भी उचित प्रतिष्ठा एवं रक्षा करके दिखाई है।

प्राचीन काल से ही स्त्रियों का हमारे देश में महत्व रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है। वैदिक काल में हम देखते हैं कि यज्ञ आदि के समय यदि स्त्री साथ में नहीं होती थी तो यज्ञ को अधूरा मानते थे। परिवार के विकास में आज स्त्री अपना योगदान तो दे ही रही है परंतु देश की सफलता में भी बढ़–चढ़ कर भाग ले रही है। यों भी उपलब्ध प्राचीनकाल साहित्य में इस तथ्य को उजाकर करने वाले अनेक महत्वपूर्ण प्रमाण मिलते हैं कि आरंभ से ही सामाजिक संरचना, उसके विकास और उत्कर्ष में नारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

वेदों की ऋचाओं की द्रष्ट तक नारियां मानी जाती हैं फिर उन्होंने कई ऋषि–मुनियों की आदर्श गृहणियां बनकर उनके घरों–आश्रमों का संचालन तो किया ही, सामाजिक संरचना का मूल आधार घर–परिवार का आदर्श स्वरूप भी प्रतिष्ठापित किया। घर–परिवार में सांस्कृतिक मूल्यों को भी उचित प्रतिष्ठा एवं रक्षा करके दिखाई है। हर स्थिति में वह अपने पति की हर संभव व उचित सहायता करती है। यज्ञ आदि सभी जगह उनका साथ दिया।

इसी कारण प्रत्येक धार्मिक–सामाजिक अनुष्ठान में अनिवार्य स्थान एवं महत्व प्राप्त किया। युगीन समाज शास्त्रियों को ऐसा नियम तक बना देने को बाध्य कर दिया कि पत्नी के रूप में नारी के अभाव में पुरुष किसी भी प्रकार का कोई धार्मिक–सामाजिक अनुष्ठान नहीं कर सकता। अपनी सलज्ज नम्रता, धीरज, सहनशीलता, त्याग–तपस्या के बल पर नारी ने भारतीय समाज में 'देवी' का स्थान और महत्व तो पा ही लिया है, शास्त्रकारों को यह व्यवस्था तक देने के लिए बाध्य कर दिया कि '*यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*। इसका अर्थ यह है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। किसी जीवंत और निरंतर प्रगतिशील समाज में इससे बढ़कर नारी का क्या सम्मान और महत्व हो सकता है।

मुंशी प्रेमचंद जी के अनुसार मानव सभ्यता और संस्कृति की दौड़ में नारी पुरुष से हजारों वर्ष आगे है। हम भी जाने–अनजाने इसे स्वीकार करते हैं जबकि पुरुषों को 'देवता' कहकर नहीं पुकारते। इसके अतिरिक्त पुरुष जब स्त्री के सहज स्वाभाविक गुण ममता, दया–माया, सहिष्णुता, करुणा, उदारता, त्याग और बलिदान को अपना लेता है तो ऋषि हो जाता है; किंतु स्त्री जब पुरुष के संघर्ष, कठोरता कलह प्रतियोगिता और हिंसा आदि सहज धर्म को अपनाती है तो राक्षसी कहलाती है। अतएव निर्विवाद रूप से नारी का स्थान पुरुष की अपेक्षा श्रेष्ठ है। महाकवि प्रसाद ने नारी के संबंध में लिखा है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत–सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।।

निःसन्देह नारी श्रद्धा है वह मानव जीवन के समतल में बहने वाली अमृत सलिला है। वह न हो तो जीवन उजाड़ मरुस्थल बन जाए। उसकी प्रसन्न मुस्कान, चमकती हुई दृष्टि, स्नेहमयी वाणी, प्रेममय ॅदय, सेवा–परायणता, त्याग–बलिदान की भावना, सहिष्णुता और ओदार्य परमात्मा का सबसे बड़ा वरदान और उसके चिंतन का सबसे बड़ा चमत्कार है।

नारी स्नेह और सौजन्य की देवी है। उसके नेत्रों में आनंद का दर्शन होता है। वह संतप्त ॅदय के लिए शीतल छाया है। उसके हास्य में निराश हरने की अपूर्व शक्ति है। नारी जीवन मुख्यतः पत्नी और माता दो रूपों में विभक्त है। शिक्षित पत्नी परिवार के लिए वरदान है। स्नेह, सुख, शांति और श्री की वर्द्धक है। समन्वय, सामंजस्य और समझौते की साक्षात् प्रतिमा है।

मातृत्व में नारी का दायित्व गुरुत्व है, महान् है। माता की गोद में बच्चे की पाठशाला है। मनुष्य वही बनता है जो उसकी माता उसे बनाना चाहती है। अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह को तोड़ने की शिक्षा ली थी। शिवाजी को 'शिवा' बनाने में माता जीजाबाई का हाथ था। शिक्षित होने पर माताएं अपने बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा दे सकती है। नारी अपने बच्चों को बुरी आदतों से दूर रखती है। नारी अपने घर को घर के बजट के अनुसार चलाती है। जिससे भविष्य में उन्हें पैसों की परेशानी न हो सके। ┐

48

दुःख पीकर खुशी बांटती है नारी

–भावना शर्मा, 9वीं बी
उत्तराखण्ड पब्लिक स्कूल
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)

भारतीय नारी ने प्रगति की कई मंजिलें तय की हैं और वह निरंतर प्रगति की तरफ अग्रसर है। फिर भी पश्चिमी जगत की नारियों से वह अभी भी बहुत पीछे है। यदि हमारे देश में नारी शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान दिया जाए तो निःसंदेह वह सबको पीछे छोड़ देगी।

किसी भी राष्ट्र का समुचित विकास तभी सम्भव है जब उसके निवासियों में नर–नारी का भेद–भाव न हो और नारियों के व्यक्तित्व का विकास हो। नारी एक ऐसा शब्द है जिसे हर मुश्किलें सहनी पड़ती है। उसमें हर मुश्किल का सामना करने की हिम्मत भी होती है। उसे अपने नहीं बल्कि अपने परिवार की चिंता होती है। उसमें इतनी सहनशक्ति होती है कि वह दूसरों के सामने अपने दुःख नहीं बताती और हंसती रहती है। वह अपने परिवार को भी संभाल कर रखती है।

आज के वैज्ञानिक युग में नारी हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, उद्योग, हस्तकला आदि क्षेत्रों में वह पुरुषों से बाजी मार लेने के प्रयास में है। प्राचीन भारत की मीराबाई जैसी नारियों के नाम वर्तमान युग में भी श्रद्धा के साथ स्मरण किए जाते हैं। सीता का आदर्श उदाहरण है जिसने पति के साथ वन में चौदह वर्ष तक कठिन जीवन बिताया। उर्मिला में वह धैर्य था जिसने पति से दूर रहकर चौदह वर्ष बिताए। महाभारत काल में गांधारी ने अपने पति के लिए देखना छोड़ दिया।

मध्यकाल तक नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन आया। समाज में उसकी स्थिति बहुत दुर्बल हो गई थी। वह चारदीवारी में अंदर कैद हो गई थी। उसे अपनी इच्छा से कुछ भी करने की मनाही थी। फिर भी अनेक नारियों ने इतिहास में पहचान बनाई जैसे पद्मिनी, चांदबीबी, रजिया सुल्तान, झांसी की नारी लक्ष्मीबाई आदि।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान पहली बार महिलाएं घर से बाहर निकलीं और उन्होंने आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अतः यह उनमें आई जागरूकता का ही परिणाम है कि देश के आजाद होने के बाद महिलाओं को मताधिकार के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा। उन्हें पुरुषों के समान सभी अधिकार मिले। आजादी के बाद भी अनेक नारियों ने राष्ट्र की उन्नति में योगदान दिया। कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, इंदिरा गांधी आदि का नाम आधुनिक भारत में अत्यंत गौरव के साथ लिया जाता है।

स्वतंत्रता के बाद नारियों ने पुरुषों की तरह विभिन्न क्षेत्रों में सम्मान हासिल किया। सन् 1966 में इंदिरा गांधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं। देखा जाए तो बचेन्द्री पाल पहली नारी है जो माउंट एवरेस्ट में चढ़ी। सुनीता विलियम्स ने छह महीने अंतरिक्ष में रहकर रिकॉर्ड तोड़ा। इससे पता चलता है कि नारी के ऊपर बहुत सी जिम्मेदारियां होती है। वह एक मां, पत्नी, बहन होने के साथ–साथ सारे रिश्ते अच्छी तरह निभाती है।

नारी विविध क्षेत्रों में सक्रिय है। चाहे वह राजनीति हो, वकालत हो, चिकित्सा आदि हो, वह अपना सामर्थ्य और योग्यता सिद्ध कर रही है और आगे बढ़ती जा रही है। फिर भी लोग लड़कियों के ऊपर इतना जुर्म क्यों करते हैं ? कई माता–पिता तो ऐसे होते हैं जो लड़की के पैदा होने पर उसे प्यार नहीं देते। माता–पिता उसे गोद में नहीं सुलाते, वह लड़की बेबस ही पड़ी रहती है। वह फिर भी हंसती है। उसके मन में दुख हो लेकिन वह कभी अपना दुख प्रकट नहीं करती।

ऐसे शोषण का विरोध करने के लिए समाज में नारी की भूमिका पर आजकल बहुत बल दिया जा रहा है। उसे शिक्षा की ओर अधिकाधिक प्रेरित किया जा रहा है तथा सुविधाएं दी जा रही हैं। दूरदर्शन में विज्ञापन द्वारा नारियों को पढ़ने के लिए जागरूक किया जा रहा है। शिक्षा प्राप्त करने से वह आत्मनिर्भर हो रही है, शोषण के खिलाफ लड़ने की शक्ति भी प्राप्त कर रही है तथा पुरुषों पर उसकी निर्भरता भी कम हो रही है।

आज भारतीय नारी में अत्यधिक परिवर्तन आ रहा है। इसका बहुत अधिक श्रेय नारी कल्याण के लिए चलाए जा रहे अनेक कार्यक्रमों को जाता है। देश के कोने–कोने में फैले अनेक स्वयंसेवी संगठनों ने भी नारियों की स्थिति बेहतर बनाने के लिए अथक संघर्ष किए हैं। उन्होंने भारत के नारी समाज में चेतना का प्रसार किया है। सरकार व समाज द्वारा नारी उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों को देखकर यह कहा जा सकता है कि भारतीय नारी ने प्रगति की कई मंजिलें तय की हैं और वह निरंतर प्रगति की तरफ अग्रसर है। फिर भी पश्चिमी जगत की नारियों से वह अभी भी बहुत पीछे है। यदि हमारे देश में नारी शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान दिया जाए तो निःसंदेह वह सबको पीछे छोड़ देगी। ┐

49

स्त्री परिवार की अधिष्ठात्री

–प्रिया जायसवाल, 9वीं
शास. कन्या उ.मा. विद्यालय
मनेन्द्रगढ़, छत्तीसगढ़

पुरुषों में देव कोई बिरले ही होते हैं, पर नारियों में से अधिकांश को अभी भी देवी पाया जाता है। वे सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के रूप में अदृश्य रहती हैं, पर माता, भगिनी और पुत्री के रूप में उन्हें घर–घर में पवित्रता के रूप में प्रतिष्ठित देखा जाता है।

परिवार की समस्त जरूरतों से लेकर बच्चों की पढ़ाई तक नारी ने अनेक रूपों में आकर परिवार के प्रति सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। नारी के बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। नारी को प्राचीन काल में एक वस्तु के रूप में माना जाता था। उस समय न तो उसे शिक्षा दी जाती थी और न ही विभिन्न क्षेत्रों में आने दिया जाता था। उस समय अधिकांश परिवारों में बालिका के जन्म पर दुःख मनाया जाता था।

आज नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ चुकी है –जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षिका आदि। हर क्षेत्र में नारी पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। आज यदि बालिका का जन्म होता है तो उत्सव मनाया जाता है तथा दहेज के प्रति कानून बनाया गया। आज नारी समझ चुकी है कि यदि उसे कुछ हासिल करना है तो आगे बढ़ना ही पड़ेगा और ऐसा उसने करके दिखाया है। सृष्टि की रचना के पश्चात् सर्वप्रथम मां ही इस दुनिया में आई, उसके ही आंचल में हम सभी पले–बढ़े। परिवार की समस्त जरूरतों से लेकर परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी मां बखूती निभाती है। हम यह कह सकते हैं मां ही वह प्रथम सीढ़ी है जिससे हम आगे बढ़ते हैं और नेक इंसान बनते हैं।

नारी का द्वितीय रूप पत्नी है। परिवार के प्रति अपना जीवन अर्पण कर देने वाली नारी पत्नी है। पत्नी जब दुल्हन बनकर ससुराल में आती है तो वह संकल्प लेती है कि मरते दम तक अपने परिवार की सेवा करेगी तथा मरने के बाद ही इस परिवार से विदा लेगी। परिवार की अधिष्ठात्री नारी है। उसी को गृह स्वामिनी या गृहिणी कहते हैं। गृहलक्ष्मी भी वही है। पीड़ितों का उत्कर्ष एवं अपकर्ष उसी के आंचल तले होता है। गरीबी के रहते भी उसी की सुव्यवस्था घर को 'आनंद निकेतन' बना सकती है। कभी यहां नारी को सर्वोपरि सम्मान प्राप्त था। उसके नाम से साथ 'देवी' शब्द जुड़ा रहता था।

पुरुषों में देव कोई बिरले ही होते हैं, पर नारियों में से अधिकांश को अभी भी देवी पाया जाता है। वे सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के रूप में अदृश्य रहती हैं, पर माता, भगिनी और पुत्री के रूप में उन्हें घर–घर में पवित्रता के रूप में प्रतिष्ठित देखा जाता है। मनु का कथन असत्य नहीं है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवताओं का निवास रहता है। धर्मपत्नी के रूप में वह जीवन संगिनी की वैसी ही भूमिका निभाती है, जैसे कि दो पहियों के सहारे गाड़ी चलती है। नाव को सही रास्ते पर ले जाने के लिए दोनों हाथों से डांड संभालने पड़ते हैं। मंजिल पार करने में दोनों का ही समान योगदान रहता है। ताली दोनों हाथों से बजती है। नारी की गरिमा बनाए रखने के लिए उसके सहयोग व समर्थन के लिए सभी को कृतज्ञ रहना चाहिए। उसके सम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं आने देनी चाहिए।

सबसे बड़ा अवरोध है– उपेक्षा। इसे कलह से भी बुरी किस्म का दुर्व्यवहार माना गया है। लड़ाई के पीछे अधिकार का भाव होता है, पर उपेक्षा के पीछे तो तिरस्कार की मान्यता बोलती है। उसके पीछे भर्त्सना भी छिपी रहती है। कोई काम कराना हुआ तो नौकर की तरह इशारा कर दिया, अन्यथा हर समय गुमसुम। न अपनी बात कहना, न दूसरे की सुनना। इस स्थिति को उपेक्षा कहते हैं। लड़ाई बर्दाश्त हो सकती है। कटुवचन भी सुने जा सकते हैं, क्योंकि इनके पीछे आपसी संबंध तो जुड़े रहते हैं। वे आज कडुए हैं तो कल सुधारे–संभाले भी जा सकते हैं, किंतु जहां उपेक्षा का, अवलेहना या परायेपन का भाव टपकता है, वहां भावनाशील नारी के लिए स्थिति असहाय हो जाती है।

अपने पिता का घर छोड़कर एक कन्या अपने साथ कुछ स्वप्न लेकर आती है। उनको वह साकार देखना चाहती है। उसे प्रेमलोक भी कहा जा सकता है। इसी के संबंध में वह विवाह से पूर्व भी रंग–बिरंगे सपने देखती रहती है। वहां एक नई

मान्यता के ऊपर अलौकिक प्रकार का प्यार, सौजन्य पर जब वस्तुस्थिति उससे ठीक विपरीत दीखती है तो उसका ॅदय टूट जाता है। आवश्यकता है कि नारी को अंतर्रात्मा से समझा जाए, उसे उचित सम्मान दिया जाए।

अतः नारी के बिना जीवन संभव नहीं है। यह सिद्ध हो चुका है कि नारी है तो हम हैं। जो हमारे लिए जीवन तक अर्पण कर देती है, ऐसी नारी को हम शत् शत् नमन करते हैं। ┐

50

महापुरुषों की मार्गदर्शिका नारी

–शिवानी, 11वीं
एस.के.आर. पब्लिक स्कूल
इन्द्रपुरी, दिल्ली

गृहस्थी की सुख–शांति, उत्थान सब उसके दृढ़ कंधों पर टिके हैं। देश के नागरिकों का सुशिक्षित होना, अनुशासनप्रिय होना सब उस के कंधों पर टिका है। बच्चे के लिए शिक्षा, सभ्यता, अनुशासन, शिष्टता सब नारी पर टिका है। किसी भी परिवार के बच्चे के लिए उसकी प्रथम पाठशाला घर ही है जिसकी प्रधानाचार्या वह स्वयं ही है।

भारतीय नारी मातृत्व की गरिमा से मंडित है। धार्मिक अनुष्ठानों में सहधर्मिणी है। गृह की व्यवस्थापिका होने के कारण गृह स्वामिनी है। वह जननी होने के साथ–साथ सृष्टि की निर्माता भी है। पुरुष को पुत्र प्रदान कर उसे पितृऋण से मुक्त करती है। पुत्री देकर संसार के अस्तित्व की रक्षा करती है। हर रूप में वह पूज्या है। वह रस लेती है अपने मायके में लक्ष्मी की तरह लहराती है। अपने ससुराल में पत्नी रूप में भारतीय नारी ऐश्वर्यशालिनी है। इसलिए मनु ने कहा है, *'यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'*। नारी परामर्श में मंत्री, गृह–कार्य में दासी, धर्मकार्य में पत्नी, सहिष्णुता में पृथ्वी, स्नेह करते हुए माता, विलास में रम्भा तथा क्रीड़ा में मित्र का स्थान रखती है। प्रसाद ने नारी के इसी महान् रूप पर कहा है –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत–सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।।

नारी सृष्टि–निर्माण की एकमात्र स्वामिनी है। वह प्रणय सुख और रति आनंद की एकमात्र अधिकारिणी है। इस सुख और आनंद की प्राप्ति के लिए पुरुष उसे अर्द्धांगिनी बनाता है, प्रेयसी के रूप में उसकी अर्चना करता है। भारतीय नारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा लिखती हैं *'आदिम काल से आज तक विकास–पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व चेतना और ॅदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है*।

भारतीय नारी स्नेह और सौजन्य की देवी है। वाणी से उसके जीवन को अमृतमय बनाती है, उसके नेत्रों में आनंद के दर्शन होते हैं। वह संतप्त ॅदय की शीतल छाया है, उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है। उसकी करुणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर ही समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं।

जहां पर परिवार की बात है, उसके विकास में तो उसका योगदान सराहनीय है। आज नारी अबला न होकर सबला है। अपनी शिक्षा के बल पर उसने सफलता के जो सोपान पार किए हैं, उसे देखकर आज पूरा विश्व आश्चर्यचकित हो गया है। पर उसके साथ ही उसने अपने परिवार का दायित्व भी बखूबी निभाया है। वह कुशल गृहिणी के रूप में अपनी परिवार की नौका की पताका है। अपने बुद्धिबल, त्यागमयी जीवन से इस नौका को तूफान केथपेड़ों से बचाती आई है। गृहस्थी की सुख–शांति, उत्थान सब उसके दृढ़ कंधों पर टिके है। देश के नागरिकों का सुशिक्षित होना, अनुशासनप्रिय होना सब उस के कंघों पर टिका है। बच्चे के लिए शिक्षा, सभ्यता, अनुशासन, शिष्टता सब नारी पर टिका है। किसी भी परिवार के बच्चे के लिए उसकी प्रथम पाठशाला घर ही है जिसकी प्रधानाचार्या वह स्वयं ही है। वह जो चाहे अपने बच्चों को बना सकती है।

विश्व में भारत के जितने भी महापुरुष हुए, उन सबकी मार्गदर्शिका उनकी माता है। सुभाषिणी पुतलीबाई के संस्कार ज्यों के त्यों बालक मोहन में आए। जीजाबाई ने घर पर अपने पुत्र शिवाजी को शिक्षा दी। महादेवी वर्मा ने कबीर, मीरा के गीत अपनी माता से सुने थे। ऐसे और भी कई उदाहरण हैं जिनके जीवन का उत्थान गृह लक्ष्मियों पर आधारित रहा। एक परिवार में नारी जितना उपकार कर सकती है, उतना कोई दूसरा नहीं। परिवार में कष्ट के समय एक मित्र की भांति परामर्श देती है। सुख के समय गुरु की भांति बुरे मार्ग पर चलने से अपने बच्चों को रोकती है। भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बना कर अपने परिवार को आनंदित करती है।

अपने परिवार की भलाई के लिए आय और व्यय का हिसाब भी आर्थिक संकट से बचने के लिए सुचारू रूप से वह करती है। गृहकार्य में आत्मनिर्भर बनने के लिए स्वयं भी कार्य करके परिवार के विकास में पूरा सहयोग देती है। घर की व बच्चों की स्वच्छता सभी पर वह पूरा ध्यान देती है। सभी देवताओं व तीर्थों का दर्शन वह अपने परिवार में ही करती है। वह सहनशीलता के गुणों से भरी हुई है। अपने परिवार को ऐसे संजो कर रख सकती है कि उसको किसी की बुरी नजर न लग जाए।

कोई भी परिवार आदर्श परिवार तभी तक नहीं कहा जा सकता है जब तक नारी उसको दृढ़ता से एकजुट नहीं रखती। उस परिवार के प्रत्येक सदस्य का ध्यान रखना, उसके अंदर अपनी संस्कृति के प्रति आदर का भाव जगाना, एक सफल नागरिक बनाना यही उसका उद्देश्य है। बिना उसकी उपस्थिति के परिवार परिवार नहीं कहला सकता। परिवार का सम्पूर्ण विकास निश्चित रूप से नारी ही करती है। ┐

51

पग–पग पर स्त्री की जरूरत

–रेखा शर्मा, 10वीं
राजश्री बाल भारती शिक्षण संस्थान
रतनगढ़, चूरू (राजस्थान)

शिक्षित नारी सभी प्रकार से अपने पारिवारिक जीवन को सुखी और आनंदपूर्ण बना सकती है। वर्तमान में हमारे समाज में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ रहा है तथा जनसंख्या वृद्धि से भी कुछ मान्यताएं बदली हैं। इस कारण अब शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक माता–पिता कन्याओं को सुशिक्षित करना चाहते हैं।

पुरुष और स्त्री मानव समाज रूपी रथ के दो पहिये हैं। इन दोनों की ही सहायता से हमारा सामाजिक जीवन गतिशील रहता है। समाज की प्रगति के लिए दोनों का सहयोग आवश्यक है, क्योंकि दोनों का जीवन एक–दूसरे का पूरक रहा है। स्त्री के बिना पुरुष अपूर्ण है और पुरुष के बिना स्त्री। जीवन के कार्य क्षेत्र में संघर्ष करते हुए पुरुष को नारी–सहायता की पग–पग पर आवश्यकता होती है। पुरुष का पारिवारिक जीवन नारी पर ही निर्भर है। समाज का कल्याण इसी बात में निहित है। पुरुष और स्त्री दोनों ही सुशिक्षित हों तथा अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों का पालन उचित रीति से करते हुए एक–दूसरे को सुखी और आनंदपूर्ण बनाएं। इस तरह वे मानव–समाज के अभ्युदय में सहयोगी बनें।

यह तभी संभव है जब समाज की दोनों इकाइयों पूर्ण हों। जिस प्रकार रथ के एक पहिए में विकार आने पर वह आगे नहीं चल सकता, उसी प्रकार एक वर्ग दूसरे वर्ग की अपेक्षा हीन और कमजोर रहे, तो समाज रूपी रथ आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए पुरुष और स्त्री दोनों को ही समान अधिकार प्राप्त होना आवश्यक है। पुरुष को शिक्षा आदि की जो सुविधाएं प्राप्त हैं, नारी–जाति को भी वे प्राप्त होनी चाहिए, इसी में पुरुष–वर्ग और समाज का कल्याण है।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के अंदर छिपी हुई शक्तियों को प्रकाश में लाकर उसे जीवन के कार्य क्षेत्र के लिए सब प्रकार से योग्य बनाना है। शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य जीवन को अधिक विवेकशील, सुसभ्य और सुसंस्कृत बनाना है, जिससे की वह अपने जीवन को अधिक सुखी और आनंदपूर्ण बना सके। इसलिए चाहे पुरुष को अथवा स्त्री, इन दोनों के लिए शिक्षा समान रूप से उपयोगी है। स्त्रियों के लिए तो शिक्षित होना इसलिए और भी आवश्यक है कि मनुष्य जीवन की सफलता और असफलता का बहुत कुछ श्रेय नारी की शिक्षा–दीक्षा और विवेक शक्ति को ही है।

नारी अपने वास्तविक रूप में पुरुष की परामर्शदात्री है। आनंद के अवसरों पर वह पुरुष की सहयोगिनी, विपत्तियों और कठिनाइयों में सहायक तथा नित्य प्रति के जीवन में सहकारिणी है। यही नहीं, शिक्षित और गृहकार्य में कुशल नारियां आकस्मिक कठिनाइयों के समय बड़े धैर्य से काम लेती हैं और चतुरता से उनका निराकरण करती हैं। जीवन की विषम परिस्थितियों में सुलझा हुआ दिमाग रखती हैं।

कहने का अभिप्राय यही है कि एक शिक्षित नारी सभी प्रकार से अपने पारिवारिक जीवन को सुखी और आनंदपूर्ण बना सकती है। वर्तमान में हमारे समाज में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ रहा है तथा जनसंख्या वृद्धि से भी कुछ मान्यताएं बदली हैं। इस कारण अब शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक माता–पिता कन्याओं को सुशिक्षित करना चाहते हैं।

सुशिक्षित कन्या ही भविष्य में आदर्श गृहिणी बन सकती है। उससे ही परिवार सुख–समृद्धि से सम्पन्न हो सकता है। इस धारणा से शहरों में नारी शिक्षा का प्रसार हो रहा है। सरकार तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा भी महिला शिक्षा को गति दी जा रही है। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में अभी इतनी प्रगति नहीं हो पा रही है। सरकार द्वारा सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत कन्या शिक्षा पर ध्यान दिया जा रहा है। कन्याओं को स्कूल स्तर की शिक्षा निःशुल्क दी जा रही है। महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाये जा रहे हैं तथा उनके लिए रोजगार के नये–नये क्षेत्र खोले जा रहे हैं। शिक्षित नारी अपने घर–परिवार का सही ढंग से संचालन करती है। अपनी संतान को अच्छे संस्कार देती।

वर्तमान अर्थ–प्रधान युग में शिक्षित नारी धनोपार्जन में पति का पूरा सहयोग करती है। अपने पैरों पर खड़ी हो कर आपदाओं का निवारण कर सकती हैं। वह सिलाई–बुनाई आदि से लेकर उद्योग–व्यवसाय तक सम्भाल सकती है। पुरुष की सच्ची अर्द्धांगिनी बनकर परिवार में आनंद एवं सुख–सम्पन्नता का संचार करने में सक्षम रहती है।

नारी–जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य अपने बालकों का पालन–पोषण है। यह कार्य उसके जीवन के लिए ही नहीं, राष्ट्रीय जीवन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चे देश के भावी कर्णधार हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि बच्चों के व्यक्तित्व का स्वस्थ निर्माण बचपन से ही हो। प्रारंभ से ही उनमें अच्छे संस्कारों के बीज डाले जाएं। यह कार्य बालक की माता पर निर्भर है। बालक का परिवार ही उसका प्रारंभिक स्कूल है और माता उसकी आदि गुरु है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पुरुष और स्त्री का जीवन–क्षेत्र भिन्न है। पुरुष का क्षेत्र घर से बाहर है, नारी का घर के भीतर। इस समस्या के कारण नारी समाज पर अत्याचार हो रहे हैं। समाज में नर और नारी को समान अधिकार मिलने से समाज उन्नति कर सकेगा। सुखी गृहस्थ जीवन भी उसी स्थिति में संभव है जब नारी को सम्मान मिले। ┐

52

स्त्री नहीं तो परिवार नहीं

–दीक्षा गुप्ता
एम. एम. सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल
राणा प्रताप बाग, नई दिल्ली

पत्नी परिवार का आधार है, उसका जीवन–प्राण है। पत्नी गृहस्थी का मूल है। ऋग्वेद के अनुसार पत्नी ही घर–परिवार है। दूसरी ओर, मानव भूतल पर जन्मतः ऋषि–ऋण, देव–ऋण एवं पितृ–ऋण का ऋणी है। पत्नी यज्ञ में पति के साथ रहकर देव–ऋण से तथा पुत्रोत्पन्न कर पितृ–ऋण से मुक्त करवाती है।

परिवार में नारी की भूमिका विशेष रूप से पुत्री, पत्नी और माता के रूप में है। इन तीनों रूपों में भी परिवार में पत्नी का स्थान सर्वोपरि है। महादेवी वर्मा के शब्दों में *'आदिम काल से आज तक विकास–पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व–चेतना और ॅदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है*। माता के रूप में वह ममतायी बनकर संतान के लिए अखण्ड सुख–ऐश्वर्य की कामना करती है। पुत्री का महत्व तो स्वयंमेव निर्धारित है, क्योंकि पत्नी और माता इसी के विकसित रूप है।

पत्नी परिवार का आधार है, उसका जीवन–प्राण है। पत्नी गृहस्थी का मूल है। ऋग्वेद के अनुसार पत्नी ही घर–परिवार है। दूसरी ओर, मानव भूतल पर जन्मतः ऋषि–ऋण, देव–ऋण एवं पितृ–ऋण का ऋणी है। पत्नी यज्ञ में पति के साथ रहकर देव–ऋण से तथा पुत्रोत्पन्न कर पितृ–ऋण से मुक्त करवाती है।

भारतीय नारी पारिवारिक रूप में इसलिए महत्व पाती है क्योंकि उसके अनेक रिश्ते हैं। वह सास होती है, बहू होती है, बेटी होती है, बहन होती है, ननद होती है, भाभी होती है, जेठानी होती है, देवरानी होती है और न जाने क्या–क्या होती है। इन सबके साथ वह पत्नी भी होती है। इन सारे संबधों का जो शील के साथ निर्वाह कर पाती है, उसी का भारतीय परिवार में महत्व है।

पत्नी परिवार की स्वामिनी है। परिवार की श्री–समृद्धि की धुरी है। वंश–वुद्धि की नींव है। मानव के कामातुर जीवन का पूर्ण–विराम है। परिवार की चहुंदिश देख–भाल उसका दायित्व है। पतिपरायणता उसका कर्त्तव्य है। पत्नी स्नेह और सौजन्य की देवी है, वह पशु रूपी नर को मनुष्य बनाती है, मधुर वाणी से पारिवारिक जीवन को अमृतमय बनाती है। उसके नेत्रों में पारिवारिक आनंद के दर्शन होते हैं। वह संतप्त ॅदय के लिए शीतल छाया है। उसके हास्य में परिवार में छाई निराशा को मिटाने की अपूर्व शक्ति है।

स्कन्द पुराण में परिवार में मातृ रूप की कल्पना इस प्रकार है –*'शिशोः शुश्रू–षणाच्छक्तिर्माता स्यान्माननाच्च सा* अर्थात् शिशु की शुश्रुषा करने से माता को शक्ति और सदा सम्मान देने के कारण उसे माता कहते हैं। मातृत्व नारी की दीर्घ तपस्या है। मनुष्य वैसा ही बनता है, माता उसे जैसा बनाती है। इसलिए नेपोलियन का कहना है –*'बच्चे का भाग्य सदैव उसकी मां की वृत्ति है* माता का ॅदय बच्चे की पाठशाला है। माता की कोमल गोद ही शांति का निकेतन है। मां के ममत्व की एक बूंद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है।

पृथ्वी की सी सहिष्णुता, समुद्र की सी गंभीरता, हिम की शीतलता, पुष्पों की सी कोमलता, नम्रता, गंगा की सी पवित्रता, वीणा की सी मधुरता, गौ की सी साधुता, हिमालय की सी उच्चता, तथा आकाश की सी विशालता आदि सौम्य गुणों द्वारा माता ही परिवारिकता, अखण्डता स्थिर रख, श्री सम्पत्ति की वृद्धि करती है।

माता बच्चे को जन्म देकर पुरुष को पितृऋण से मुक्त कराती है। वह तन–मन–धन से एकाग्रचित, आत्मविस्मृत हो शैशव में आत्मज की सेवा–शुश्रुषा करती है। बाल्यकाल में संतान की शिक्षा–दीक्षा की पूर्ति के लिए सतत् चिंतित रहती है। पेट

को काटकर भी संतान की ज्ञान–वृद्धि करना चाहती है। समय पर भोजन एवं स्वच्छ वस्त्रों का प्रबंध तथा पाठ्य वातावरण उत्पन्न कर संतान को ज्ञानवान बनाने में सहायक बनती है।

पुत्री की परिवार में भूमिका कालांतर में पत्नी और मां की पृष्ठभूमि है। अतः पुत्री की भूमिका आदर्श पत्नी, कुशल गृहिणी तथा उदात्त मातृत्व के गुणों का शिक्षणकाल है। वह परिवार में रहकर दया, ममता, सेवा, धैर्य, सहानुभूति तथा विनय के सौम्य गुणों को सीखती है। शिक्षा–अर्जन कर ज्ञान का वर्द्धन करती है। बुद्धि का विकास करती है। जीवन और जगत के लिए व्यावहारिक सिद्धांतों, मान्यताओं तथा भावनाओं का प्रयोग करती है।

पुत्री परिवार में रहकर मां की भूमिका, पिता के व्यवहार, भाई–बहनों के आचरण को खुली आंखों से देखती है। बुद्धि के अनुसार उसका विवेचन करती है। सत्–प्रणाली को गांठ बांधती है। दुष्कर्मों की हानि से सचेत रहने की शिक्षा ग्रहण करती है। माता के सहयोग से वह नारीत्व के कर्त्तव्य और अधिकार का ज्ञान प्राप्त करती है। प्रयोग रूप में वह घर के कामकाज में हाथ बंटाती है। पिता के सहयोग से जीवन और जगत के कष्टों को झेलने, उनके निराकरण के उपाय तथा जीवनयापन के गुर ग्रहण करती है। भाई–बहनों के सहयोग से श्रेष्ठ आचरण तथा कुशल व्यवहार की अभ्यस्त बनती है।

नारी के बिना परिवार की कल्पना मृग मरीचिका है। नारी के सौम्य गुणों के अभाव में परिवार की सुख–शांति असंभव है। नारी की कर्त्तव्य उपेक्षा में परिवार की क्षति है। नारी के अमंगल में परिवार का विनाश है। नारी की पीड़ा में परिवार का ध्वंस है।

53

नारी बिना नर की कल्पना असंभव

–बी. सुमन, 10वीं
सेंट फिलिप्स हाई स्कूल
किंग कोटी, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश

प्रकृति और पुरुष का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। प्रकृति के बिना पुरुष अधूरा है। प्रकृति के बिना पुरुष के अस्तित्व की कल्पना कर सकना भी असंभव है। इसी तरह नारी के बिना नर का जीवन अधूरा है। नारी के बिना नर के जीवन की कल्पना भी असंभव, अपूर्ण और अविश्वसनीय है।

वेद कालीन भारतीय समाज में नारी को महिमामय जगह मिली हुई थी। उन्हें देवी का पद प्राप्त था। लोपा, घोषा आदि नारियों ने वेदों के मंत्रों की रचना भी की थी। उसे पूरी आजादी मिली हुई थी। मैत्रेयी, गार्गी आदि ने अपने ज्ञान से पुरुषों को भी चकित कर दिया था। विवाहित नारी घर की साम्राज्ञी थी और कोई भी यज्ञ उसके बिना पूरा नहीं हो सकता था। अश्वमेध यज्ञ करते समय राम को सीता की सोने की प्रतिमा बनवानी पड़ी थी। स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी माना गया। मनु ने कहा *'जहां नारी की पूजा होती है, वहीं देवता रमण करते हैं'।* रामायण, महाभारत, शतपथ ब्राह्मण आदि महाकाव्यों एवं ग्रंथों में सदा नारी को ऊंचा स्थान दिया गया है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में नारी को महिमामय, श्रेष्ठ, उच्च और गरिमामय स्थान प्राप्त था। स्त्री एक ऐसी सदस्य है जो पूरे परिवार का ख्याल रखती है। यदि स्त्री शिक्षित हो तो उसका पूरा परिवार भी शिक्षित हो सकता है। स्त्री अपने जीवन का हिस्सा एक बेटी, पत्नी और मां बनकर पूरा करती है। वह हर एक चीज को सम्भाल लेती है। बच्चों का ध्यान रखना, अपने पति का ध्यान रखना, अपने परिवार के हर सदस्य का ध्यान रखना उसका कर्त्तव्य होता है। हम जो भी खाने के लिए तड़पते हैं, वह खिलाती है। जब हमें रात को नींद नहीं आती है, उस वक्त वह लोरी सुनाकर हमें सुलाती है। प्रति दिन हमें समय पर जगाती है और हमें तैयार कर स्कूल भेजती है। स्त्री चाहे तो बहुत कुछ कर सकती है –जैसे कभी स्त्री दुर्गा बनकर राक्षसों का सर्वनाश भी कर सकती है।

प्रकृति और पुरुष का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। प्रकृति के बिना पुरुष अधूरा है। प्रकृति के बिना पुरुष के अस्तित्व की कल्पना कर सकना भी असंभव है। इसी तरह नारी के बिना नर का जीवन अधूरा है। नारी के बिना नर के जीवन की कल्पना भी असंभव, अपूर्ण और अविश्वसनीय है।

भारतीय दर्शन में शिव की कल्पना अर्धनारीश्वर के रूप में की गई है। शिव के शरीर के आधे भाग को स्त्री और आधे भाग को पुरुष रूप में माना गया है। यह कल्पना इस बात का प्रमाण है कि भारतीय समाज में स्त्री को कितना आदरणीय और पूजनीय स्थान प्राप्त था। प्राचीन भारतीय समाज में नारी को किसी तरह भी पुरुष के समाज में नीचा नहीं माना जाता है। उसे पुरुष के समान और कहीं–कहीं उससे भी ऊंचा स्थान प्राप्त था।

स्वाधीन देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दशा बदलने के साथ–साथ लोगों का दृष्टिकोण, विचारधारा, चिंतनशैली और जीवन–दर्शन भी बदल जाता है। अतः स्वतंत्र भारत में नारी के प्रति पुरुष समाज के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। आज नारी को राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, समान साधन–सुविधाएं और अधिकार प्राप्त हैं जो अब तक केवल पुरुषों को ही प्राप्त थे।

जीवन के हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली भारतीय नारी आज समाजशास्त्र, साहित्य, मनोविज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शन विज्ञान, जीवशास्त्र, चित्रकला, मूर्तिकला, टेक्नोलॉजी आदि सभी विषयों में पुरुषों से निरंतर होड़ ले रही है। उसकी शिक्षा–दीक्षा और व्यक्तित्व के विकास के नव–नवीन क्षितिज दिनो–दिन खुलते जा रहे हैं। दिन–प्रतिदिन उसके लिए नए–नए क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है। निश्चय ही वह दिन दूर नहीं, जब भारतीय नारी पुरुष की सच्ची सहचरी होने का गौरव प्राप्त कर लेगी।

प्रवृत्ति, स्वभाव और सामर्थ्य के विचार से कार्य–विभाजन के सिद्धान्तानुसार पुरुष का कार्यक्षेत्र यदि घर के बाहर है तो स्त्री का कार्यक्षेत्र घर है, परिवार है। अतः घरेलू शिक्षा स्त्री–शिक्षा का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना नारी–शिक्षा अधूरी रह जाएगी। नारी अपने शील, स्नेह और धैर्य आदि गुणों के कारण घर की अनेक समस्याओं को सहज की कुशलता, परिश्रम और सतर्कता से सुलझा लेती है।

घरेलू शिक्षा, शिक्षा का एक व्यापक विषय है। इसमें घर संबंधी सभी महत्वपूर्ण समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। भोजन बनाना, घर के सामान की उचित देख–भाल करना, घर की सफाई, बर्तनों की देख–भाल तथा स्वच्छता, कपड़ों की सफाई व सुरक्षा, सिलाई–कढ़ाई, रोगी की सेवा आदि का सामान्य ज्ञान घरेलू शिक्षा के मुख्य अंग है। घरेलू शिक्षा से अनभिज्ञ स्त्री घर की गति एवं प्रबंध का ठीक से संतुलन नहीं रख सकेगी। स्त्री शिक्षा को पूर्ण एवं सार्थक बनाने के लिए आवश्यक है कि उन्हें समुचित और विधिवत शिक्षा दी जाए। ┐

54

नारी जीवन के विकास का प्रतीक

–ज्योति निम, 9वीं
सावित्री पब्लिक स्कूल
संगम विहार, नई दिल्ली

ममता और वात्सल्य के अभाव में बच्चों का जीवन पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता है। 'स्व' के भविष्य–चिंतन ने संतति के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। नारी के सृजन–स्वभाव, स्नेह और सहानुभूति से बनी गृहस्थी जल उठी।

भारतीय नारी वैदिक काल से सामाजिक दृष्टि से परम उच्च पद पर प्रतिष्ठित है। पंचकन्या रूप में प्रातः स्मरणीया है। समाज उसके वात्सल्यमय आंचल में स्थान पाता है, इसलिए माता के नाते पूज्या है। निःस्वार्थ समाज सेवा की सुधा बांटती देवी है। त्याग के बल पर समाज की साम्राज्ञी है। सत्य–आनंद की स्रोतस्विनी के नाते वह समाज की मोहिनी है।

नारी सदा सामाजिक संस्था बनकर दीप्त रही है। अपने मायके में वाणी की तरह और लक्ष्मी की तरह लहराती रहती है। अपने ससुराल में नारी किसी की ननद है, किसी की भाभी, किसी की जेठानी, किसी की देवरानी, किसी की सास, किसी की बेटी, किसी की चाची, मौसी, दीदी, बुआ और किसी की पत्नी आदि। इन संबंधों में एक होकर वह पूर्ण प्रस्फुटित कमल बनती है। तभी उसके भीतर पराग भरता है।

नारी एक ओर प्राकृतिक सृजन शक्तियों के उदार मानवीकरण के नाते जीवन के विकास का प्रतीक बनी वहीं दूसरी ओर सामाजिक सदस्य के रूप में सर्वाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद पर आसीन हुई। नारी मानव मुक्तिदात्री मानी गई। सरस्वती ज्ञान का, झंडा मेघा का, पृथ्वी मातृशक्ति का प्रतीक बनी। नारी में महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली की विविध शक्तियों का सामंजस्य हुआ है।

नारी का दूसरा रूप है गृहस्वामिनी का। पति में प्रभु की मूर्ति प्रतिष्ठित करके वह अपने सर्वस्व का समर्पण कर देती है और आत्मसमर्पण इतना पूर्ण, इतना गंभीर, इतना व्यवस्थित कि कोई संकट, कोई विपदा उसको स्वात्मस्थिति से अलग करने में समर्थ नहीं हुई। परिणामतः वह पति की गृह सम्राज्ञी बनी।

जब–जब समाज में नारी सम्मान को चुनौती मिली है तो साध्वी पत्नी को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी, सभी भाइयों की भोग्या बनना पड़ा, द्यूत क्रीड़ा में धन संपत्ति के समान दांव पर लगना पड़ा। संदेश मात्र से अग्नि ज्वाला में झुलसी देवताओं के मनोरंजन के लिए देवदासी बनी और पुरुष के मनोरंजन के लिए गणिका।

नारी के लिए सर्वाधिक प्रचलित शब्द है स्त्री। महर्षि पतंजलि के अनुसार नारी के भीतर गर्भ की स्थिति के कारण उसे स्त्री की उपाधि से विभूषित किया गया है। परिवार की सुख सुविधा का दायित्व नारी है। कार्य की अधिकता ने नारी की कोमलता को छीन लिया है और वह नीरस होती जा रही है। ममता और वात्सल्य के अभाव में बच्चों का जीवन पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता है। 'स्व' के भविष्य–चिंतन ने संतति के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। नारी के सृजन–स्वभाव, स्नेह और सहानुभूति से बनी गृहस्थी जल उठी।

आधुनिक युग में, विशेषकर स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक परिस्थिति और वैधानिक दृष्टि से भारत की नारी अधिक अधिकार सम्पन्न हुई, समाज में प्रतिष्ठित हुई। आज वह केवल पत्नी, माता आदि संबंधों के द्वारा ही अपना परिचय नहीं देती अपितु अपने आपको राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में उपस्थित करती है।

जलती गृहस्थी में नारी का मनोबल और आत्म विश्वास खण्डित हुआ है। वह परिवार में व्यंग्यपूर्ण उपेक्षा की पात्र बनी। कोई भी स्वाभिमानी नारी हर क्षण चरित्र–परीक्षा देने को अपमान ही मानती है। वह घर में पति की सेवा, सास–ससुर की सेवा और प्यार से परिवार को आगे बढ़ाती है। पति के लिए खाना बनाना, कपड़े धोकर देना आदि सब काम करती है। नारी घर के

काम के साथ बच्चों की देखभाल, स्कूल से लाना और छोड़ना, स्कूल का काम कराना आदि सब करती है। वह अपने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत–पूजापाठ भी करती है। जिस घर में नारी नहीं होती, अधिकतर ऐसे घरों के बच्चे बीमार रहते हैं। क्योंकि उनका भरण–पोषण ठीक नहीं हो पाता। ┐

55

अक्षय शक्ति का पर्याय है नारी

–मोनिका शर्मा, 10वीं ए
आर्मी स्कूल
रानीखेत, उत्तराखण्ड

आज का हर वह समाज या परिवार उन्नति के मार्ग पर है जिसमें महिलाएं आगे बढ़कर सहयोग कर रही हैं। उन्नति का अर्थ केवल आर्थिकोपार्जन से ही नहीं है वरन् उसकी संतान की परवरिश और परिवार जनों में मेल–मिलाप, सहयोग व शांति भी है और इस यह नारी पर निर्भर है।

महादेवी वर्मा ने नारी की महान्ता के बारे में लिखा है *–'नारी केवल मांस पिण्ड की संज्ञा नहीं है, आदिकाल से आज तक विकास–पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सफल बनाकर, उसके अभिशाओं को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर जिस व्यक्तित्व चेतना का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है*।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नारी धरा पर स्वर्गीय ज्योति की साकार प्रतिमा है। उसकी वाणी जीवन के लिए अमृत स्रोत है। उसके नेत्रों से करुणा, सरलता और आनंद के स्रोत फूटते रहते हैं। उसके हास्य में संसार की समस्त निराशा और कडुवाहट मिटाने की अपूर्व क्षमता है। संसार के सभी महापुरुषों ने नारी में उसके दिव्य स्वरूप के दर्शन किये हैं जिससे वह पुरुष के लिए पूरक सत्ता की ही नहीं वरन् उर्वरक भूमि के रूप में उसकी उन्नति, प्रगति एवं कल्याण का साधन बनती है। परिस्थितिवश–स्वभाववश नारी कितनी ही कठोर बन जाये किंतु उसकी वह सहज कोमलता कभी ओझल नहीं हो सकती जिसके पावन अंक में संसार की इकाइयां यानी कि परिवार को जीवन मिलता है। मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में *–'नारी पृथ्वी की भांति धैर्यवान, शांत और सहिष्णु होती है*।

क्या मां के अतिरिक्त संसार में ऐसी कोई हस्ती है जो शिशु को जन्म देकर उसकी सेवा, पालन–पोषण कर सके। संसार में जहां–तहां भी चेतना साकार रूप में मुखरित हुई है, उसका एक मात्र श्रेय नारी को ही जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि नारी निर्मात्री शक्ति है। वह समाज का, परिवार का भरण–पोषण व सम्वर्धन करती है। नारी अपने विभिन्न रूपों में सदैव मानव जाति के लिए, परिवार जनों के लिए त्याग, बलिदान, स्नेह, श्रद्धा, धैर्य, सहिष्णुता का जीवन बिताती है। माता–पिता के लिए आत्मीय सेवा की भावना जितनी पुत्री में है, वैसी अन्यत्र नहीं होती है।

किसी भी परिवार का निर्माण स्त्री–पुरुष के योग से ही होता है। इसमें नारी का स्थान विशिष्ट होता है क्योंकि पुरुष का परिवार–सृजन में साधारण सा कार्य होता है जबकि असली व मुख्य दायित्व नारी ही निर्वाह करती है। संतान धारण करने से लेकर उसको जन्म देने और पालन–पोषण करने का सारा दायित्व एक मात्र नारी ही उठाती है। परिवार का प्रजनन, पालन–पोषण व उसका मार्ग दर्शन मात्र नारी की कृपा पर ही निर्भर करता है।

परिवार को एक सूत्र में बांधे रखना, उसकी व्यवस्था बनाना नारी के हाथ में होता है। यदि वह अपने दायित्व से विमुख हो जाये या उपेक्षा बरतने लगे तो कुछ ही समय में व्यवस्थित परिवार लड़खड़ा जायेगा। तब ऐसी नारी–निर्मात्री, धात्री और व्यवस्थापिका जैसी पूजा–पात्री का तिरस्कार, अपमान, उपेक्षा अथवा अवहेलना कर पाना कहां तक संभव होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि नारी का सहयोग परिवार के विकास के लिए आवश्यक है, अनिवार्य है। वह परिवार उन्नति नहीं कर सकता जो अपने आधार को (नारी को) अपनी शक्ति दात्री को समुचित स्थान नहीं देता, उसे उसके अधिकार नहीं देता।

नारी देश, काल, समाज व परिवार की आवश्यकतानुसार संतानों को गढ़ती है और इसे वह अपना कर्त्तव्य समझकर बिना किसी घमंड के निभाती रहती है। जब–जब देश को, समाज को आवश्यकता हुई है, उसने संत, महात्मा, त्यागी, बलिदानी, दानी, योद्धा और वीरों को गढ़ा है और हंसते–हंसते उन्हें देश–सम्मान पर कुर्बान कर दिया है। अगर समग्र दृष्टि से देखा जाये तो नारी जैसा दानवीर इस मनुष्य जाति में शायद ही कोई मिलेगा।

नारी शिक्षा के संबंध में आज भी समाज में कई भ्रांतियां हैं। काफी कुछ बदलाव आया है पर पूर्णरूपेण अभी भी नहीं। लोगों की यह मान्यता कि स्त्री शिक्षा से अनर्थ, अनाचार व उपद्रव खड़े होते हैं, परिवार टूटते हैं। इस प्रकार की आशंका प्रकट करने वाले व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जापान आदि विकसित देशों की उन्नति केवल पुरुष वर्ग ने नहीं की है वरन् इसमें नारी ने आगे बढ़कर अहम् भूमिका भी निभाई है।

आज का हर वह समाज या परिवार उन्नति के मार्ग पर है जिसमें महिलाएं आगे बढ़कर सहयोग कर रही हैं। उन्नति का अर्थ केवल आर्थिकोपार्जन से ही नहीं है वरन् उसकी संतान की परवरिश और परिवार जनों में मेल–मिलाप, सहयोग व शांति भी है और इस यह नारी पर निर्भर है। महिलाओं ने आज राष्ट्र को एसी संतानें दी हैं जो देश को आसमान की ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए कटिबद्ध हैं। महिलायें स्वयं भी उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त हैं। इस सब को देखते हुए हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार नारी है। ┐

हर रूप में महान् है स्त्री

–सुनीता नेगी, 11वीं बी
राज. व. मा. कन्या विद्यालय नं. 2
उत्तम नगर, नई दिल्ली

व्यक्ति घर में संतुष्ट रहे बिना बाहर कुछ भी नहीं कर सकता। परिवार के पुरुषों के साथ नारी विभिन्न रूपों में संयुक्त होकर एक सुखी परिवार का निर्माण करती है। परिवार के बच्चों का भविष्य परिवार की स्त्रियों पर ही निर्भर करता है।

'*यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*। मनु ने वैदिक काल में कहा था 'जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं'। सृष्टि के आरम्भ से ही नारी उन्नत गुणों की सागर है। उसमें पृथ्वी के समान क्षमा, समुद्र के समान गम्भीरता, चन्द्रमा के समान शीतलता और पर्वतों के समान उच्चता है। नारी का अपना एक अस्तित्व है। वह सहनशीलता, स्नेह, त्याग की मूर्ति है। वह हर दुःख सह कर भी खुश रहने का प्रयास करती है। औरत, महिला, स्त्री और नारी ये सभी नाम एक ऐसी शक्ति के हैं जो परिवार ही नहीं अपितु समाज को सुचारू रूप से चलाती है।

जीवन की शुरुआत एक औरत से ही होती है और वह इस जीवन की कठिनाइयों, मुश्किलों, परेशानियों को आसानी से सुलझा लेती है। एक औरत ही ऐसी प्रणाली है, जिसे ईश्वर भी पूजता है। हर मनुष्य का जन्म एक मां से ही होता है, फिर नारी एक बहन के रूप में भाई को प्रेरणा देती है, फिर वही औरत पत्नी बनकर हर कदम पर पुरुष का साथ देती है। परंतु हमारे समाज में औरत को कभी वह सम्मान नहीं दिया गया, जिसकी वह हकदार है।

पारिवार के सर्वांगीण विकास का आधार नारी ही है। व्यक्ति के लिए नारी की भूमिका या कर्त्तव्य अनेक दृष्टियों से अनिवार्य हैं। समाज में रहते हुए नारी परिवार के लिए अनेक प्रकार की भूमिका या कर्त्तव्य निभाती है। मां, बहन, पुत्री, बहू आदि के रूप में एक परिवार में उसकी महत्ता सहज स्पष्ट है। व्यक्ति घर में संतुष्ट रहे बिना बाहर कुछ भी नहीं कर सकता। परिवार के पुरुषों के साथ नारी विभिन्न रूपों में संयुक्त होकर एक सुखी परिवार का निर्माण करती है। परिवार के बच्चों का भविष्य परिवार की स्त्रियों पर ही निर्भर करता है। यदि स्त्री सुशिक्षित है तो वह बच्चों में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करेगी, उसे अच्छे संस्कार देगी। किसी समाज में कितने अच्छे और स्वस्थ बच्चे हैं, इसका सीधा संबंध उस समाज की नारियों के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। हम जानते हैं कि स्वस्थ परिवार ही स्वस्थ समाज की आधारशिला है।

ब्रह्मा की सबसे सुंदर रचना है तू,
खुदा का अभिमान है तू,
कितने ही हैं रूप तेरे,
हर रूप में महान् है तू।

व्यक्ति की आरम्भिक शिक्षा उसकी मां की गोद में ही होती है। मां ही बच्चे को आरंभिक ज्ञान देती है। बड़ा होने पर बच्चा मां के व्यक्तित्व से ही सबसे अधिक प्रभावित होता है। स्पष्ट है कि स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए स्वस्थ और सुयोग्य बच्चों का निर्माण कार्य नारी ही पूरा करती है। परंतु परिवार के उचित विकास और घर की सुव्यवस्था के लिए नारी का शिक्षित होना भी अनिवार्य है। हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह को तोड़ने की शिक्षा ली थी। इसका अर्थ यह है कि उसकी पहली गुरु उसकी मां ही थी। शिवाजी की माता ने शिवाजी को बनाया। गुरु तेग बहादुर की पत्नी 'माता गुजरी' ने अपने पुत्र और पोतों में शक्ति का संचार किया। बच्चों को सर्वाधिक प्रभावित उसकी माता ही करती है।

पत्नी के रूप में भी नारी पुरुष को प्रेरित करती है और कभी वह उसकी प्रेरणा बनती है। कालिदास को काव्य रचना के लिए उनकी पत्नी ने प्रेरित किया। तभी वह इतने बड़े कवि बन पाए। नारी चाहे तो क्या नहीं कर सकती। उस व्यक्ति का सामाजिक व सार्वजनिक जीवन भी असंतुलित और असंतुष्ट ही होगा जिसका पारिवारिक जीवन संतुष्ट नहीं रहता। पुरुष वर्ग

की संपूर्ण क्षमता का लाभ समाज को मिले, इस दृष्टि से भी नारी का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है तथा नारी के कर्त्तव्य भी बढ़ जाते हैं। नारी यदि अपने पति या किसी अन्य पुरुष का सहयोग न करे तो पुरुष कभी भी निश्चिंत नहीं हो सकता और शांति की सांस तक नहीं ले सकता।

एक कामकाजी नारी भी परिवार का सर्वांगीण विकास करती है। वह न केवल अपने कार्यालय की जिम्मेदारी निभाती है अपितु परिवार का भी ध्यान रखती है। पुरुष प्रायः ऐसा नहीं कर पाते। नौकरी करने में जहां स्त्री स्वयं में आत्मविश्वास का विकास करती है, वहीं अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को भी सुधारती है। आज के महंगाई के युग में केवल पुरुष की कमाई से घर चलाना कठिन प्रतीत होता है जबकि पत्नी के भी कामकाजी होने से परिवार की गाड़ी सरलता से चल सकती है।

अंततः हम यह कह सकते हैं कि नारी ही परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार है। वही बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करती है। सही अर्थों में माता ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है। स्त्री ही विभिन्न रूपों में कभी माता बनकर, कभी बहन, कभी बेटी, कभी बहू तो कभी गुरु बन कर परिवार को चलाती है अर्थात सम्भालती है। परंतु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि स्त्री व पुरुष परिवार रूपी रथ के दो पहिए हैं। जैसे एक पहिए के बिना रथ नहीं चल सकता है, स्वस्थ परिवार की संरचना दोनों के सशक्त होने पर निर्भर करती है। नारी परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार अवश्य है, परंतु परिवार रूपी रथ तभी चलेगा जब पुरुष भी परिवार के कार्यों में नारी का सहयोग करें। ┐

57

नारी से है सुखी समाज

–कृतिका ठाकुर, 9वीं
मित्तल इंटरनेशनल स्कूल
कोटा, राजस्थान

आकाश चाहे जितना असीम हो जाए, अंकुरण तो धरती के गर्भ से ही होता है। यू.एस.ए जैसा देश आगे बढ़े तो उसका कारण यही है कि वहां प्रत्येक नागरिक, चाहे वह पुरुष हो या नारी, सभी हर क्षेत्र में कार्य करते हैं।

वसुधा सी क्षमाशील, सागर सी गंभीर, सूर्य सी तेजस्वी, चन्द्र सी शीतल, सेवा की प्रतिमूर्ति, करुणा का सागर, इंसानियत का पैगाम देने वाली, दो परिवारों को जोड़ने वाली कड़ी नारी है। नारी परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार है। नारी भगवान की अद्वितीय रचना है। नारी के अभाव में सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसकी छाया तले सब परिवारजन अपनी सारी व्यथा को भूल जाते हैं।

नारी कोमलता, पवित्रता, मधुरता आदि दिव्य गुणों की प्रतिमूर्ति होती है। नारी ब्रह्म विद्या है। श्रद्धा है, शक्ति है, पवित्रता है, वह सब कुछ है जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। नारी कामधेनु अन्नपूर्णा सिद्धि है। संतान–शक्ति है। वह आदिकाल से उन सामाजिक दायित्वों को अपने कंधों पर उठाए जा रही है, केवल पुरुष के कंधों पर डाल दिया जाता तो वह कब का लड़खड़ा गया होता। जैक्स स्टीफन ने कहा है– *'स्त्री पुरुषों से अधिक बुद्धिमान होती है, क्योंकि वह जानती कम समझती ज्यादा है'*।

विष्णु के साथ लक्ष्मी, शिव के साथ पार्वती, राम के साथ सीता व कृष्ण के साथ राधा की आराधना नारी शक्ति की ही अर्चना है। गार्गी, मैत्रेयी की गौरवमयी परंपरा को भारतीय नारी ने आज तक निभाया है। पुरुष व समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरी ईमानदारी से निर्वाह किया है। शताब्दियों से कारावास भोगने वाली नारी आज करवट बदल रही है। आधुनिक समाज में नारी ने शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सुंदर परिचय दिया।

नारी अपनी बौद्धिकता, उच्च गुणों के कारण अपने परिवार को ऊंचाई के शिखर पर पहुंचा सकती है। समाज को सशक्त बनाने हेतु नारी और पुरुष दोनों को ही सोचना वह सक्रिय होना होगा। भारतीय पारम्परिक समाज में महिला विकास की सोच को उसकी स्वतंत्रता, स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। नारी परिवार व समाज की धुरी है।

घर की संकल्पना नारी पर अवलम्बित है। हर सफल पुरुष के पीछे एक नारी है। सोवियत रूस के पूर्व राष्ट्रपति खुश्चेव ने भारत को लेकर टिप्पणी की थी कि जिस देश की आधी आबादी उत्पादकता की दृष्टि से निष्क्रिय रहे, वह राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। उनका संदेश था कि भारत की आधी जनसंख्या यानी नारी समाज को देश की उत्पादकता में प्रत्यक्ष रूप से सहभागी बनाने की आवश्यकता है।

एक सार्वभौम स्वतंत्र राष्ट्र के लिए उसकी नारियां विकास के समस्त कार्यों, राष्ट्र नवनिर्माण की योजनाओं में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बराबर की भूमिका निभाये तभी एक शक्तिशाली राष्ट्र का अभ्युदय हो सकता है।

नारी कल भी नारी थी, नारी आज भी नारी है।
पुरुष कल भी आभारी था, पुरुष आज भी आभारी है।

आकाश चाहे जितना असीम हो जाए, अंकुरण तो धरती के गर्भ से ही होता है। यू.एस.ए जैसा देश आगे बढ़े तो उसका कारण यही है कि वहां प्रत्येक नागरिक, चाहे वह पुरुष हो या नारी, सभी हर क्षेत्र में कार्य करते हैं। नारी बच्चे को

जन्म देने से लेकर उसकी देखभाल, लालन–पालन, उसकी पढ़ाई सब जिम्मेदारियां बहुत अच्छे से निभाती है। वह अपने पति व परिवार की हर संभव मदद करती है।

पुरुष और नारी मिलकर शिवत्व का निर्माण करते हैं। पुरुष अपने पौरुष से परिवार व समाज को दृढ़ता एवं अनुशासन प्रदान करता है जबकि नारी अपनी ममता, त्याग, सेवा एवं श्रेष्ठ भावनाओं से समाज का पोषण करती है। दोनों ही मानव उत्थान के लिए अभिन्न इकाई हैं। सारा संसार एक घर चाहता है, जहां स्वर्गिक आनंद हो, शांति हो, सुरक्षा हो, व्यवस्था हो।

नारी ने ही मानवता के प्रेम को ग्रहण कर समर्पण भाव से घर को नियोजित करके सृजन किया है। निःस्वार्थ प्रेम विवाह की धारा त्रिमूर्ति नारी–ब्रह्मा जन्म देने वाली, विष्णु–पालन करने वाली, शिव–कल्याण के लिए संस्कार देकर परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार बनी है। हर क्षण वह शिवमय भावना से पूरित रहती है। समाज की मूलधारा से जुड़ी हुई स्त्री तपस्विनी की तरह उसे सिंचित करती है। नारी सशक्त परिवार व समाज की सजग शक्ति है, मेरुदंड है एवं सुखी परिवार का आधार है।
┐

58

समय बदला तो बदली नारी

–हुमेरा सुब्हान, 12वीं
सरस्वती विद्यालय
सरस्वती भवन, दरियागंज, दिल्ली

आज स्त्री तथा पुरुष दोनों को यह महसूस करना चाहिए कि वे एक–दूसरे के पूरक हैं। उनके संबंध समानता तथा पारस्परिक सम्मान की भावना पर आधारित होने चाहिए और एक अच्छे व खुशहाल परिवार के लिए नारी और पुरुष को एक दूसरे को समझना चाहिए।

परिवार में नर और नारी की उपमा रथ के दो पहियों से दी गई है। यदि दो पहिए समान हों, तो रथ ठीक प्रकार से चलता है, किंतु यदि एक पहिया बड़ा और दूसरा छोटा हो तो रथ ठीक रीति से नहीं चल सकता। यह बात हमारी संस्कृति में बहुत जोर देकर कही गई है। बाहरी आक्रमणों के प्रभाव से हम अपनी संस्कृति की अनेक विशेषताओं को भुला बैठे हैं। उन्हीं में से एक विशेषता यह थी कि नर तथा नारी का एवं पुत्र तथा पुत्री का परिवार में समान दर्जा है। परंतु परिवार में नारी की भूमिका नर से भी महत्वपूर्ण है। माता के रूप में वह अमृततुल्य दुग्ध व गंगा रूपी स्नेह की धारा बहा कर संतान को जीवन प्रदान करती है।

मां ही शिशु की प्रथम गुरु होती है। वही बच्चे को अपने कल्पित सांचे में ढालती है। वह उसे देवता भी बना सकती है और राक्षस भी। इसलिए नारी को शिक्षित करने की बहुत आवश्यकता है। पत्नी के रूप में वह पति की सारी थकान हरकर उसे आनंद प्रदान करती है और पुत्री के रूप में वह गृह–कार्यों में बढ़–चढ़कर हाथ बंटाती हुई संपूर्ण परिवार की सहायिका सिद्ध होती है।

सच्ची नारी वही है, जो सारे परिवार के भोजन, वस्त्र, विश्राम और स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखे। घर की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिए बाहर से सामान की व्यवस्था और उसे भली–भांति सहेज कर रखना, परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता को जानना–समझना, पति के आदेश का पालन करना, संतान की इच्छा पूर्ति करना, बड़े–बूढ़ों का आदर करना, अतिथियों का समुचित सत्कार करना उसी के कर्त्तव्य है। अपने कर्त्तव्यों का उचित रूप से पालन करती हुई नारी कीर्ति प्राप्त करती है, अन्यथा निंदा की पात्र होती है।

भारतीय नारी का यही आदर्श है कि वह परिवार में एकता को कायम रखे। सब की शिकायतें ध्यान से सुनकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करे और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति मनोमालिन्य न आने दे। परिवार में जो नारी श्रद्धा, सात्विकता, प्रेम, करुणा एवं ममता की भावनाओं से पूर्ण होती है, वह अवश्य ही आदर की अधिकारिणी होती है। उक्त गुणों से पूर्ण नारी आदर्श गृहिणी, कुलीन स्त्री, पूजनीया नारी, सुशील पत्नी, स्नेहमयी माता तथा सद्‌गुणी वधू का यश पाती है। वह परिवार में देवर, ननद आदि को स्नेह के वश में रखे तो उनसे सब कार्यों में सहायता भी प्राप्त कर लेती है।

भारतीय नारी पर पश्चिमी सभ्यता का आज काफी प्रभाव देखा जाता है। वह फैशन, सिनेमा, होटल, नाच, डिस्को और क्लब की ओर आकर्षित हो रही है। एक सीमा तक यह अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक युग अपने साथ नई बातें लाता है, परंतु बातें सीमा के भीतर ही अच्छी होती हैं। नर और नारी के पारस्परिक सहयोग और सहचर्य से ही परिवार परिपुष्ट होता है। कहा जाता है कि सभ्यता के प्रारंभ में परिवार के भरण पोषण का उत्तरदायित्व पुरुष ने संभाला और वह घर के बाहर के सभी कार्य करने लगा। स्त्री पति और बच्चों की सेवा और उनके लालन–पालन के लिए घर से संबंधित सभी कार्य करने लगी। ऐसा होने पर भी उस समय की नारी संभवतः किसी प्रकार की हीन भावना से ग्रस्त नहीं थी। एक ओर वह घर के काम–काज, बच्चों के पालन–पोषण और घर की आंतरिक व्यवस्था के लिए प्रयत्नशील थी, दूसरी ओर वह पति के कार्य में भी सहायिका होती थी।

आधुनिक नारी आज अधिक आत्म विश्वास, अधिक स्वतंत्र और साहसी दिखाई देती है। यह ठीक है लेकिन वास्तविकता यह है कि वह दिग्भ्रमित हो गई है। स्नेहमयी, दयामयी, ममतामयी नारी आज लुप्त होती जा रही है और मानवता

के इन सभी गुणों का स्थान ले रही है एक प्रकार की यांत्रिकता, रूखापन, अधिकाधिक भौतिक सुख–सुविधाओं में जीने की हवस और आधुनिकता के नाम पर अधिक से अधिक प्रदर्शन की प्रवृत्ति।

घरेलू जीवन में अब भी नारी का शोषण होता है, परंतु आज सामाजिक वातावरण परिवर्तित हो चुका है। नारी सदियों पुरानी दासता के बंधन को तोड़ रही है। वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर, राजनीतिक दृष्टि से समान तथा सामाजिक दृष्टि से स्वतंत्र है। वह न तो घर की चारदीवारी तक ही सीमित है और न ही पुरुष की इच्छाओं की गुलाम है। आज स्त्री तथा पुरुष दोनों को यह महसूस करना चाहिए कि वे एक–दूसरे के पूरक हैं। उनके संबंध समानता तथा पारस्परिक सम्मान की भावना पर आधारित होने चाहिए और एक अच्छे व खुशहाल परिवार के लिए नारी और पुरुष को एक दूसरे को समझना चाहिए।

उनको एक दूसरे की हर कार्य में सहायता करनी चाहिए। जब आज की नारी शिक्षित है, स्वावलंबी है, साहसी और योग्य है, तब क्यों वह इस दीन–हीन दशा का शिकार होती है। क्यों नहीं वह इस अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध खड़ी होती है। उत्तर स्पष्ट है। संपूर्ण आधुनिकता के बावजूद हम और हमारा समाज अभी तक मध्यकालीन संस्कारों का दास है। हमें इन संस्कारों को तोड़ना होगा, जिससे भारतीय नारी वास्तव में आधुनिक बन सके। ┐

59

नारी से भेदभाव अमानवीय चेष्टा

–पवन, 9वीं बी
केन्द्रीय विद्यालय नं. 1
चण्डी मंदिर छावनी, हरियाणा

पुत्री को पराया धन और पुत्र को वंश–बेल को बढ़ाने वाला कुलदीपक कहा जाता रहा है, परंतु इस प्रकार का अवैज्ञानिक और विषमतापूर्ण दृष्टिकोण अपना कर लड़के और लड़की में अंतर करना अनुचित और अविवेकपूर्ण है।

कोई समाज कितना सभ्य, सुसंस्कृत और उन्नत है, इसका मानदण्ड समाज में नारी की स्थिति से ज्ञात हो जाता है। जिस समाज में नारी को जितना आदर–सम्मान प्राप्त होगा, वह समाज उतना ही सभ्य और सुसंस्कृत माना जाएगा। सृष्टि–रचना नर और मादा (स्त्री और पुरुष) के संयोग और सहयोग से होती है। दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं। प्राणी जगत में लिंग–भेद प्राकृतिक है, वह उसके अपने वश की बात नहीं है। अतः समाज में लड़की या लड़के में किसी प्रकार का विभेद अप्राकृतिक, अनाधिकार और अमानवीय चेष्टा है।

समाज में नारी की भूमिका बहुमुखी है। मां, बहन, पुत्री और पत्नी के रूप में वह सुखी पारिवारिक जीवन का मेरुदण्ड है। बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा उसी की गोद में संपन्न होती है। पारिवारिक जीवन में ही नहीं; सामाजिक और सार्वजनिक जीवन में भी नारी की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं है।

दुर्भाग्य से '*पुत्रिति जाता महतीत चिंता*' या '*तब ते दुर्हिता उपजी, सततहिय अपतात*' कहकर भारतीय परिवार और समाज व्यवस्था में पुत्र और पुत्री के अंतर से नारी की स्थिति बहुत गंभीर है। पुत्री को पराया धन और पुत्र को वंश–बेल को बढ़ाने वाला कुलदीपक कहा जाता रहा है, परंतु इस प्रकार का अवैज्ञानिक और विषमतापूर्ण दृष्टिकोण अपना कर लड़के और लड़की में अंतर करना अनुचित और अविवेकपूर्ण है।

वैदिक युग में भारतीय नारी को श्रद्धा और विश्वास का रूप कहा जाता था। कोई भी धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान नारी के सहयोग के बिना संपन्न नहीं होता था। इसलिए उसे अर्द्धांगिनी कहा गया था, उसके बिना पुरुष अपूर्ण समझा जाता था।

भारतीय समाज में नारी का वैदिक कालीन रूप धीरे–धीरे लुप्त हो गया। यद्यपि शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में पराजित करने वाली भारती आदि नारी–रत्न अपनी प्रतिभा की आभा से चमत्कृत रही, परंतु उसका प्राचीन स्वरूप मंद पड़ने लगा। भारत की पराधीनता के साथ नारी की पराधीनता का युग भी आरंभ हो गया। वह घर की चारदीवारी में बंद पुरुष समाज की आवश्यकता पूर्ति का साधन मानी जाने लगी। संतानोत्पत्ति और घर–गृहस्थी के संचालन में उसके जीवन की सार्थकता समझी जाने लगी।

बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा, अशिक्षा, पर्दा प्रथा तथा अनमेल विवाह जैसी कुप्रथाओं ने उसके जीवन को दयनीय बना दिया। मध्य युग में उसका शरीर ही सब कुछ रह गया। एक मध्यगुगीन कवि की निम्नलिखित पंक्तियों से इसका अनुमान लगाया जा सकता है –

मद गजराज की चाल चलें मंद–मंद,
पद अरविन्द से सूक्ष्म सुकुमार है।
केहरि की कटि ऐसी खीन कटि पीन कुच,
देहकुम्भ ऐ कंठ कम्बु सो सुठार है।

भारत में कन्यादान को बहुत पवित्र माना गया है। उस समय भी विवाह के अवसर पर उपहार दिए जाते थे। उस समय दिए जाने वाले उपहारों के पीछे दम्पत्तियों को सुविधा का भाव रहता था। परंतु मध्ययुग में अनेक कारणों से दहेज प्रथा जैसी कुप्रथा ने अत्यंत विकृत रूप धारण कर लिया। ग्राम–नगर, शिक्षित–अशिक्षित सभी वर्ग के परिवारों में धन–लोलुपता के कारण यह प्रवृत्ति कम होने के स्थान पर बढ़ती जा रही है।

स्पष्ट है कि इस सामाजिक रोग का इलाज कानूनों से नहीं हो सकता। इसके लिए सामाजिक जागृति चाहिए। ऐसे प्रबुद्ध लोग सामने आने चाहिए जो किसी भी स्तर पर इसे सहन न कर सकें। इस दिशा में सबसे बड़ा दायित्व विवाह योग्य नवयुवक–नवयुवतियों का है। सुशिक्षित लड़कियों को इतना साहस जुटाना चाहिए कि वे समाज विरोधी तत्वों से लड़ सकें। इस क्रांतिकारी आत्म–जागृति के अभाव में इस कलंक से छुटकारा पा सकना एक स्वप्न ही होगा। ┐

60

नारी होती है सभी मूल्यों की ज्योति

–पिण्टो आर. जायस्वार, 11वीं
केशव रामभाऊ कोतकर उ. मा. विद्यालय
डोंबीवली (पूर्व) महाराष्ट्र

राष्ट्र के उद्धार के लिए समाज–सुधारकों ने भी नारी–शिक्षा को अनिवार्य बताया है। उन्होंने बताया कि यदि नारियां सुशिक्षित होंगी, तो ही समाज का सर्वांगीण विकास होगा। इसलिए नारियां सुशिक्षित होने के लिए अत्यंत जिज्ञासु हैं।

शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है। यह एक ऐसा प्रकाश है, जो मनुष्य के जीवन के अंधकार रूपी अज्ञानता का हरण कर लेता है। आज नारी–शिक्षा तो प्रत्येक समाज में आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य होनी चाहिए। स्त्री ही बच्चे को जन्म देती है तथा बच्चे का पालन–पोषण कर उसे बड़ा करती है। बच्चों को आवश्यक संस्कारित एवं व्यावहारिक मूल्यों को सिखाती है। अतः मां जितनी ज्यादा शिक्षित होगी, तो बच्चे की शिक्षा में वह उतनी ही सहायक होगी।

नारी को 'आदि–शक्ति' का रूप माना जाता है। पुरुष एवं नारी गृहस्थी की गाड़ी के दो पहिए हैं। पुरुष पढ़ा–लिखा हो और नारी पढ़ी–लिखी न हो, तो दोनों पहियों में तालमेल नहीं बैठ पाता है। अतः यह जरूरी है कि जीवन रूपी गाड़ी में पुरुष शिक्षित एवं संस्कारित हो, तो नारी का भी शिक्षित एवं संस्कारित होना आवश्यक है। आज नारी–शिक्षा को विशेष महत्व देना अनिवार्य हो चुका है। इसलिए विभिन्न सामाजिक संस्थाएं नारी–शिक्षा को महत्व देते हुए उन्हें पढ़ाने–लिखाने की सारी सुख–सुविधाएं प्रदान करती हैं। आज नारी शैक्षणिक कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग ले रही हैं तथा इस कार्यक्रम में आवश्यक भूमिका अदा कर रही हैं। इसलिए नारियां प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के शिखर को चूम रही हैं।

नारी का सम्मान करना हमारे देश की अत्यंत प्राचीन परंपरा है। हमारे देश में दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती तथा मां संतोषी जैसी अनेकों देवियों की पूजा की जाती है। हमारा देश सीता, सावित्री, अनुसूइया जैसी महान् नारियों का देश है। ऐसे देश में नारियों के साथ दुर्व्यवहार करना बहुत शर्म की बात है।

राष्ट्र के उद्धार के लिए समाज–सुधारकों ने भी नारी–शिक्षा को अनिवार्य बताया है। उन्होंने बताया कि यदि नारियां सुशिक्षित होंगी। तो ही समाज का सर्वांगीण विकास होगा। इसलिए नारियां सुशिक्षित होने के लिए अत्यंत जिज्ञासु हैं। कुछ अलग कर दिखाना। वैज्ञानिक क्षेत्र में भी वे सहभागिता दिखा रही हैं। अपने कल्याण सहित सारे समाज, एवं राष्ट्र के कल्याण की बातें सोच रही हैं। नारियों को कुछ अनोखा कर दिखाना आवश्यक है।

खुशी की बात यह है कि आज नारी में 'आदिशक्ति' जागृत हो रही है। वैसे देखें तो नारियों ने अत्यंत उच्च शिखर को चूम लिया है। उदाहरणार्थ जैसा की आप जानते है कि 23 जून 2007 को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष यान पर 195 दिन व्यतीत करने वाली पहली भारतीय महिला सुनीता विलियम बनी। इस अनोखे उच्च शिखर को देखकर आज नारियां अपने गुणों को प्रदर्शित करने के लिए काफी उत्सुक हैं। अतः उन्हें इस प्रकार के उच्च पदों पर आसीन होने का भरपूर प्रयास करना चाहिए।

समस्त पुरुषों एवं नारियों के सुशिक्षित होने पर देश में गरीबी तथा बेकारी से मुक्ति मिलेगी। सर्वत्र शांति का माहौल होगा। लोगों में आपसी कलह की जगह आपसी प्रेम–भाव, भाई–चारा, सर्वधर्म सहिष्णुता जैसे मूल्यों का सर्वांगीण विकास होगा। नारी ही इस सभी मूल्यों की ज्योति है। ┐

61

नारी–जीवन त्याग–तपस्या की गाथा

–सान्या ओझा, 9वीं सी
विवके हाई स्कूल
सैक्टर 38 बी, चण्डीगढ़

समाज की प्रमुख इकाई के रूप में किसी भी परिवार की पहचान उसमें रहने वाली स्त्रियों के व्यवहार से बनती है। परिवार में रिश्तों के अनुरूप सभी सदस्यों के प्रति कर्त्तव्य पालन से ही सुख–शांति का वातावरण बनता है। ऐसे सुखद वातावरण में परिवार पर पड़ने वाली बड़ी–सी–बड़ी आपदा का सजगता से निराकरण किया जा सकता है।

रिश्तों के तानों–बानों से मिल कर एक परिवार बनता है। यह परिवार हर समाज की नींव होता है। यदि पारिवारिक परिवेश की ओर नजर की जाए तो नारी ही वह आधार है, वह आधारशिला है, जो परिवार की सुख, समृद्धि, शांति व सौहार्द का प्रतीक ही नहीं, अपितु इन सब की स्थापना के लिए ध्रुव और धुरी भी है। एक परिवार की सही पहचान नारी से ही होती है।

एक साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै–फलै अघाय।।

रहीमदास जी का यह दोहा संपूर्ण नारी व्यक्तित्व की सार्थकता को दर्शाता है। यदि परिवार में एक सदस्य सुधर जाए तो पूरा परिवार प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने में सफल रहता है। यदि मूल को सींचा जाये तो संपूर्ण पौधा फलता–फूलता है। परिवार का मूल पुरुष नहीं बल्कि नारी है। अतः यदि नारी ही सशक्त हो तो परिवार फलता–फूलता है।

नारी सृष्टि के आरंभ से गुणों की सागर रही है। नर और नारी एक–दूसरे के पूरक हैं। हर परिवार में नारी माता के रूप में हमारी रक्षा करती है तथा मित्र और गुरु के रूप में परिवार के सदस्यों को शुभ कार्यों के लिए प्रेरित करती है। नारी परिवार रूपी नौका की पतवार है, वह अपने बुद्धि–बल, चरित्र–बल, अपने त्यागमय जीवन से इस नौका को थपेड़ों और भंवरों से बचाती हुई किनारे तक पहुंचाने का सफल प्रयास करती है।

मदर टेरेसा एक ऐसी अद्‌भुत नारी थीं जिन्होंने संपूर्ण विश्व को ही अपना परिवार माना और उसके लिए अनेक त्याग किए। परिवार के सुख, शांति, आनंद और उत्थान नारी के सबल कंधों पर ही आधारित रहते हैं। यदि नारी चाहे तो पारिवारिक जीवन को स्वर्ग बना सकती है और यदि चाहे तो इसे घोर नर्क का रूप भी दे सकती है। नारी का प्रेम सृजनात्मक है तथा उसकी प्रसन्नता फूल खिलाती है। नारी सृष्टि–सर्जक है।

ममताम नारी बच्चे को सिर्फ जन्म ही नहीं देती, उसे सही मायने में जिन्दगी भी देती है तथा विकास की ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहती है। मां ही बच्चों की प्रथम शिक्षिका होती है। नारी की कोमलता, सचरित्रता और मोहकता ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। इसी शक्ति के बल पर वह बड़े से बड़े वीर, महान्, विद्वान और कलाकार को पैदा करती है और उनका मार्गदर्शन कर उन्हें ऊंचाइयों तक पहुंचाती है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी महत्वपूर्ण स्थिति और उपयोगिता है। बिना अपने आप को विज्ञापित किये, वह एक साथ कई मोर्चों पर सृजन की कमान संभालती है। संतान–उत्पत्ति से लेकर परिवार पालन तक, प्रेम से लेकर विवाहित जीवन तक वह निरंतर प्रेरणा की मशाल बनी रहती है। मां बनकर जन्म देने वाली, पत्नी के रूप में पति के सुख–दुःख में भागीदार होने वाली, बहन के रूप में छोटों को वात्सल्य देकर पीछे मजबूती से खड़ी रहने वाली, पुत्री बनकर घर में उजाला फैलाने वाली नारी का दर्जा परिवार में सर्वोच्च है।

समाज की प्रमुख इकाई के रूप में किसी भी परिवार की पहचान उसमें रहने वाली स्त्रियों के व्यवहार से बनती है। परिवार में रिश्तों के अनुरूप सभी सदस्यों के प्रति कर्त्तव्य पालन से ही सुख–शांति का वातावरण बनता है। ऐसे सुखद

वातावरण में परिवार पर पड़ने वाली बड़ी–सी–बड़ी आपदा का सजगता से निराकरण किया जा सकता है। परिवार में सौहार्द एवं प्रेम बनाये रखने में सबसे प्रमुख भूमिका एवं योगदान नारी का ही है। किसी परिवार की नींव हिलने में देर नहीं लगती यदि उस परिवार की नारी का व्यवहार ठीक न हो।

परिवार के सामाजिक दायित्वों को भी नारी के द्वारा बखूबी निभाया जाता है। लम्बे समय से चली आ रही पारिवारिक परम्पराओं, प्रथाओं व रीति–रिवाजों की जितनी जानकारी नारी को होती है, पुरुष को नहीं होती और यदि विशेष अवसरों पर इनके अनुरूप व्यवहार न किया जाये तो समाज ऐसे परिवार पर उंगली उठाने से नहीं चूकता। आज तो नारी परिवार के आर्थिक विकास में भी अपना योगदान देने से पीछे नहीं हटती। बहुत सी महिलाएं घर से बाहर जाकर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर नौकरी करके परिवार को आर्थिक मजबूती प्रदान करती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि नारी ही वह आधार–स्तंभ है जिस पर परिवार टिका है। खेद इस बात का है कि आधुनिक युग में त्यागमयी और ममतामयी नारी का रूप विकृत हो चुका है। इस कारण आज का समाज अपाहिज और पंगु हो गया है।

वास्तव में नारी में त्याग एवं उदारता के महान् गुण विद्यमान हैं, इसलिए यहां उसे देवी माना जाता है। नारी अपनी ममता, करुणा और दया को बनाए रखते हुए, एक निपुण कुम्हार की दक्षता से अपने परिवार को ठोस सांचे में ढालती है। वह परिवार के लिए त्याग और तपस्या करती है। उसमें ममता है इसलिए वह मां है, क्षमता है इसलिए शक्ति है, परिवार में किसी को किसी प्रकार की कमी नहीं होने देती इसलिए अन्नपूर्णा भी है। ┐

62

सुगन्ध समान स्वच्छंद है नारी

–काशनी शर्मा, 11वीं बी
प्रजेण्टेशन कॉन्चेंट स्कूल
एस. पी. मुखर्जी मार्ग, दिल्ली

नारी अब पवन के समान मुक्त है, सुगंधि के समान स्वच्छंद है। ज्ञान–विज्ञान के सभी क्षेत्रों के द्वार उसके लिए पूर्ण रूपेण मुक्त हैं। फिर भी वह पारिवारिक जीवन सुखी और संतुलित रख सकती है। आज की नारी घर–परिवार और नौकरी दोनों प्रकार के दायित्वों को पूर्ण कुशलता एवं क्षमता के साथ–साथ निभा रही है।

आपने देखा होगा कि प्रायः लोग परिवार में, समाज में, नारी की अपेक्षा पुरुष को अधिक महत्व देते हैं। क्या आपने कभी समाज में नारी की भूमिका पर गौर किया है ? परिवार समाज की छोटी इकाई है। परिवार में नारी की भूमिका पर सोचें। मां के रूप में वह आपके लिए क्या–क्या करती है ? बहन के रूप में परिवार के अन्य सदस्यों के लिए किस प्रकार से त्याग करती है ?

जी हां, बिल्कुल ठीक समझा आपने। एक नारी कभी किसी की बेटी, किसी की बहन, किसी की बहू, किसी की पत्नी, किसी की मां, किसी की मित्र है। इस प्रकार अनेक उत्तरदायित्व उसे निभाने होते हैं। उसे अनेक रूपों में ढलना होता है। इसके लिए यदि आवश्यक हुआ तो कड़ाई भी बरतनी होती है।

बचपन में पढ़ी एक सुंदर सी कविता की कुछ पंक्तियां इस कलम द्वारा इस पन्ने पर उतार रही हूँ –

मैंने उसको जब–जब देखा।
लोहा देखा, लोहे जैसा तपते देखा।
गलते देखा, ढलते देखा।
मैंने उसको गोली जैसा चलते देखा।

कवि केदारनाथ अग्रवाल की यह कविता मुझे कुछ वीरांगनाओं की याद दिलाती है। सीता का तपना और ढलना, सुखों को छोड़कर वनवास चुनना, वहां के जीवन के अनुरूप अपने को ढालना, यही नारी का रूप है। रानी लक्ष्मीबाई भी तपी, परिस्थितियों के अनुसार ढली और जब आवश्यक हुआ तो उन्होंने हथियार भी उठा लिए और दुश्मन को नाको चने चबवाए। यह सब नारी शक्ति के ऐसे उदाहरण हैं जो हम इतिहास में पाते हैं। कुछ ऐसे ही उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी उल्लिखित है। मां दुर्गा को इस सृष्टि की आदिशक्ति माना गया है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों उनकी शक्ति से सृष्टि की उत्पत्ति, पोषण और संहार करते हैं।

आज के युग का उदाहरण लें तो परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार नारी ही है। गृहस्थी की चक्की हो या बाहर की नौकरी, नारी का योगदान महत्वपूर्ण है। कई बार महिलाएं अपनी शक्ति, उत्साह और लगन के बल पर पुरुषों से भी आगे निकल जाती हैं। श्रीमती इंदिरा गांधी को भारत तो क्या, पूरी दुनिया कभी भूल नहीं पाएगी। बांग्लादेश की आजादी के बाद अपने पहले संबोधन में शेख मुजीबुर्रहमान ने इंदिरा गांधी के बारे में कहा –*'अद्‌भुत महिला है यह नेहरू की बेटी, मोती की पोती*।

कुछ अपवादों को छोड़कर नारी बचपन से ही कष्ट उठाती रही है। परंतु वह स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरे की सुविधाओं का ध्यान रखती है। उसे अपने पति, पुत्र, माता–पिता और समाज का ध्यान रहता है। शायद इसीलिए जो पहला शब्द एक बच्चा बोलता है, वह है 'मां'। इसीलिए यह कहा भी गया है –*'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*'। इसका अर्थ यह है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं यानि वहां सुख–समृद्धि और शांति होती है।

आज नर, नारी के इन विभिन्न रूपों की महिमा को मान चुका है। इसलिए कहा गया है कि *'यदि नर प्रकृति देवी का दक्षिण नेत्र है, तो नारी वाम नेत्र*। विज्ञान हो या कला–कौशल, दर्शन हो या संग्राम, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी ने नर का हाथ बंटाया है।

नारी अब पवन के समान मुक्त है, सुगंधि के समान स्वच्छंद है। ज्ञान–विज्ञान के सभी क्षेत्रों के द्वार उसके लिए पूर्ण रूपेण मुक्त हैं। फिर भी वह पारिवारिक जीवन सुखी और संतुलित रख सकती है। आज की नारी घर–परिवार और नौकरी दोनों प्रकार के दायित्वों को पूर्ण कुशलता एवं क्षमता के साथ–साथ निभा रही है। उसका जीवन सुखी और साफ–सुथरा भी है।

भारतीय संस्कृति में प्रारंभ से नारी पुरुष की सहयोगी रही है। नारी के बिना यज्ञ–पूर्ति संभव नहीं है। पुराणों में भगवान के सभी रूपों में भगवती (नारी) की महिमा का उल्लेख है। जैसे शिव–पार्वती, राम–सीता, राधा–कृष्ण। ┐

63

स्त्री जमीं पर जन्नत की निर्मात्री

–ममता गहलोत, 11वीं
शांति देवी कन्दोई बालिका उ.मा. विद्यालय
तारानगर, चूरू, राजस्थान

नारी अर्थात् उसकी माता उसे संसार के सभी आदर्शों से परिचित कराती है। उसे सुशील और संस्कारवान बनाती है। वह अपने बालक में देश–प्रेम की भावना जागृत कर उसे एक सच्चा नागरिक बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती है।

परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार नारी है। सर्वांगीण विकास का अभिप्राय है सामाजिक, मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक विकास। एक नारी बखूबी जानती है कि एक परिवार का सर्वांगीण विकास किस प्रकार से किया जाये ? इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमारे मनीषियों ने कहा है –*'यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'*। जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं जैसे शब्द नारी की सम्मानजंक स्थिति को प्रकट करते हैं।

सृष्टि के आदिकाल से ही नर–नारी का अटूट संबंध रहा है। नारी को सृष्टि का केन्द्र भी माना जाता है, क्योंकि नारी के द्वारा ही संतानोत्पत्ति का क्रम चलता है। मानव जाति के विकास में नारी का पद पुरुष के पद से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। वह मां, बहन, पत्नी, पुत्री आदि विविध रूपों में प्रेम, दया, ममता, त्याग आदि की प्रतिमूर्ति है। जिस देश की नारी जागृत, सुशिक्षित व संस्कारित होती है, वही देश और समाज संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है।

परिवार–निर्माण में नारी की अहम् भूमिका होती है। *'जिस घर में हो नारी का सम्मान, स्वयं अवतार लेते हैं वहां भगवान'*। नारी को पुरुष का आधा अंग माना जाता है लेकिन समाज या परिवार में उसे पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं। हमारे देश में अब नारी–समाज के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। अब नारी–समाज में भी जागृति आ रही है। अब नारी ग्राम–पंचायत से लेकर संसद तक का प्रतिनिधित्व करती है। इस तरह अब नारी अपने व्यवहार तथा परम्परागत संस्कारों से समाज को नयी दिशा देने में सक्षम है। वह अपने अधिकारों का स्वतंत्रता से उपयोग कर सकती है तथा पुरुष वर्ग की प्रेरणा बनकर मंगलमय सामाजिक जीवन का निर्माण कर सकती है। वह समाज का रहन–सहन, आचरण, संस्कार, धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक आदर्श आदि का प्रसार कर परिवार–निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

बालक की प्रथम शिक्षक उसकी माता होती है। जब एक बालक इस संसार में आता है अर्थात् जन्म लेता है, उस समय वह संसार से पूर्णतया अनभिज्ञ होता है। वह मासूम संसार में आदर्शों से कोसों परे होता है लेकिन एक नारी अर्थात् उसकी माता उसे संसार के सभी आदर्शों से परिचित कराती है। उसे सुशील और संस्कारवान बनाती है। वह अपने बालक में देश–प्रेम की भावना जागृत कर उसे एक सच्चा नागरिक बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती है। शिवाजी के अंदर राष्ट्र प्रेम की भावना उनकी मां जीजाबाई ने ही जागृत की थी। इस प्रकार एक नारी कभी बहन के रूप में, कभी पत्नी के रूप में और कभी माता के रूप में अपने परिवार के प्रति अपना सर्वस्व अर्पित करती है।

पुरुष और स्त्री मानव समाज रूपी रथ के दो पहिये हैं। इन दोनों की सहायता से हमारा सामाजिक जीवन गतिशील रहता है। समाज की प्रगति के लिए दोनों का सहयोग आवश्यक है क्योंकि दोनों का जीवन एक–दूसरे का पूरक है। जीवन के कार्यक्षेत्र में संघर्ष करते हुए पुरुष को नारी की सहायता की पग–पग पर आवश्यकता होती है। पुरुष का पारिवारिक जीवन स्त्री पर निर्भर करता है। समाज का कल्याण इसी बात में निहित है कि पुरुष और स्त्री दोनों ही अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व का पालन उचित रीति से करते हुए एक–दूसरे के जीवन को सुखी और आनंदपूर्ण बनाये।

परिवार का सर्वांगीण विकास करने के लिए नारी का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षित स्त्री गृहस्थी का कार्य अधिक सुचारू और सुंदर रूप से चला सकती है। पारिवारिक जीवन को कैसे सुखी बनाया जा सके, पारिवारिक आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जा सके, पति की आय का उपयोग अपने श्रेष्ठतम रूप में किस तरह हो सकता है, ये सारी बातें एक

शिक्षित नारी द्वारा ही संभव हो सकती है। यही नहीं, शिक्षित और गृह–कार्य में कुशल नारियां आकस्मिक कठिनाइयों के समय बड़े धैर्य से काम लेती हैं और चतुरता से उनका निराकरण करती है।

कहने का अभिप्राय यही है कि एक शिक्षित नारी सभी प्रकार से अपने पारिवारिक जीवन को सुखी और आनन्दपूर्ण बना सकती है। देश में अंग्रेजी शासन आने पर शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हुई किंतु यह प्रगति भी नगरों की सीमा तक और विशेषतया पुरुष वर्ग में ही हुई। यद्यपि स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय नारियों ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया किंतु उनकी ग्रामवासिनी बहनों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ।

नारी सुख सम्पन्न भारतीय घर की लक्ष्मी, पति की प्रेरणा–शक्ति दुर्गा और संतान को सुशिक्षा देने वाली सरस्वती स्वरूपा है। वह जमीं पर जन्नत की निर्मात्री है। इसी विशेषता को लक्ष्य कर कायामनीकर ने कहा है *'नारी तुम केवल श्रद्धा हो*। वस्तुतः नारी अपने परिवार के साथ समाज के निर्माण व विकास की धुरी है। जो भी समाज आज सुव्यवस्थित एवं समृद्ध है, उसमें नारी का विशिष्ट योगदान रहा है। समाज निर्माण की दृष्टि से नारी की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। अतः पुरुष को नारी के प्रति अपने पूर्वाग्रहों को त्यागना होगा और उसे एक सम्मानित सहयोगी का दर्जा देना ही होगा। ┐

64

'ई' का फर्क शक्ति का परिचायक

–राधिका गर्ग, 11वीं
सराफा विद्या निकेतन
इन्दौर, मध्य प्रदेश

जननी के रूप में वह मनुष्य को जन्म देती है, उसके जीवन को संवारती है। उसमें एक अद्‌भुत शक्ति छुपी होती है जो कभी हारना नहीं जानती। यही कारण है कि समाज की उन्नति में सदैव से ही नारी की भूमिका अहम् रही है।

नर और नारी के बीच 'ई' का जो फर्क है वही नारी शक्ति का परिचायक है। यदि शिव में से 'इ' हटा दिया जाए तो केवल 'शव' बचता है। अर्थात् नारी की जीवन की परिचायक है। '*यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*'। जिस कुल में स्त्रियों का आदर है, वहां देवता प्रसन्न रहते हैं। धर्म की स्थापना भले आचार्यों की, पर उसे संभाले रखना, विस्तारित करना और बच्चों में उसके संस्कारों का सिंचन करना इन सबका श्रेय नारी को जाता है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को माता के रूप में स्वीकार करके यह बात प्रसिद्ध की है कि नारी पुरुष के कामोपभोग की सामग्री नहीं अपितु वंदनीय, पूजनीय है।

शक्ति का पर्याय है नारी। सदियों से उसे दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, रणचंडी जैसे विविध पवित्र रूपों में भारतीय संस्कृति की अभेद्य अस्मिता में स्थान दिया गया है। बदलते युग में नारी अपने मजबूत इरादों के साथ समाज में अपना स्थान सुनिश्चित करने में सक्षम होती नजर आ रही है। वर्तमान में नारी शिक्षा जगत में, कम्प्यूटर से लेकर चिकित्सा जगत में भी अपनी कामयाबी के झण्डे फहरा चुकी है।

एक नारी की कोख से लड़का और लड़की होते हैं अर्थात् इस संसार का निर्माण नारी ही करती है। नारी नहीं होती तो यह संसार भी नहीं होता। बिना नारी के एक पुरुष का जीना भी व्यर्थ है। किसी ने सच ही कहा है –'मनुष्य की हर कामयाबी के पीछे एक औरत का हाथ होता है'। यह तथ्य बिल्कुल सत्य है। इसलिए यह कामयाब संसार नारी की ही देन है।

जननी के रूप में वह मनुष्य को जन्म देती है, उसके जीवन को संवारती है। उसमें एक अद्‌भुत शक्ति छुपी होती है जो कभी हारना नहीं जानती। यही कारण है कि समाज की उन्नति में सदैव से ही नारी की भूमिका अहम् रही है। आज नारी ने बदलते जमाने के साथ स्वयं को बदला है। अबला कहलाई जाने वाली नारी अब अबला नहीं रही है। स्वतंत्र भारत के सक्रिय नागरिक की भूमिका वह बखूबी निभा रही है। सहानुभूति का पात्र बनना उसे अब मंजूर नहीं।

प्राचीन काल की ओर देखें तो सावित्री का चरित्र एक सबल मानवीय व्यक्तित्व का उम्दा उदाहरण प्रस्तुत करता है। अपने प्रेम को चिरंजीवी बनाने की खातिर वह मृत्यु तक को परास्त कर देती है। भारत का प्राचीन साहित्य यही दर्शाता है कि नारी को दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती का सम्मान दिया जाता रहा है। उसके बिना यज्ञ का विधान पूरा नहीं माना जाता।

इस युग का आरंभ एक नारी की कोख से आरंभ होकर उसी नारी (मातृभूमि) की गोद में खत्म होता है। युग चाहे त्रेतायुग हो, सतयुग हो या चाहे कलयुग हो, सभी के अच्छे–बुरे की शुरुआत एक नारी द्वारा ही हुई है। अतीत से वर्तमान तक ऐसे कई कार्य हैं, जिनमें नारी के अमूल्य योगदान को सराहा गया और उनके कार्यों को ओर अधिकाधिक उन्नति का आशीष दिया गया। भारत की नारी दया, ममता, मधुरता और गहरे विश्वास से युक्त है। उसका ॅदय सुंदर गुणों का खजाना है। वह स्वभाव से ही देवी है।

वर्तमान में भारतीय नारी सभी क्षेत्रों में पुरुष को चुनौती दे रही है। चिकित्सा, शिक्षा और सेवा में उसका कोई सानी नहीं। प्रशासन और पुलिस जैसे कठोर कर्मों में भी उसने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी है। वह कुशल वायुयान चालिका, सैनिक, वक्ता, प्रवक्ता और मेधावी व्यावसायिका भी सिद्ध हो चुकी है। एक समय था जब पंत जी ने आवाज लगाई थी –'*मुक्त करो नारी को*'। आज वह समय है जब नारी स्वयंमेव बंधन की जंजीरें तोड़कर मुक्ति के परम सुख में लीन है। अब उसे सम्मान दिलाने के लिए प्रार्थनाएं करने की आवश्यकताएं नहीं है। उसने स्वयं कर्मकुशलता से अपने लिए सम्मान अर्जित कर लिया है। ┐

65

सुख चाहती है नारी, संघर्ष नहीं

–ज्योति पंजवानी, 9वीं
रॉयल किड्स कॉन्वेंट
राजनांद गांव (छत्तीसगढ़)

भारतीय इतिहास की सारी उथल–पुथल के बाद भी भारतीय नारी के कुछ ऐसे गुण उसके चरित्र से जुड़े रहे जिनके कारण वह विश्व की नारियों से पूरी तरह अलग रही। नम्रता, लज्जा और मर्यादा ये विशेष गुण हैं जो भारतीय नारी को गौरवान्वित करते हैं। युग–युग से पीड़ित नारी के प्रति एक व्यापक सहानुभूति दृष्टिकोण अपनाया जाने लगा।

'**जि**स प्रकार तार के बिना वीणा और धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार होता है, उसी प्रकार नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन व्यर्थ है।' सृष्टि के आदिकाल से ही नारी की महत्ता अक्षुण्ण है, नारी सृजन की पूर्णता है। उसके अभाव में मानवता के विकास की कल्पना असंभव है। समाज के रचना विधान में नारी के मां, प्रेयसी, पुत्री, पत्नी के अनेक रूप हैं। वह सम परिस्थितियों में देवी है, तो विषम परिस्थितियों में दुर्गा भवानी। उसकी उपेक्षा कर मानव पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। 'नारी

जिस कुल में नारी का अपमान होता है वहां सभी कार्य असफल हो जाते हैं। जिस कुल में स्त्रियां शोकपूर्ण रहती हैं, उस कुल का शीघ्र नाश हो जाता है तथा जिस कुल में वे प्रसन्न रहती हैं, वह कुल सदैव ही वृद्धि को प्राप्त होता है।

मानव जाति के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि जीवन में कौटुम्बिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, सभी क्षेत्रों में प्रारंभ से ही नारी की अपेक्षा पुरुषों का अधिकार रहा है। पुरुष ने अपनी इस श्रेष्ठता, शक्ति, सम्पन्नता का लाभ उठाकर नारी की स्वतंत्रता का हरण कर उसे पराधीन बना दिया।

प्राचीन भारतीय समाज में नारी जीवन के स्वरूप की व्याख्या करें तो हमें ज्ञात होगा कि वैदिक काल में नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ मिलकर काम करती थी। वैदिक कालीन नारी पुरुष की सहधर्मिणी थी। नारी को समाज में उच्च गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। विवाह के संबंध में उसे स्वतंत्रता प्राप्त थी। पत्नी के रूप में उसका उच्च स्थान था।

इस काल में नारियां ब्रह्मवादिनी थीं। ऋग्वेद संहिता के विभिन्न श्लोकों की रचना करने वाली रोमशा, लोपामुद्रा, श्रद्धा, कामायनी, वैवस्वती, पोलोमी, शची आदि नारियां प्रसिद्ध हैं। नारियां युद्ध क्षेत्र में भी सक्रिय सहयोग देती थीं। सूर्या, गार्गी, सुलभा, मैत्री, ममता आदि ब्रह्मवादिनी थीं।

रामायण एवं महाभारत काल में नारी शक्ति सम्मान, श्रद्धा, प्रेम–त्याग, सौंदर्य आदि विविध गुणों की प्रतीक थी। कौशल्या, कैकेयी, सीता, उर्मिला, कुन्ती, द्रोपदी, अनुसूइया गांधारी आदि नारियों का महत्व इतिहास में अंकित है। महाभारत के अनुसार स्त्री धर्म, काम, मोक्ष की मूल है। वह पुरुष की सबसे बड़ी मित्र है, वह सुख में मित्र, उत्सव में पिता व रुग्णावस्था में माता के समान है।

मध्य युग तक आते–आते नारी की सामाजिक स्थिति दयनीय बन गई। भगवान बुद्ध द्वारा नारी को सम्मान दिये जाने पर भी नारी के गौरव का ह्रास होने लगा था, फिर भी वह पुरुष के समान ही सामाजिक कार्यों में भाग लेती थी। सहभागिनी और समाधिकार का उसका रूप पूरी तरह से लुप्त नहीं हो पाता था। मध्यकाल में शासकों की काम लोलुप दृष्टि से नारी को बचाने के लिए प्रयत्न किए जाने लगे।

भारतीय इतिहास की सारी उथल–पुथल के बाद भी भारतीय नारी के कुछ ऐसे गुण उसके चरित्र से जुड़े रहे जिनके कारण वह विश्व की नारियों से पूरी तरह अलग रही। नम्रता, लज्जा और मर्यादा ये विशेष गुण हैं जो भारतीय नारी को गौरवान्वित करते हैं। युग–युग से पीड़ित नारी के प्रति एक व्यापक सहानुभूति दृष्टिकोण अपनाया जाने लगा।

आधुनिक युग में नारी को विलासित व अनुचरी के स्थान पर देवी मां, सहचरी व प्रेयसी के गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। स्वतंत्रता प्राप्त के बाद नारी की स्थिति सुधारने के लिए कई प्रयत्न किए गए। नारी को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता प्राप्त हो गई परंतु इस स्वतंत्रता ने उसे भोगवाद की ओर प्रेरित किया है।

नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो, शिक्षित हो, पुरुष की दासता से मुक्त हो, यह अच्छी बात है किंतु स्वतंत्रता की अति न पुरुष के लिए शुभ है न नारी के लिए। दोनों को एक दूसरे का सम्मान करते हुए परिवार व समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। आज युद्धों से भयभीत है विश्व। सर्वत्र अशांति है। ऐसे विषम समय में नारी में उन गुणों के विकास की जरूरत है जो उसके परिवार के सर्वांगीण विकास का आधार हो। नारी सभी का सुख चाहती है। वह संघर्ष नहीं, त्याग और ममता की देवी है। वह शक्ति भी है, जो दानवों का विनाश करती है। वह नवनिर्माण की शक्ति है जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाती है। ┐

66

परिवार रूपी पतंग की डोर है नारी

–श्रेया गौतम, 9वीं
ऋषि पब्लिक स्कूल
बशीरबाग, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

'*एक नहीं, दो–दो मात्राएं, नर से बढ़कर नारी*। नारी अपने परिवार के प्रति श्रद्धा और विश्वास की डोर है और पतंग उसका परिवार है। एक नारी उस डोर से अपने परिवार को आसमान में देखना चाहती है।

समाज में स्त्रियों का विशिष्ट स्थान रहा है। उनका महत्व ऊंचा रहा है। समाज व्यक्तियों का समूह है और उसमें स्त्री–पुरुष दोनों शामिल हैं। पुरुष घर के बाहर के कामों का प्रबंधन करता है तो स्त्रियां लक्ष्मी के रूप में घर–गृहस्थी की अधिकारिणी है। हिन्दू समाज में पुरुष बाहरी विषयों पर पूर्ण अधिकार रखता है। गृह कार्य में स्त्रियों का प्रबंध तथा अधिपत्य चलता है। स्त्रियों के योगदान से परिवार चलता है। स्त्री अपने प्यार और ममता से पूरे घर को एक सूत्र में बांध कर चलाती है। परिवार की सुख–समृद्धि स्त्रियों की योग्यता पर निर्भर है। पुरुष बाहर जाकर पैसों से सब कुछ खरीद सकता है लेकिन जो प्यार तथा ममता से बनाया एक परिवार रूपी घर स्त्री द्वारा सजाया जाता है, उसे लाख कोशिशों के बादभी कोई नहीं खरीद सकता।

आज घर के अंदर के सभी कार्यों में काफी अंतर आ गया है। ऐसा प्राचीन काल की नारी ने हीन भावना से ग्रसित न होकर स्वतंत्र और आत्मविश्वास से भरे अपने व्यक्तित्व का सुंदर और आकर्षक निर्माण किया। पंडित मिश्रा की पत्नी द्वारा शंकराचार्य जी को परास्त होने के साथ गार्गी, मैत्रेयी, विद्योत्तमा आदि विदूषियों का नाम इसी श्रेणी में उल्लेखनीय है। उन्हीं के पद चिन्हों पर चलते हुए स्त्री आज अपने परिवार को एक ऊंचाई पर ले जाना चाहती है। अगर परिवार खुशी और संपन्न है तो उसमें स्त्री का सबसे बड़ा योगदान है। समय के बदलाव के साथ नारी जीवन–दशा में अब बहुत परिवर्तन आ गया है।

अब नारी–जीवन का एक विशेष उद्देश्य है अपने परिवार को आगे लेकर जाना। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप अब नारी की वह दुर्दशा नहीं है जो कुछ अंधविश्वासों, रूढ़िवादी, विचारधाराओं या अज्ञानता के फलस्वरूप हो गई थी। नारी ने अपने परिवार में समानता लाने के लिए हरेक विषय पर सोचना तथा समझदारी से काम करना शुरू कर दिया है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस विषय में स्पष्ट कहा है –'*एक नहीं, दो–दो मात्राएं, नर से बढ़कर नारी*। नारी अपने परिवार के प्रति श्रद्धा और विश्वास की डोर है और पतंग उसका परिवार है। एक नारी उस डोर से अपने परिवार को आसमान में देखना चाहती है। जयशंकर प्रसाद ने अपनी महाकाव्य कृति कामायनी में लिखा है –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजतनग पग तल में।।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

आज नारी घर परिवार के साथ–साथ समाज में प्रतिष्ठित और सम्मानित हो रही है। वह अब घर की लक्ष्मी ही नहीं रह गई है अपितु घर से बाहर समाज का दायित्व निर्वाह करने के लिए आगे बढ़ रही है। वह अपने घर में अपने पति तथा बच्चों पर आई हरेक मुसीबतों का सामना करने के लिए तैयार रहती है। एक तरफ स्त्री अगर ममता की देवी है तो दूसरी तरफ दुर्गा का भी रूप धारण कर सकती है। वह अपने बच्चों में अनुभव के साथ उनमें चेतना भी भर रही है। वह अपने परिवार में हरेक प्रकार की शक्ति–क्षमता को आगे बढ़ाती है। जिस नारी को अबला कहा गया है, वह नारी अब अपने परिवार के विकास के लिए हमेशा कुछ न कुछ करने के आगे रहती है। उसके अंदर संबल और सामर्थ्य है, वह अबला नहीं सबला है, वह दीन–हीन नहीं अपितु शक्ति का अक्षय स्रोत है। वही दुर्गा है, वही शिव है और वह प्राणदायिनी है। अतः परिवार के सर्वांगीण विकास का श्रेय नारी पर निर्भर करता है। ┐

67

स्त्री का प्रत्येक रूप विश्वसनीय

–अतुल ठाकुर, 10वीं डी
स्वामी विवेकानंद सरस्वती विद्या मंदिर
साहिबाबाद, उत्तर प्रदेश

शिक्षा प्राप्ति से चाहे कोई लाभ हुआ हो या न हुआ हो परंतु एक लाभ तो अवश्य हुआ है कि उसने पुरुष की निरंकुशता से मुक्ति प्राप्त कर ली है। आर्थिक स्वावलंबन ने उसके आत्मविश्वास में वृद्धि की है और वह किसी भी समस्या से जूझने को तत्पर रहती है। जिन लोगों को स्त्री की कार्यक्षमता पर अविश्वास था, वे भी अब उसकी योग्यता के कायल होने लगे हैं।

सृष्टि के प्रारंभ से ही भारतीय नारी अनंत गुणों का सागर रही है। पृथ्वी के समान धैर्य धारण करने की क्षमता, समुद्र के समान गंभीरता और चन्द्रमा के समान शीतलता एक साथ नारी के ॅदय में दृष्टिगोचर होती है। नारी दया, करुणा और प्रेम की पवित्र मूर्ति है। नारी समय आने पर प्रचंड चंडी के समान और कभी जन्मदात्री के समान, तो कभी प्रेम और करुणा से परिपूर्ण दिखाई देती है। वह कभी पत्नी और कभी सच्चे गुरु की भांति मार्गदर्शन देती है। मृत्युपर्यंत तक संरक्षिका बनकर रहती है। गृहस्थ की सुख–शांति, आनंद तथा उत्थान नारी पर ही आधारित है। इन्हीं सब कारणों से भारतीय संस्कृति में नारी को गृहलक्ष्मी कहा जाता है।

प्राचीन काल से ही नारी को उच्च स्थान प्राप्त है। नारी के त्याग और बलिदान ने उसे उच्च स्थान पर पदासीन होने का अधिकारी बनाया। नारी केवल घर में ही नहीं अपितु घर के बाहर भी सम्मान की अधिकारिणी है। देवी शकुंतला, सीता, अनूसूइया, दमयंती, सती सावित्री और गार्गी आदि हमारे देश की महान् पूज्य स्त्रियां रहीं हैं। धार्मिक कार्यों के अलावा नारियां युद्ध क्षेत्र में भी अग्रणी रही हैं। देवासुर संग्राम में कैकेयी ने महाराजा दशरथ का साथ देकर अपने अपूर्व कौशल का परिचय दिया था। प्राचीन काल में नारी का प्रमुख अस्तित्व था परंतु दुर्भाग्यवश गुलाम भारत में स्त्री की स्थिति चिंताजनक बन गई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भले ही नारी की स्थिति सुधरी तो अवश्य है परंतु उसे पहले जैसी स्थिति प्राप्त नहीं हो पाई है। महात्मा गांधी ने नारी उत्थान के लिए आजीवन प्रयत्न किया। उन्हीं के अथक प्रयासों से आज स्वतंत्र भारत में स्त्रियों को पुरुषों की भांति समान अधिकार प्राप्त करने की व्यवस्था संविधान में आ गई है। आज बालिकाओं को भी उत्तराधिकार का अधिकार प्राप्त है।

आज की नारियों में सामाजिक चेतना का संचार हो गया है। भारतीय नारियां गृहस्थी का कार्यभार संभालते हुए अनेक आवश्यक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान दे रही हैं। आज नारियों ने पुरुषों की भांति सारे अधिकार प्राप्त कर लिए हैं। नारियां आज हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कार्यरत हैं। आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, वह शिक्षित है तथा राजनीतिक दृष्टि से पुरुष के समकक्ष अधिकारों की अधिकारिणी है।

आधुनिक काल में नारी सामाजिक व्यवस्था में स्थान रखती है। पुरुषों की भांति वह उच्च शिक्षा प्राप्त करती है। घर की सीमाओं से बाहर निकलकर स्कूल, कॉलेज, कार्यालयों, अस्पतालों आदि में अपनी कार्य क्षमतानुसार स्थान प्राप्त करती है। राजनीति, वैज्ञानिक, संस्थान, पर्वतोरोहण, क्रीड़ा जगत, पुलिस सेवा आदि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां नारी का प्रवेश न हुआ हो।

शिक्षा प्राप्ति से चाहे कोई लाभ हुआ हो या न हुआ हो परंतु एक लाभ तो अवश्य हुआ है कि उसने पुरुष की निरंकुशता से मुक्ति प्राप्त कर ली है। आर्थिक स्वावलंबन ने उसके आत्मविश्वास में वृद्धि की है और वह किसी भी समस्या से जूझने को तत्पर रहती है। जिन लोगों को स्त्री की कार्यक्षमता पर अविश्वास था, वे भी अब उसकी योग्यता के कायल होने लगे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज नारी की स्थिति गत शताब्दी की नारियों की अपेक्षा उन्नत हुई है।

प्रसिद्ध दार्शनिक बर्नाड शॉ का कथन है किसी व्यक्ति का चरित्र कैसा है ? यह उसकी माता के चरित्र को दर्शाने का साधन है। कंफ्यूसिंयस का कथन है कि *'समाज को सुधारना है तो परिवारों को सुधारों, परिवारों का सुधार माताएं ही कर सकती हैं*। इसमें कोई संदेह नहीं, नारी अपने हर रूप में कर्त्तव्य को पूरी तरह से निभाती है। वह अपने हर कार्य से अपने परिवार का विकास चाहती है। वह दिन दूर नहीं कि जब वह जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में पुरुष के समतुल्य समझी जाएगी। वह अपनी प्रतिभा एवं काबलियत से देश के उत्थान में उल्लेखनीय कार्य कर नारी–जगत के आदर्श को स्थापित कर सकेगी। ┐

68

महिला किसी से कम नहीं

–रचना उपाध्याय, 12वीं
महर्षि विद्या मंदिर
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

आज जीवन के समस्त क्षेत्रों में स्त्रियों ने पदार्पण कर लिया है तथा स्त्रियां देश का भाग्य बदलने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। आज नारी नवचेतना एवं जागृति की भावना से ओतप्रोत हैं। वह अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों का पालन पूर्ण रूप से कर सकने में समर्थ है।

देश के निर्माण में पुरुषों के साथ स्त्रियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय समाज में नारियों की पूजा विभिन्न रूपों में होती रही है। प्राचीन भारत के इतिहास में महिलाओं की गौरव गाथाओं का उल्लेख है। उस समय नारियों को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त थे। परिवेश तथा परिवार में उनका स्थान प्रतिष्ठापूर्ण था। गृहस्थी का कोई भी कार्य उनकी सहमति के बिना नहीं हो सकता था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ किया तो उन्होंने देवी सीता के वनवास के कारण उनकी स्वर्ण प्रतिमा रखकर यज्ञ की पूर्ति की।

आवश्यकता होने पर स्त्रियां पुरुषों के साथ रणक्षेत्र में भी जाती थीं। देवासुर संग्राम की उस घटना को कौन भूल सकता है जिसमें रानी कैकेयी ने अपने कौशल से महाराज दशरथ को भी विस्मित कर दिया था। प्राचीन काल में नारियों को अपनी योग्यता के अनुसार पति चुनने का अधिकार था। कैकेयी, शकुंतला, सीता, अनुसूइया, दमयंती, सावित्री आदि प्रमुख स्त्रियां इसके मुख्य उदाहरण हैं।

महिला ही परिवार की धुरी है। महिला के विकास से ही परिवार का विकास हो सकता है, बालक जब शैशवास्था में होता है तो मां ही उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। वैसे तो बालक सभी के संपर्क में रहता है परंतु वह मां के अधिक निकट रहता है। हर बच्चे को अपनी मां का यह महत्व हमेशा याद रहता है कि –

मां की महिमा क्या बतलाएं, मां से ही संसार है।
गिनती न हो पाए उतने मां के ही उपकार है।

इसी के साथ यह भी सिद्ध हो चुका है कि पिता की मृत्यु हो जाने पर परिवार का पालन–पोषण महिला बड़ी कुशलता से कर लेती है, परंतु महिला के न होने पर परिवार हमेशा अधूरा रहता है। प्रेम, स्नेह, दया, परोपकार आदि गुणों को अपने जीवन में ढालना परिवार के अन्य सदस्यों के लिए मुश्किल हो जाता है।

भारतीय नारी जीवन की कटुता और विषमताओं का विष पीकर भी कर्त्तव्य और त्याग का संदेश देती रही है। रानी लक्ष्मीबाई ने अपना बलिदान देकर अपने देश की रक्षा के लिए अंग्रेजों से युद्ध किया। गांधी जी को चरित्र निर्माण की मूल प्रेरणा देने वाली उनकी माता पुतलीबाई ही थी। महिलाओं ने प्राचीन समय से ही हर क्षेत्र में सहभागिता दिखाकर स्वयं के महत्व को स्पष्ट किया है।

खेल जगत में अनेक महिलाओं ने अपनी प्रतिभा दिखाकर पुरुषों को भी चकित कर दिया है। महिलाएं केवल उन्नति ही नहीं कर रही हैं बल्कि 'गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज करवा रही हैं। 'भारत कोकिला' लता मंगेशकर, जिनका नाम पार्श्वगायन के क्षेत्र में सर्वाधिक गीत गाने वाली महिला के रूप में रिर्कार्ड हो चुका है, हमारे देश की गौरवशाली शख्सियत हैं। उनकी बहन आशा भोंसले को आठ बार 'फिल्मफेयर' और दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

इसी प्रकार अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय महिला कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स जैसी अनेक ऐसी हस्तियां हैं, जिन्होंने इस बात को सिद्ध किया है कि महिलाएं ही सर्वांगीण विकास की मुख्य आधारशिला हैं। आज जीवन के समस्त क्षेत्रों

में स्त्रियों ने पदार्पण कर लिया है तथा स्त्रियां देश का भाग्य बदलने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। आज नारी नवचेतना एवं जागृति की भावना से ओतप्रोत हैं। वह अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों का पालन पूर्ण रूप से कर सकने में समर्थ है।

आज की महिला किसी से कम नहीं है, परंतु ईश्वर प्रदत्त जो गुण, जैसे दया, प्रेम, स्नेह महिला को दिये गये हैं, इन गुणों को वह त्यागे नहीं, क्योंकि यही गुण हैं जो महिला को पुरुष से श्रेष्ठ बनाते हैं। वास्तव में प्रकृति की सर्वोत्तम कृति है नारी। हमें इससे भेदभाव करने का हक नहीं है। ┐

69

नारी सामाजिक जीवन की आधारशिला

–पुष्पांजली देविदास पाडवी, 9वीं
जवाहर नवोदय विद्यालय
रायगड, निमाजपूर (महाराष्ट्र)

उसका मन बहुत कोमल होता है। जीवन में नारी का रूप और कार्य देवी समान है। भगवान ने हमें मां की गोद में ममता की बारिश खुद पर बरसाने के लिए भेजा है। मां के उपकार हम कभी भूल नहीं सकते। यह कार्य नारी, माता के रूप में करती है जो कोई नहीं कर सकता।

मातृत्व की गरिमा से मंडित, पत्नी के सौभाग्य से ऐश्वर्यशालिनी, धार्मिक अनुष्ठानों की सहधर्मिणी, गृह की व्यवस्थापिका तथा गृहलक्ष्मी, पुरुष की सहयोगिनी, शिशु की प्रथम शिक्षिका तथा अनेक गुणों से गौरवान्वित नारी के महत्व को आदिकाल से ही स्वीकारा गया है। इसमें किंचित संदेह नहीं कि नारी के अभाव में मनुष्य का सामाजिक जीवन बेकार है।

आज की नारी आधुनिकता के परिवेश में जी रही है। वह अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष कर रही है। सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त उसे आर्थिक समस्याओं से भी जूझना पड़ रहा है, इसलिए उसे नौकरी करनी पड़ रही है। अपने बच्चे, पति, परिवार को आर्थिक संकट में उबारने का प्रयत्न कर रही है। नारी के नौकरी करने से जहां परिवार का जीवन सुखद एवं संपन्न बनता है, वहां अनेक समस्याएं भी जन्म ले रही हैं। इससे उसके परिवार को वे सहूलियतें नहीं मिल पा रहीं, जिनकी उससे अपेक्षा की जाती है। उसके बच्चे सहज स्नेह से वंचित रह जाते हैं। परिवार के वातावरण में एक अनकहा तनाव व्याप्त हो जाता है।

फिर भी परिवार में स्त्री और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा है क्योंकि समाज–रूपी गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनों ही पहियों का स्वस्थ तथा सुदृढ़ होना आवश्यक है। यदि इनमें से एक भी पहिया दुर्बल या दोषपूर्ण समाज रूपी गाड़ी का क्रम रुक जाएगा। नारी यदि गृहस्थ जीवन की नैया है, तो पुरुष उसका खिवैया। गृहस्थ की सुख–शांति, आनंद तथा उत्थान इन दोनों पर ही आधारित है।

आज की नारी तो पूर्णतया सबला है। वह दोहरी भूमिका निभाती है। वह घर की चारदीवारी में बंद होकर पुरुष की दासी बनकर केवल उसके भोग की वस्तु नहीं है। वर्तमान युग की नारी ने अपनी बुद्धि, योग्यता तथा आत्मविश्वास से यह भली–भांति सिद्ध कर दिया है कि परावलम्बी नहीं, स्वावलंबी है। वह पुरुष के उपभोग की वस्तु नहीं, उसकी सहयोगिनी है। घर की चारदीवारी में बंद रहकर यातना सहने वाली मूकर्शिका नहीं, सामाजिक जीवन की आधारशिला है।

आज की नारी को अपने अधिकारों के प्रति भली–भांति ज्ञान है। वह अपने परिवार के लिए भी उतना ही महत्व देती है जितना वह नौकरी में देती है। हर एक नारी अपने परिवार के कल्याण के लिए सदैव कार्यशील रहती है। कभी–कभी परिवार के दुखी वातावरण में सब की देखभाल करती है। वह परिवार के कल्याण में ही सबका कल्याण समझती है।

आज तो नारी अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा एवं योग्यता का परिचय दे रही है। एक ओर वह गृहिणी है, परिवार के उत्तरदायित्व से बंधी है और दूसरी ओर वह अपने अधिकारों तथा स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपनी स्वंतत्र जीविका भी चला रही है। वह पुरुष समाज में रहकर भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। परिवार में किसी की पत्नी, किसी की बहन, पुत्री, मां, दादी आदि यह सब नारी के रूप हैं। पत्नी अपने पति की हर संकट में मदद करने का प्रयास करती है।

विवाह के बाद पत्नी यह सोचती है कि पति ही सब कुछ है। वह अपने पति की आयु बढ़ाने के लिए श्रद्धा से व्रत रखती है। बच्चों की गलतियां माफ कर देती है। उसका मन बहुत कोमल होता है। जीवन में नारी का रूप और कार्य देवी समान है। भगवान ने हमें मां की गोद में ममता की बारिश खुद पर बरसाने के लिए भेजा है। मां के उपकार हम कभी भूल नहीं सकते। यह कार्य नारी, माता के रूप में करती है जो कोई नहीं कर सकता।

नारी बहू होने का फर्ज भी अपने माता–पिता को अदा करती है। स्त्री ससुराल में माता–पिता की सेवा करती है। परिवार में सबको खुश रखती है। अपने से जुड़े हर व्यक्ति का आदर–सम्मान उसके मन में हमेशा रहता है। नारी माता की दृष्टि से भगवान के समान है। बहन के रूप में अपने भाई–बहनों से बहुत प्रेम करती है।

नारी नहीं तो कैसे मिलेगा प्यार और ममता, स्नेह देनेवाली मां, पति की सहधर्मिणी उसके सुख–दुख में साथ देने वाली, बहुत प्यार करने वाली बहन, घर की शोभा बढ़ाने वाली मां। नारी अपनी कोख से वंश के दीपक को जन्म देती है और वंश का उद्धार करती है। इस जगत में जहां नारियों का आदर सम्मान होगा, वहां स्वर्ग स्थापित होगा और जहां नारियों पर अत्याचार होगा वहां नर्क स्थापित होगा। ┐

70

नारी तेरा रूप एक, रिश्ते अनेक

–ज्योति, 10वीं ए
पी. एस. एन. हाई स्कूल,
संगरूर, पंजाब

नारी इन्द्रधनुष के समान है जिसमें हर रंग समाया है। नारी परिवार के लोगों को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। नारी परिवार का वह फूल है जिससे परिवार की खूबसूरती बढ़ती है।

परिवार एकता–सूत्र की वह मूल इकाई है जिसमें नारी का विशेष स्थान है। नारी आदिकाल से मां, बहन, बहू, पुत्री, पत्नी आदि अनेक रूपों में मानव समाज के सामने आती रही है। नारी एक ऐसा नाम है, जो हर रिश्ते को निभाना जानती है। कहा जाता है कि स्त्री अपने जीवन में तीन बार मौत के मुंह में जाती है। सबसे पहले, जब वह स्वयं जन्म लेती है। दूसरी बार, जब वह बच्चे को जन्म देती है। तीसरी बार तब, जब स्वयं मरती है। जैसे कांटों वाला रास्ता बिना जूतों के पार नहीं हो सकता, उसी प्रकार जीवन का रास्ता जो बहुत कठिन होता है, नारी के साथ के बिना तय नहीं होता।

यह तो नारी के हाथ में ही है कि वह चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है और चाहे तो नरक इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि परिवार की डोर नारी के हाथ में ही होती है। हर नारी का यह कर्त्तव्य होता है कि वह इस परिवार रूपी डोर को और मजबूत करे। हर परिवार का केन्द्र बिन्दु नारी ही होती है, जिसके इर्द–गिर्द परिवार का भविष्य घूमता है। हर स्थान पर नारी का नाम पहले आता है। उदाहरण के तौर पर सीता–राम, राधे–श्याम।

धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त सांसारिक जीवन में भी नारी को पहले सम्मान दिया जाता है, जैसे लैला–मजनूं, हीर–रांझा और सोहनी–महिवाल आदि। नारी को परिवार और समाज दोनों में ही सबसे ऊंचा स्थान प्राप्त है। नारी एक ऐसी शक्ति है जो परिवार तथा समाज का विकास कर सकती है। नारी के बिना इन दोनों में से एक का भी विकास संभव नहीं है। परिवार की मर्यादा और प्रतिष्ठा नारी के दम पर ही निर्भर करती हैं तभी तो कहते है –

नारी तू नारायणी, नारी तू भगवान।
नारी के कर्त्तव्य से, मानव बना महान्।

इसके कई उदाहरण हमें प्राचीन काल में देखने को मिलतने हैं। न केवल परिवार की रक्षा बल्कि युद्ध भूमि में जाकर पुरुष को बराबर का सहयोग दिया है। उदाहरणार्थ महारानी कैकेयी बहादुरी से युद्ध में फंसे अपने पति दशरथ को चतुराई के साथ युद्ध क्षेत्र से बाहर निकाल लाई थी। इसका अन्य उदाहरण सावित्री है जो अपने पति के प्राण यमराज से भी वापस ले आई थी। देश को आजाद कराने में भी नारी का बहुत सहयोग रहा है। परिवार को संभालने के साथ–साथ प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति जैसे उच्च पदों पर जाकर उसे अच्छी तरह संभालती हैं।

यदि नारी न होती तो परिवार न होता, परिवार न होता तो समाज न होता, समाज न होता तो यह विश्व न होता, विश्व न होता तो कुछ भी न होता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि परिवार का, समाज का तथा विश्व का मूल आधार नारी ही है। नारी एक प्रेरणा है। नारी अपने जीवन के एक रूप में ही बहुत सारे रिश्तों को निभाती है। नारी एक बहन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि उसका भाई किसी गलत रास्ते पर चलता है तो वह उसे अपने अच्छे गुणों तथा शक्ति से उसे समझाती है कि वह जिस रास्ते पर चल रहा है वहां बुराइयों के सिवाय और कुछ भी नहीं है। नारी पत्नी बिन कर अपने पति का हर कदम पर साथ देती है।

पुरुष और महिला जीवन–रूपी रथ के दो समान पहिये हैं। उनमें से किसी एक के बिना जीवन अधूरा रह जाता है। पति के घर में कितनी भी मुश्किलें हों लेकिन नारी अपने पति का साथ नहीं छोड़ती और उसके साथ मिलकर उस मुश्किल का हल निकालती है। नारी पत्नी के रूप में परामर्शदात्री है। नारी ही घर के सारे प्रबंध को इस प्रकार चलाती है कि उसका घर स्वर्ग बन सके। वह इस कार्य को पूरा करने में अपनी पूरी शक्ति लगा देती है।

नारी ही अपने पति की कमाई को व्यर्थ न गंवाकर उसका उचित उपयोग करती है। नारी ही मां के रूप में अपने बच्चों को उचित शिक्षा देती है जिससे वे बड़े होकर सफलता के साधन को प्राप्त करें और दुनिया का हर सुख प्राप्त कर सकें। मां ही अपने बच्चों की प्रत्येक जरूरत को पूरा करने की कोशिश करती है।

कहा गया है कि मां एक सीप के समान है जो अपनी औलाद के लाखों राज सीने में छिपा लेती है। नारी इन्द्रधनुष के समान है जिसमें हर रंग समाया है। नारी परिवार के लोगों को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। नारी परिवार का वह फूल है जिससे परिवार की खूबसूरती बढ़ती है। जब नारी विवाह के बाद किसी गरीब घर में जाती है तो वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुसार चलती है। वह स्वयं की इच्छाओं का त्याग करके परिवार के अन्य सदस्यों की आवश्यकताएं पूरी करने का प्रयास करती है। इससे यह सिद्ध होता है कि नारी की प्रेरणा पर ही परिवार की उन्नति की बुनियाद है। ┐

71

स्त्री–पुरुष सामंजस्य समाज के प्राण

–छाया पारीक, 10वीं
जैन कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सिरसा, हरियाणा

वास्तव में नारी ने ही बाल रूप धारण कर सृष्टि का निर्माण किया है। वही विष्णु रूप बन जगत का पालन कर रही है व अपने संपूर्ण गुणों से उन्हें पल्लवित कर रही है।

नारी मां है, पुरुष की सहचरी है, समाज की गति का आधार है। रीतिकालीन साहित्य में नारी को केवल श्रृंगार–रस का आधार बनाया गया था, पर ये बीज संत कवियों ने बोये थे। तुलसी जैसे संतों ने भी नारी निंदा की थी। आधुनिक युग में कवियों ने उसे आदर से देखा। गुप्त जी की नारी पुरुष से आगे अपने पैरों पर खड़ी होने की शक्ति पा सकी। उन्होंने नारी के लिए एक नए आदर्श की स्थापना की है। नारी की पतिपरायणता ही उसका कर्त्तव्य है, इसकी सार्थकता सीता में मिलती है। अवसर आने पर यही नारी यमराज को भी पराजित कर देती है।

नारी को पुरुष का आधा अंग माना गया है। अतः संस्कृत में नारी को अर्धांगिनी कहते हैं। विधाता ने इस विश्व में मर्यादा कायम रखने के लिए पुरुष और स्त्री का युगल बनाया। जैसे सांख्य में प्रकृति व पुरुष अन्योन्याश्रित हैं, इसी प्रकार विश्वचक्र नर–नारी के पारस्परिक प्रेम पर अवलम्बित है।

प्राचीन इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित सती सावित्री एवं राजस्थान की अनेक वीरांगनाओं के ज्वलंत उदाहरण हैं जो उन्हें नर से बढ़कर प्रमाणित करते हैं। आदिकाल से नारी का महत्व रहा है। वैसे भी हमारे प्राचीन ग्रंथ 'रामचरितमानस' में तुलसी जी ने श्रीराम से पूर्व सीता जी को स्थान दिया है। यथा '*सीयाराम मय सब जग जानी*। वास्तव में नारी ने ही बाल रूप धारण कर सृष्टि का निर्माण किया है। वही विष्णु रूप बन जगत का पालन कर रही है व अपने संपूर्ण गुणों से उन्हें पल्लवित कर रही है। जैसे किसी कवि ने लिखा है –

नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान।
नारी से नर होत है, ध्रुव प्रह्लाद समान।।

नारी केवल जन्मदात्री ही नहीं, अपितु नर की पथ–प्रदर्शिका भी है। यदि शिवाजी में वीरता थी तो वह किससे मिली ? यदि गांधी जी का चरित्र उन्नत था तो क्यों ? ये सब उन्हें अपनी माता से मिला। अतः नारी नर की बागडोर है। किसी अंग्रेज कवि ने लिखा है –'जैम ींदके जींज तवबो जीम तंकसम तनसमे वअमत जीम ूवतसक' अर्थात् नारी वास्तव में देश की सच्ची शासिका है। यदि इस पर भी हम नारी को तुच्छ माने तो इससे बढ़कर हमारी अज्ञानता एवं मूर्खता क्या होगी ?

आधुनिक युग में नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ–साथ कदम मिलाकर चल रही है। राष्ट्र का विकास व सही निर्माण भी नारियों पर निर्भर करता है। जिस देश की नारियां अधिक सुशिक्षित और विकसित हैं; वह देश ही विकास की चरम–सीमा पर है। सदियों से जिस नारी को दबाया जा रहा है, उसी नारी की मुक्ति के लिए पंत जी ने कहा है कि –

मुक्त करो नारी को मानव, चिर–बन्दिनी नारी को।
युग–युग की बर्बर कारा से, जननी सखी प्यारी को।।

स्त्री–पुरुष का संबंध समाज का केन्द्र है। दोनों ही सामाजिक जीवन में एक–दूसरे के लिए सापेक्ष हैं। एक ने अपनी अपूर्णता को दूसरे में पूर्ण पाया है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री में त्याग और आत्म–समर्पण की भावना का आधिक्य है। पुरुष के जीवन का आरम्भ संघर्ष से है और स्त्री का आत्म–समर्पण से। पुरुष अपने प्राकृतिक स्वभाव के कारण स्त्री पर नियंत्रण और शासन करता आ रहा है। किसी सीमा तक स्त्री भी यही चाहती है। वास्तव में नारी निन्दा की पात्र नहीं, अपितु प्रशंसा की

पात्र है, क्योंकि स्त्री–पुरुष का सांमजस्य ही समाज का प्राण है, जीवन है। संघर्ष में पड़े घावों पर नारी की भावुकता मरहम का कार्य करती है।

माता को गुरु से बढ़कर माना गया है क्योंकि बच्चों को, राष्ट्र के भावी निर्माण के निर्णायकों को, प्राथमिक शिक्षा देने का श्रेय नारी को ही जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी भी दृष्टिकोण से देखें, नारी का महत्व नर से बढ़कर ही है। ┐

72

नारी को दें मुक्त आकाश

–जीतू, 10वीं बी
केन्द्रीय विद्यालय
राजकोट, गुजरात

भारत ही नहीं, विश्व–स्तर का ऐसा कौन सा क्षेत्र है, जहां आज नारी के सुदृढ़ कदम नहीं पड़ रहे ? इसके अतिरिक्त समाज या राष्ट्र–निर्माण में और कौन–सा योगदान होता है, जिसकी अपेक्षा हम नारी से रखते हुए इस प्रकार के प्रश्न उछालते रहते हैं ?

इस देश में नारी को देवी, श्रद्धा, अबला जैसे संबोधन देने की परम्परा अत्यंत प्राचीनकाल से चली आ रही है। नारी के साथ इस प्रकार के सम्बोधन या विशेषण जोड़कर उसे या तो हमने पूजा की चीज बना दिया, या फिर अबला के रूप में मात्र भोग्या और चल संपत्ति समझ लिया। उसका एक रूप शक्ति का भी है। इसका स्मरण हम औपचारिकतावश कभी–कभी ही किया करते हैं, जबकि आवश्यकता इसी बात के जागरण की सर्वाधिक और हमेशा रही है। उसे हम अपने पुरुष–प्रधान समाज की हीन मानसिकता ही कह सकते हैं, अन्य कुछ नहीं।

इस हीनता के परिणामस्वरूप ही हमारे सामने अक्सर इस प्रकार के प्रश्न उठते या उठाये जाते रहे हैं कि नारी का समाज के विकास या राष्ट्र के निर्माण में क्या योगदान है अथवा हो सकता है ? इस प्रकार के प्रश्न उठाते समय पता नहीं क्यों हम अपने अस्तित्व के कारण की बात भूल जाते हैं। भूल जाते हैं कि नारी मातृ–सत्ता का नाम है, जो हमें जन्म देकर पालती–पोसती और इस योग्य बनाती है कि हम जीवन में कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकें। उसी के व्यक्तित्व पर नुक्तानीची करने वाले प्रश्न भी उठा सकें।

मनुष्य को किसी विशेष भू–भाग, सांस्कृतिक क्षेत्र और राष्ट्रीयता ने भावनात्मक संदर्भ में जन्म देकर उसे अपने पांव पर खड़े करना क्या समाज–निर्माण–विकास और राष्ट्र–निर्माण का अंगीभूत बल्कि भूलभूत कार्य नहीं है ? बहन के रूप में पुरुष या मनुष्य मात्र को अपने स्नेहिल छाया से अभिभूत किये रहना कम समाज–राष्ट्र सेवा या निर्माण कार्य है ?

पत्नी के रूप में समाज को पितृ–ऋण से मुक्त कराना, घर गृहस्थी की देखभाल करना समाज और राष्ट्र के निर्माण करने वाले अन्य कार्यों से क्या कम महत्वपूर्ण है ? निश्चय ही नहीं है। फिर आज तो नारी पुरुष के समान ही सक्षम होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और कार्य–क्षमता का सुघड़ परिचय दे रही है। वह हिमालय की उन्नत चोटियों पर भी चढ़ रही है और उपग्रहों के माध्यम से अंतरिक्ष की यात्रा कर मानव–विकास के लिए विविध प्रकार के अनुसंधानों में भी दत्तचित्र हैं। भारत ही नहीं, विश्व–स्तर का ऐसा कौन सा क्षेत्र है, जहां आज नारी के सुदृढ़ कदम नहीं पड़ रहे ? इसके अतिरिक्त समाज या राष्ट्र–निर्माण में और कौन–सा योगदान होता है, जिसकी अपेक्षा हम नारी से रखते हुए इस प्रकार के प्रश्न उछालते रहते हैं ?

सारे विश्व की बात जाने दीजिए। अपने देश भारत के ही निर्माण–विकास के इतिहास की सुदूर तक की परम्परा पर दृष्टिपात कीजिए। कोई भी ऐसा युग का कालखण्ड नहीं मिलेगा, जहां नारी का नव–निर्माण में सहयोग उपलबध न हुआ हो। वैदिक काल में पवित्र–वैदिक ऋचाओं की दृष्टा और आम जन को भी उनका साक्षात्कार कराने वाली अनेक नारियां हुई हैं। वैदिक काल की समुन्नत सभ्यता के विकास में, आर्यव्रत जैसे महान् राष्ट्र के निर्माण की परिकल्पना में निश्चय ही गार्गी, मैत्रेयी अरुन्धती जैसी महान् नारियों का विशिष्ट योगदान रहा है। इस तथ्य से कौन इनकार कर सकता है। उस समय तप और मानव विकास के कार्यों में निरत आश्रम–सभ्यता (जिसे आर्य सभ्यता के निर्माण और विकास का मूलभूत कारण स्वीकारा जाता है) का संचालन और व्यवस्था उपर्युक्त और उन्हीं जैसी अनेक नारियों ने ही तो की थी। तभी तो आज भी उन्हें आदरणीया और प्रातः स्मरणीया माना जाता है।

वैदिक काल के बाद भी जिस भारतीय राष्ट्र और सभ्यता के निर्माण–विकास का कार्य चलता रहा, उसमें भी नारियों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता, यद्यपि अधिकांश नाम अब विलुप्त हो चुके हैं। मानव हित के लिए अपना सर्वस्व

न्यौछावर कर देने वाली वे नारियां निश्चय ही महान् थीं। पौराणिक काल में भी अनेक नाम सुनने को मिलते हैं जिनमें रानी कैकेयी सम्मिलित हैं। राष्ट्र रक्षा और सेवा, निर्माण नहीं हैं ? मध्यकाल में भी ऐसी नारियों की कमी नहीं थी जिन्होंने हर प्रकार से अपने–आपको राष्ट्र और मानवता के लिए अर्पित कर दिया था, फिर भी उनकी ऊर्जस्विता अनेक बार प्रकट होती रही। रजिया सुल्तान, चांद बीबी, जीजाबाई, झांसी की रानी, अहिल्याबाई, जैसे कई नाम गिनाए जा सकते हैं। यह क्रम निरंतर आगे बढ़ता रहा।

हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों में भी राजकुमारी अमृतकौर, सरोजिनी नायडू, अरुण आसफअली, विजयलक्ष्मी पण्डित, आजाद हिन्द फौज में एक पूरी नारी पल्टन का नेतृत्व करने वाली कैप्टन लक्ष्मी तथा क्रांतिकारियों को सहयोग देने वाली नारियों की एक लंबी सूची प्रस्तुत की जा सकती है, जिन्होंने राष्ट्र–निर्माण, विकास और रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। कहने का अभिप्राय यह है कि कम से कम इस देश की नारी ने हमेशा राष्ट्र–निर्माण और रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज का भारत नवनिर्माण और चहुंमुखी प्रगति के जिस दौर से गुजर रहा है, निश्चय ही भारतीय नारी उन सबमें महत्वपूर्ण योगदान कर रही है। काम–काज की दृष्टि से घर–द्वार की दहलीज लांघकर कभी नारी का क्षेत्र शिक्षिका अथवा नर्स बन जाने तक ही सीमित था पर आज वह हर क्षेत्र में सक्रिय है। वह घर–परिवार के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व निर्वहन के प्रति भी निश्चय ही सजग है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि नारी–जाति में व्याप्त अशिक्षा और आत्मविश्वास के अभाव को दूर करके उसे मुक्त आकाश दिया जाए। उसकी क्षमताओं को और उजागर किया जाये। पुरुष–समाज की नारी के प्रति समस्त हीनताओं का परिहार हो। तब कोई कारण नहीं कि सम्मान, स्नेह और आत्मविश्वास से भरी नारी राष्ट्र–निर्माण में पुरुष समाज से भी अधिक सहायक सिद्ध न हो। वह हर प्रकार से समर्थ है, यह अच्छी तरह से प्रमाणित हो चुका है। ┐

73

'नारी घर रो गहणो'

–मन्जू चारण, 11वीं
योगी श्री मकड़ी नाथ सी.सै. स्कूल
रतनगढ़ (राजस्थान)

पुत्रवधू के रूप में नारी को परिवार में बहूरूपी भूमिका निभानी होती है। परिवार के सभी सदस्य उससे बहुत सी अपेक्षायें रखते हैं। उसे परिवार के प्रत्येक सदस्य से भिन्न–भिन्न व्यवहार करना पड़ता है। वह किसी के चरण छूती है, किसी को दुलार करती है तो किसी के सामने आने से कतराती है और सास–ससुर के प्रति सेवा भावना भी रखती है।

माता के रूप में स्त्री का स्थान पिता और गुरु से भी उच्च ईश्वर के तुल्य माना गया है। माता के त्याग के आगे ईश्वर भी नत–मस्तक हो जाते हैं। यथार्थ में परिवार की निर्मात्री माता ही होती है। माता अपने इस दायित्व को निभाने के लिए अपना सारा जीवन न्यौछावर कर देती है। उसका उत्तरदायित्व संतान को मात्र जन्म देने तक ही सीमित नहीं है, वरन् वह संतान का अच्छा पालन–पोषण करने तथा उच्च–शिक्षा देने का प्रयास भी करती है। माता अपनी संतान को संपूर्ण सुरक्षा देती है तथा उसमें आत्मविश्वास, आत्मशासन, सद्व्यवहार तथा ईमानदारी आदि नैतिक गुणों का विकास भी करती है।

कहते हैं कि बच्चे कच्ची मिट्टी के समान होते हैं, जिन्हें माता अपने अनुभवी हाथों से एक स्वस्थ एवं जागरूक नागरिक बनाती है। माता का अपनी संतान के साथ इतना आत्मीय संबंध होता है कि वह बच्चे के चेहरे को देखते ही उसके मनोभाव समझ जाती है। अतः माता घर का एक केन्द्रीय व्यक्तित्व है जो अपनी संतान व प्रत्येक सदस्य को स्नेह व समझदारी से एक दूसरे से जोड़ती है। एक शिक्षिका के रूप में वह उसे देश का एक स्वस्थ एवं कुशल नागरिक बनाती है।

समाज में पुत्री को साक्षात लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। कहते हैं पुत्री अपने साथ पिता के लिए वैभव और लक्ष्मी लेकर आती है। विवाह के पश्चात यह दोनों ही परिवारों की प्रतिष्ठा बनाये रखती है तथा दोनों घरों की जिम्मेदारी बखूबी निभाती है। उसका कर्त्तव्य केवल घर के काम–काज व माता को गृह–व्यवस्था में सहयोग देने तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह अपने माता–पिता को आर्थिक सहयोग करती है।

भारत वह भूमि है जिसने सीता जैसी पतिव्रता स्त्री को जन्मा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक की बात करें तो हम पाएंगे कि प्रायः प्रत्येक भारतीय नारी पति की सेवा को ही सच्चा सुख व उसकी हर आज्ञा का पालन करना अपना प्रथम कर्त्तव्य मानती है। यही नहीं, पत्नी अपने परिवार की अर्थिक स्थिति को मजबूत रखने में पति को पूरा सहयोग देती है। यद्यपि पति की आय ही परिवार को जीविका प्रदान करती है परंतु पत्नी भी इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पत्नी स्वयं भी घर में या घर के बाहर रहकर अपने पति व परिवार की आर्थिक सहायता करती है। कह सकते हैं –'नारी घर रो गहणो' है।

एक पुत्रवधू के रूप में नारी को परिवार में बहूरूपी भूमिका निभानी होती है। परिवार के सभी सदस्य उससे बहुत सी अपेक्षायें रखते हैं। उसे परिवार के प्रत्येक सदस्य से भिन्न–भिन्न व्यवहार करना पड़ता है। वह किसी के चरण छूती है, किसी को दुलार करती है तो किसी के सामने आने से कतराती है और सास–ससुर के प्रति सेवा भावना भी रखती है। देवर व ननद के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखती है और परिवार के रीति–रिवाजों, परम्पराओं, रहन–सहन के तरीकों, आदर्शों व मान्यताओं को समझकर तद्नुकूल स्वयं को ढालने की कोशिश करती है। इस प्रकार वह अपने परिवार के जीवन को सुखी बनाने में योगदान देती है।

बहन के रूप में विविध भूमिकाएं निभाती है नारी। बड़ी बहन होने पर वह मां की तरह भाई–बहनों की समस्त सुख–सुविधाओं का ध्यान रखती है। उन्हें नहलाती–धुलाती है, भोजन कराती है, पढ़ाती है तथा उनके साथ मनोरंजक खेल भी खेलती है। बहन यदि छोटी हो तो बड़ी बहन के कार्यों में उसकी सहायता करती है तथा बड़े भाई के कहे अनुसार कार्य करती है।

शिक्षित नारी अपना बौद्धिक विकास और भौतिक व्यक्तित्व का निर्माण करने में सक्षम रहती है। गृहिणी के रूप में वह अपने घर–परिवार का संचालन कुशलता से कर सकती है। वह अपनी संतान को वीरता, त्याग, सदाचार, अनुशासन आदि के ढांचे में आसानी से ढाल सकती है। अब भारतीय नारी ने स्वतंत्र भारत में जो प्रगति की है, उससे देश उन्नत होता जा रहा है। सारे देश में नारी–शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। नारी सशक्तीकरण के अनेक कार्य राष्ट्रस्तर पर चलाये जा रहे हैं। फिर भी नारी को वैदिक युग में जो सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त थी, वह आधुनिक सुसभ्य नारी को अभी तक नहीं मिली है। ┐